 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

वैशाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४०
मार्च **2008** वर्ष १ अंक ९

संपादक
सिमरजीत सिंघ
एम. ए, एम. एम. सी.

सहायक संपादक
सुरिंदर सिंघ निमाणा
एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बीएड.

चंदा

प्रति कापी	३ रुपये
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६



फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर { वितरण विभाग **303** / संपादकीय विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय सूची

गुरबाणी विचार

धन देखै हरि दुआरि . . .

वैसाखु भला साखा वेस करे ॥
धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥
घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥
कीमति कउण करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो ॥
दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥
नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥६॥ *(पन्ना ११०८)*

पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी बारह माहा तुखारी में वैशाख मास के प्रकृति-वर्णन के प्रसंग में जीव स्त्री की प्रभु-मिलन की तड़प और साथ ही मिलाप के आनंद का भावपूर्ण प्रकटावा करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि वैशाख का महीना अच्छा है। इस महीने वृक्षों एवं पौधों की नयी-नयी पत्तियां निकलने से ऐसे लगता है मानो शाखाओं ने हरा वेश धारण किया हो। ऐसे सुंदर वातावरण को देखकर जीव-स्त्री के मन में अपने पति परमात्मा के साथ मिलन की इच्छा उत्पन्न होती है। वह अपने घर के द्वार पर खड़ी उसकी राह निहारती है और पुकारती है कि मेरी दशा पर तरस करके, ऐ मेरे प्रियतम! घर आ जाओ। यह आध्यात्मिक प्रकटावा है जहां घर का प्रतीक जीव-स्त्री का हृदय है। मनुष्य की समस्त बेचैनी दूर होने का एक मात्र साधन प्रभु-नाम का हृदय में निवास होना है। यह भाव संकेत से समझाया गया है।

हृदय की प्रभु-प्रियतम के साथ मिलाप की तीव्र इच्छा में जीव-स्त्री अपनी विनती, अपनी पुकार फिर दोहराती हुई कहती है कि हे प्रिय! मुश्किल सागर से मुझे पार लगा दो भाव प्रभु-नाम का सहारा होने पर ही जीव-स्त्री संसार रूप भवसागर को पार करने में सक्षम हो सकती है। इस भाव पर बल देने हेतु गुरु जी जीव-स्त्री की ओर से कथन करते हैं कि हे मेरे प्रिय! तेरे बिना मेरा मूल्य कौडी भी नहीं है अर्थात न होने के समान है, चूंकि कौडी तो बहुत ही मामूली चीज होती है। उसको न लेने वाला कोई महत्व देता है न देने वाला। परंतु हे मेरे पति-परमेश्वर! यदि मैं तुझे अच्छी लगने लग जाऊं तो फिर मेरा मूल्य भला कौन आंक सकता है? भाव कोई नहीं आंक सकता यानी कि मैं अमूल्य हो जाती हूं। यदि आप मेरे हृदय में बसने लग जाओ तो मुझे विश्वास होगा कि आप मेरे पास ही हो तथा यह मेरा हृदय रूप महल आपका निवास-स्थान बन जाए और मुझे इस महल की पहचान

भी हो जाए। गुरु जी फरमान करते हैं कि ऐसी स्थिति में जिस जीव-स्त्री की सुरति प्रभु की कीर्ति गायन करते सच्चे शब्द के साथ जुड़ जाए, उसका मन उसको मानने लग जाए तो वैशाख में प्रभु जी अच्छे लगने लगते हैं अथवा जीव-स्त्री को मिल जाते हैं।

सा धन बिनउ करै

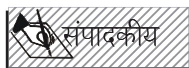
माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥
थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥
धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥
साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥
निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥
नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥ *(पन्ना ११०८)*

ज्येष्ठ मास की तीक्ष्ण गर्मी का दृश्य वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी जीव-स्त्री की मानसिक-आत्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि ज्येष्ठ का महीना अच्छा है। जीवन के इस पड़ाव में जीव-स्त्री को उसका प्रियतम क्यों भूल जाए? गत मास की सुहावनी ऋतु और इस महीने की कठोरता का वर्णन करके और दोनों महीनों में प्रभु-मिलाप की तीव्र इच्छा का वर्णन करके गुरु जी मनुष्य-मात्र को रहस्यमय संकेत देते हैं कि मनुष्य-मात्र को हरेक स्थिति में प्रभु की मीठी स्मृति में जीवन रूप समय सफल करना चाहिए। भूमि सूर्य की गर्मी से ऐसे तपती है जैसे भट्ठी में अग्नि जलती है। जीव-स्त्री प्रभु-मिलाप के लिए विनतियां करती है। वह गुण एकत्र करती है ताकि गुणों के संग्रह से वह प्रभु को अच्छी लगने लग जाए। संसार की माया से निर्लेप मेरा मन, हे प्रभु! आपके सदीवी कायम रहने वाले घर में रहता है अथवा रहना चाहता है परंतु यह आपकी अनुमति, आपकी आज्ञा के बिना कदापि संभव नहीं हो सकता।

कहने से अभिप्राय यह है कि जीव-स्त्री द्वारा प्रभु-मिलन की इच्छा-मात्र ही पर्याप्त नहीं बल्कि स्वामी की कृपा-दृष्टि की भी अत्यधिक आवश्यकता होती है।

गुरु जी आगे फरमान करते हैं कि मैं जीव-स्त्री परमात्मा के बिना सम्मानहीन तथा शक्तिहीन हूं। यदि मालिक ही मेरे पास नहीं तो महलों में भी मुझे सुख नहीं मिल सकता। गुरु जी तत्वसार देते हुए कथन करते हैं कि जो जीव-स्त्री ज्येष्ठ माह को प्रभु-मिलन का सुअवसर समझती हुई, इस माह की ऋतु का सदुपयोग करती हुई ऊंचे आत्मिक तथा नैतिक गुणों का संग्रह कर लेती है उसका मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है, चूंकि वह प्रभु की कृपा-दृष्टि को प्राप्त कर लेती है।





श्रम को अपनाएं, नशों को नकारें

श्रम और मनुष्य का संबंध आदि-जुगादी एवं पूर्णत: स्वाभाविक है। उस परमात्मा ने मनुष्य-मात्र को ऐसा शरीर प्रदान किया है जो अन्य अनेकों उपयोगों के साथ-साथ श्रम करने के भी अति अनुकूल है। श्रम करना मनुष्य-मात्र की मूल आवश्यकता है। भले ही श्रम बाहरी रूप से देखने पर मात्र कुछ एक शारीरिक अंगों के बल-प्रयोग से किया जाता है लेकिन सूक्ष्म एवं वास्तविक रूप में श्रम का आदर्श रूप वही माना जा सकता है जिसमें शरीर के साथ-साथ मनुष्य का मन और आत्मा भी संलग्न हों। काम वही अच्छी प्रकार से संपूर्ण होगा जो तन, मन तथा रूह के साथ किया जाए और जो काम मनुष्य तन, मन तथा रूह के साथ करता है उस संपूर्ण हुए काम में से वह तन, मन तथा रूह परिलक्षित एवं प्रतिबिंबित होंगे। इस रूप से किये गए काम को यदि कोई पारखी दृष्टि का धारक देखता है तो वह स्वत: काम संपूर्ण करने वाले की सच्ची स्तुति करने से पीछे नहीं रह सकता। वह स्वाभाविक ही कह उठेगा, "बंधु! तूने तो इसमें जान डाल दी है।" दूसरी ओर यदि वही काम अनमने अथवा आधे मन से या विवशता का एहसास करते हुए किया गया हो तो उसको पारखी दृष्टि का धारक रद्द कर देगा। वह कहेगा, "यह तूने क्या किया? अच्छा होता तू इसको हाथ ही न लगाता। तूने सत्यानाश कर दिया।" तन, मन तथा रूह के साथ किये गए काम के जमा-जोड़ से ही इस विश्व का विकास संभव है। इस प्रकार साकार हुई संरचनाएं जहां मनुष्य-मात्र के लिए चिरकालीन रूप से उपयोगी होती हैं वहां उन पर प्रथम दृष्टि डालने से देखने वाले को भी असीम खुशी का अनुभव होता है। हमारे देश भारत-भू-खंड के बारे में ऐसा प्राय: कहा जाता है कि यह एक ऐसा अमीर देश है जहां गरीब लोग रहते हैं। हमारी निर्धनता का कोई एक कारण नहीं। इतने कारण हैं जो शायद गणना में ही न आ सकें और उनमें से एक प्रमुख कारण हमारा श्रम के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण भी है।

आज बहुत से लोग शारीरिक श्रम से टूट चुके हैं और बहुत तीव्र गति के साथ अन्य लोगों का टूटना भी निरंतर जारी है। यहां तक कि हमारा कृषक भी बहुत बड़ी संख्या में श्रम से टूट चुका है और कृषक वर्ग की नयी पीढ़ी काम करने से इंकारी ही नहीं बल्कि विद्रोही हुई पड़ी है। पढ़-लिखकर वह मात्र नौकरियों के पीछे ही भागती दृष्टव्य हो रही है। चाहे पढ़े-लिखे युवकों-युवतियों को उनकी शिक्षा तथा प्रशिक्षण के अनुसार नौकरियों की व्यवस्था करना समय की सरकार के अति जरूरी और प्रथम श्रेणी के कर्त्तव्यों में शामिल है परंतु साथ-साथ यह बात भी सामने रखनी जरूरी है कि किसी के साधनों के दायरे में

आते काम से मुंह फेरना अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मारने के तुल्य है। आज बहुत घर ऐसे हैं जिनमें काम करने के सक्षम सदस्य होने के बावजूद भी घर-परिवार की अत्यंत दयनीय आर्थिक स्थिति है। अधेड़ अथवा बूढ़ा हो रहा पिता जीविकापार्जन के लिए अपना कुल शारीरिक एवं मानसिक बल लगाता है परंतु बेटा इसका जरा भी ख्याल नहीं करता। अमीर संसाधनों वाले देश के वासी होने पर भी काम से अलग-थलग युवक-युवतियों के अस्तित्व के कारण हम विश्व में बहुत पीछे हैं। एक विशेष पासार यह भी है कि हमारा युवक देश में तो पर्याप्त अच्छे स्तर का श्रम भी करने को तैयार नहीं परंतु वही युवक बाहर विदेश में पहुंचकर प्राय: हर तरह का श्रम करने को तैयार है। वैसे कोई भी श्रम बुरा नहीं होता। समय, स्थान और स्थितियों अथवा परिस्थितियों के समक्ष कोई भी श्रम बिना किसी प्रकार के हीनता-भाव के करना उचित है।

श्रम अथवा व्यवसाय से दूर खड़े युवकों में एक अत्यंत खतरनाक रुझान जो देखने में आ रहा है वह है नशों अथवा मादक-द्रव्यों का सेवन। काफी संख्या में ऐसे युवक हैं जो कुछ-प्रयास करने पर व्यवसाय ढूंढने में जब विफल हो जाते हैं तो वे इससे उत्पन्न उदासी अथवा निराशा को भुलाने के मुख्य उद्देश्य से प्रेरित होकर नशों का सेवन करने लगते हैं। ऐसे उनके बहुपक्षीय पतन तथा उनके घर-परिवार की समस्त बर्बादी की नींव रखी जाती है। जैसे-जैसे नशे की लत की जकड़ और अधिक होती जाती है तैसे-तैसे युवक सर्वनाश की ओर आगे बढ़ता चला जाता है। यहां तक कि एक दिन ऐसा आता है जब वह युवावस्था में ही एक अत्यंत विवश एवं बूढ़े व्यक्ति की भांति दिखाई देने लगता है और अंत में यह अमूल्य मानव जन्म 'भांग के भाड़े' लुटाता हुआ अपनी जीवन-लीला समाप्त कर जाता है। कुछ नशे तो ऐसी पकड़-जकड़ वाले हैं जिनके शिकंजे में फंसा कोई व्यक्ति छूट ही नहीं सकता। उदाहरण के तौर पर 'समैक' का नशा ऐसा है जो बहुत जल्दी नशेड़ी पर अपनी पकड़-जकड़ कर लेता है तथा उसको समाप्त करके ही छोड़ता है। प्रश्न तो यह है कि समय की राजनैतिक व्यवस्था ऐसे मादक पदार्थों का निर्माण तथा प्रचलन ही क्यों होने देती है? क्या उसे युवकों की देश के निर्माण हेतु आवश्यकता नहीं? अत: सभी कार्यरत सरकारों को हमारा यह सनम्र निवेदन तथा सुझाव है कि वे ऐसे अत्यंत खतरनाक तथा जान-लेवा मादक पदार्थों के निर्माण एवं इनकी तस्करी को पूर्ण रूप से रोकने हेतु प्रयासरत होवें। इस मास में आने वाले मजदूर दिवस और तंबाकू विरोधी दिवस के उपलक्ष्य में हमारी देश के सभी युवकों-युवतियों को तहदिल से पुकार है कि वे नशों का सहारा त्याग कर श्रम का सहारा लें जिनमें उनकी अपनी भलाई के अलावा उनके घर-परिवार, उनके समाज, उनके देश, उनकी कौम और समस्त मानवता का कल्याण भी है। 

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन पृष्ठ ९६६ पर राग रामकली में *"राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी"* वार अंकित है, जिसके अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ने निर्मल राज, निर्मल पंथ की नींव रखी और आगे चलाने की जिम्मेदारी भाई लहणा जी को, श्री गुरु अंगद देव जी नाम बख्श कर सौंप दी। श्री गुरु नानक देव जी ने, भाई लहणा जी को अपने अंग-संग लगाया, अपनी निरंजनी ज्योति उनके अंदर समाहित की, जिसके लिए वार में कहा गया है:

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥
(पन्ना ९६६)

श्री गुरु नानक देव जी ने अपना निरंकारी छत्र भाई लहणा जी के शीश पर झुलाया, उन्हें गुरु-पदवी से प्रतिष्ठित किया और तब वे *'झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ'* के अनुरूप स्थापित हुए। श्री गुरु नानक देव जी ने पहले भाई लहणा जी को भली प्रकार से परखा और जब वे हर कसौटी पर खरे उतरते गए तो गुरु साहिब ने देखा कि स्वभाव में अति दर्जे की मिठास, विनम्रता, मानव-सेवा की कशिश, तीव्र सेवा भावना, सहनशीलता, सत्य, संतोष, संयम, ज्ञान और समर्पित भक्ति-भावना, आध्यात्मिक ऊंचाइयों को छूने की निरंतर चाह, कामना, उमंग, उत्साह और अभिलाषा जो कि निर्मल पंथ की मूल विशेषताएं हैं, भाई जी में हैं, सो गुरु साहिब ने अपने पुत्रों और अन्य श्रद्धालु सिख सेवकों में से भाई लहणा जी को ही गुरु-पद पर प्रतिष्ठित किया।

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने गुरु श्री गुरु नानक देव जी के धर्म-सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार ही अपने जीवन का उद्देश्य रखा, खडूर साहिब आकर निवास किया, गुरु-शब्द का लंगर चलाया:

लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥
(पन्ना ९६७)

उनके लिए उनके गुरु का **'शब्द'** ही गुरु था, इसी की वे स्वयं पालना करते रहे और सिख संगतों को प्रेरित करते रहे। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित पावन इलाही बाणी के संदर्भ में ही वे प्रचार-उपदेश करते रहे। श्री गुरु अंगद देव जी के अपने रचे हुए त्रेसठ (६३) श्लोक मिलते हैं। ये श्लोक बाणी के महान संपादक पंचम गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने अन्य गुरु साहिबान द्वारा रची और अपने द्वारा उचरित वारों की **'पउड़ियों'** के साथ अंकित करते हुए सम्पादित किए हैं जो इस प्रकार हैं—सिरी रागु की वार के साथ श्लोक २, माझ की वार के साथ श्लोक १२, आसा की वार के साथ श्लोक १५, सोरठि की वार के साथ श्लोक १, सूही राग की वार के साथ १, सारंग की वार के साथ ९ तथा मलार की वार के साथ ५ श्लोक हैं। इस प्रकार कुल जोड़ ६३ है।

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज अकाडमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१*

यद्यपि आकार की दृष्टि से यह बाणी चाहे बहुत बड़े आकार में नहीं है परंतु सैद्धांतिक और साहित्यिक दृष्टि से यह अध्यात्म जगत की अनमोल निधि है। इनकी काव्यात्मकता और रसात्मकता तथा सारगर्भिता बेजोड़ है। छोटे-छोटे श्लोकों में जिन विषयों को लिया गया है उनमें गुरु नानक पातशाह के धर्म-चिन्तन के लगभग सभी मूल सिद्धांत समाहित हैं। 'गागर में सागर' कहावत को चरितार्थ करते ये सामाजिक सरोकारों से प्रेरित श्लोक पाठक व श्रोता को रस-विभोर कर देते हैं। विषय की दृष्टि से यह समूची पावन बाणी के महत्त व उद्दात्त संदेश को समेटे हुए हैं। जैसे कि एक अकाल पुरख वाहिगुरु परमात्मा परम सत्य की अवस्थिति में विश्वास, एक अकाल पुरख वाहिगुरु के हुक्म-रजा में चलना, समूचा जगत वाहिगुरु जी की लीला-रचना है, जगत प्रभु-हुक्म से होंद में है, व्यक्ति के जीवन की सार्थकता नाम-सुमिरन में है, नाम-सुमिरन की दात गुरु से प्राप्त होती है, सतिगुरु ही ज्ञान का दाता है जो अज्ञान के अंधकार को दूर करता है, ज्ञान बंद कपाट खोल कर प्रभु-मिलाप का मार्गदर्शन करता है। अकाल पुरख वाहिगुरु जी से प्रेम-भाव अगाध भक्ति-भावना ही जीवन का मनोरथ है। सुख-दुख, जीवन-मृत्यु, प्रभु के हुक्म अनुसार है। गुरु की सेवा, मानव-समाज की सेवा वाहिगुरु जी तक पहुंचाती है। सेवा, परोपकार, एक उत्तम सामाजिक प्राणी बनाती है, सेवा हउमै को गलाती है। हउमै प्रभु से दूर रखती है, माया के मोह-पाश में बांधकर प्रभु से दूरी बनाए रखती है, उसे अच्छा इंसान नहीं बनने देती, इसलिए अवगुणों का त्याग कर, गुणों को ग्रहण कर शुद्ध-पवित्र-निर्मल हृदय से 'सच' के मार्ग पर चलें। बाहरी लोक-दिखावा, दान-पुन्य, कर्म-काण्ड, सब पाखंड हैं, आडंबर हैं। जगत में रह कर धन-दौलत एवं सम्पत्ति का संचयन, व्यर्थ का विस्तार अज्ञानता है। सेहतमंद स्वस्थ नूतन समाज की निर्मिति में ऐसी विचार-प्रणाली बाधक है। इस मोह-भ्रम का त्याग कर स्वस्थ चिंतन से नव समाज के निर्माण में लगें, इसी में मानव-जन्म की सार्थकता है। इस प्रकार ६३ श्लोकों में लगभग इन सभी विषयों को स्पष्ट किया गया है। काव्यात्मकता की दृष्टि से सूत्रात्मक शैली में रचे ये श्लोक मानव जीवन के प्रतिदिन के व्यवहार में आते हैं और अधिकांशतः मुहावरों व लोकोक्तियों की भांति प्रयोग किए जाते हैं। कुछ उदाहरण देखें :-

अकाल पुरख एक है, वह सर्वशक्तिमान, प्रकाश-पुंज, निराकार, निरंजन, सृष्टि का कर्त्ता, कारण, ज्ञान-रूप, आत्म-स्वरूप है:

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥
एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥
(पन्ना ४६९)

सारी सृष्टि का रचनहार वह एक अकाल पुरख है:

—आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥
तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥
(पन्ना ४७५)

—आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥
मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥
(पन्ना १२३८)

वही सबका दाता है:

कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥

नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥
(पन्ना १२३९)

जीवन-मृत्यु उसके हुक्म से है:

—जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥
घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥
(पन्ना १२३९)

सारा जगत उसके हुक्म में खेल रहा है:

—पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिनसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
(पन्ना १४६)

—हुकमु साजि हुकमै विचि रखै हुकमै अंदरि वेखै ॥ (पन्ना १२४३)

इसलिए उसी प्रभु से प्रेम करो। जो मनुष्य प्रभु से प्यार नहीं करता उसका मानव जीवन निष्फल है:

निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥
(पन्ना १४८)

जो शीश अकाल पुरख के प्रति विनम्रता सहित झुकता नहीं है वह व्यर्थ है तथा वह शरीर भी व्यर्थ है जिसमें प्रभु-प्रेम का विरह उत्पन्न नहीं होता:

जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥
नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥ (पन्ना ८९)

प्रभु-प्रेम कैसा हो, गुरु जी कहते हैं:

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥
(पन्ना ८३)

प्रभु के साथ प्रेम, पूर्ण समर्पित भाव से होना चाहिए। यह कैसा प्यार हुआ कि अन्य-अन्य विषयों में मन भटकता रहे:

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
(पन्ना ४७४)

अकाल पुरख जी की होंद का ज्ञान गुरु द्वारा होता है। गुरु ही प्रकाश का स्रोत है जो अज्ञानता के कपाट खोल कर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करता है:

—जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

—कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ (पन्ना ४६९)

गुरु साहिब उपदेश कर रहे हैं कि मनुष्य के मन के अंदर ज्ञान की प्रकाशमान मणियों के भंडार हैं, जिस पर शरीर की छत पड़ी हुई है। जिस हृदय-कोठड़ी में ज्ञान की मणियां छिपी हैं उस कोठड़ी के कपाट बज्र हैं, उन पर ताला पड़ा हुआ है। उस ताले की चाबी केवल गुरु के पास है, गुरु ही उस ताले को खोल सकता है। जब गुरु की कृपा से वे बज्र कपाट खुलते हैं तब कोठड़ी के अंदर छिपी पड़ी मणियों का प्रकाश दिखाई देता है। तब उस प्रकाश में मनुष्य निज स्वरूप की पहचान कर पाता है:

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥ (पन्ना १२३७)

मन के अंदर के प्रकाश-पुंज वाहिगुरु जी से मिलाप नाम-सुमिरन द्वारा होता है। इसलिए गुरु साहिब जी बता रहे हैं कि अमृत वेला में उठो, शांत-चित्त बैठकर वाहिगुरु जी की सिफत-श्लाघा करो, अत्यन्त उमंग, उत्साह और चाह सहित नाम-सुमिरन करो:

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ (पन्ना १४६)

अमृत वेला में नाम-सुमिरन करने से हृदय में अमृत-रस की उत्पत्ति होती है। जिस

भाग्यवान को यह स्वादिष्ट अमृत-रस पीने की बख्शिश होती है वह फिर नाम-रस में ऐसा रंग जाता है कि उसे अन्य कोई रस स्वादमय नहीं लगता:

जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥
नानक अंम्रितु एकु है दूजा अंम्रितु नाहि ॥
नानक अंम्रितु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥
तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥
(पन्ना १२३८)

प्रभु की सिफत-सलाह करने वालों के ही चित्त नित्य प्रफुल्लित रहते हैं। बसंत ऋतु का नित्य खिलाव, स्थायी प्रफुल्लता उन्हीं जीव-स्त्रियों के हृदय में बनी रहती है:

नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥
(पन्ना ७९१)

इसलिए यदि जीव चाहता है कि बसंत ऋतु की पहली ताजा आमद का आनंद उसके हृदय का स्पर्श करे तो वह उस सत्य स्वरूप परमेश्वर के गुण एवं विशेषताओं का ध्यान-चिन्तन करे:

पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु ॥
नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥
(पन्ना ७९१)

ऐसी जीव स्त्री ही सदैव सुहागिन है, स्थिर सौभाग्यवती है; सावन की ऋतु में भी वही आनंद का अनुभव करती है:

सावणु आइआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥
नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन्ह सह नालि पिआरु ॥ *(पन्ना १२८०)*

दूसरी ओर द्वैत भाव में फंसी अन्य मायाजनित विषयों से प्रेम करने वाली दुहागिनी हर समय झूरती रहती, संतप्त और दुखी रहती है:

सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥
नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन्ह अवरी लागा नेहु ॥ *(पन्ना १२८०)*

इस संसार में जो कुछ घटित हो रहा है सब उसी एक प्रभु के हुक्म में ही हो रहा है। ऐसा विचार भी उसी के मन में दृढ़ होता है जो नाम-सुमिरन में जुड़ा होता है। दुख और सुख दोनों अवस्थाओं में वह सहज-स्थिर संभला रहता है:

जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥
(पन्ना ७९२)

प्रभु-चरणों से जुड़ा वह श्वास-श्वास अरजोई करता है:

आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥
तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥
(पन्ना १०९३)

गुरु साहिब हउमै का त्याग करने का उपदेश करते हैं क्योंकि यह भयंकर रोग है। इसके कारण मनुष्य निज स्वरूप को पहचानता नहीं है। वह अपने आप को ज्यादा चतुर, चालाक, सियाना समझता है। उसके सारे कर्म हउमै के अधीन होते हैं—*"हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥"* और होता यह है कि *"सलामु जवाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ— नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥"* क्योंकि उसके अपने हाथ में कुछ होता तो है नहीं—*"एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥"* सामाजिक दृष्टि से भी किरत-कार में जुड़े व्यक्ति के लिए हउमै-अहंकार हानिकारक है:

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
(पन्ना ४७४)

हउमै के अधीन किए गए कर्म न तो उसे खुशी देते हैं न वह दूसरों में खुशी बांटते हैं:

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥
(पन्ना ७८७)

हउमै के अधीन मनुष्य पूरा न्याय भी नहीं कर सकता। वह गुणहीन को गुणवान बताता है, खुशामदवश मूर्ख को पंडित जी, चौधरी जी आदि आदरसूचक शब्दों से सम्बोधित करता है। अंधे को पारखू कहता है। वह भली, संयम, शीलवान स्त्री की कदर नहीं करता। जोड़-तोड़ करने वाली फफेकुटनी का सम्मान करता है:

नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥
अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥
इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥
(पन्ना १२८८)

ऐसे मनुष्यों को गुरु साहिब अंधा बताते हैं जिनमें न्याय-अन्याय का विवेक नहीं होता। बाकी अंधे वे नहीं हैं जिन्हें नेत्र-प्रकाश प्राप्त नहीं हुआ है:

अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥ . . .
सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥
नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ९५४)

वह यह सब चतुराई-चालाकी मनुष्य समाज में बढ़प्पन पाने को करता है, परन्तु गुरु साहिब जी बताते हैं:

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥
(पन्ना १२९०)

प्रभु से जुड़े लोग ऐसे निरर्थक विस्तार में नहीं उलझते:

जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥
(पन्ना ७८७)

वे समझते हैं कि जगत में वे एक रात्रि के मेहमान बन कर आए हैं, प्रात: होते ही यहां से कूच करना है:

राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥
(पन्ना ७८७)

गुरु-चरणों से जुड़े प्रेमी केवल नाम-रत्न का व्यापार करते हैं:

रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥
वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥
जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥
रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥
(पन्ना ९५४)

इस प्रकार श्री गुरु अंगद देव जी महाराज की बाणी सिख धर्म-चिंतन का अनमोल खजाना है।





आपका पत्र मिला

'गुरमति ज्ञान' का फरवरी २००८ अंक पढ़ा। इसमें विशेष सामग्री पढ़ने को मिली। इसमें प्रकाशित आलेख 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी . . . ' (पृष्ठ २९ पर), जो कि स. जसपाल सिंघ द्वारा लिखा हुआ है, पढ़कर अत्यधिक प्रभावित हुआ हूं। उनको मेरी ओर से मुबारकबाद पहुंचे जिन्होंने ऐसा दुर्लभ आलेख लिखा है। आपको भी विशेष बधाई।

-डॉ. डी. वी. जानी
बड़ौदा।

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै

*-स. सुरजीत सिंघ**

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म पिता श्री तेजभान जी एवं सत्य-शांति-सेवा की मूर्ति माता सुलक्खणी जी के गृह गांव बासरके, जिला अमृतसर में ८ ज्येष्ठ सं. १५३६ तद्नुसार ५ मई, सन् १४७९ को हुआ था। ६२ वर्ष की आयु में श्री खडूर साहिब में आप श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन कर बाणी एवं उनके व्यक्तित्व से इतने अधिक प्रभावित हुए कि सदैव नाम-सुमिरन तथा सेवा की ही मूर्ति बनकर रह गये। नित्य-प्रति की दिनचर्या में आप आधी रात के समय उठकर ९ किलोमीटर की दूरी तय कर व्यास नदी से पैदल चलकर अंधेरे में ही गागर में जल भर कर और सिर पर रख कर 'सतिनाम-वाहिगुरु' का जाप करते हुए गुरु-सेवा में लाया करते थे। उन्होंने अपने गुरु जी की एवं गुरु-संगत की आदर्श सिख परंपरा के अनुसरण में तन-मन से अथाह सेवा में ही अपने आप को सम्पूर्ण समर्पित कर दिया और सिद्ध कर दिखाया:

सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ (पन्ना २८६)

३ वैशाख सं. १६०९ तद्नुसार २९ मार्च, १५५२ को श्री गुरु अंगद देव जी के ज्योति-जोत समाने से पूर्व गुरु-भक्ति में विलीन श्री गुरु अमरदास जी गुरु जी के आदेशानुसार गुरगद्दी पर आसीन हुए और इस परंपरा का निर्वाह सिख पंथ के ब्रह्मज्ञानी व्योवृद्ध विद्वान बाबा बुड्ढा जी ने किया। इस प्रकार श्री गुरु अमरदास जी तीसरे गुरु स्थापित हुए।

आपने श्री गुरु अंगद देव जी के आदेशानुसार सिख धर्म के प्रचार-प्रसार का केंद्र व्यास नदी के किनारे के बिल्कुल करीब बसाये नगर गोइंदवाल को बनाया, जहां हर समय गुरबाणी का गायन, हरि-यश एवं लंगर की सेवा होती रहती थी। आपका आदेश था कि जो भी गुरु-दर्शनार्थ आये, पहले बिना भेदभाव पंक्ति में बैठ कर लंगर का प्रसाद ग्रहण करे। इतिहास साक्षी है कि जब बादशाह अकबर गुरु जी से मिलने आया तो उसने भी पंक्ति में बैठ कर श्रद्धापूर्वक लंगर में प्रसाद ग्रहण किया था।

सति-प्रथा का गुरु जी ने घोर विरोध करते हुए इसे समूल समाप्त करवाया और समय के समाज को विधवा-विवाह के लिए प्रेरित किया। नारी-शक्ति को प्रोत्साहित करते हुए पर्दा-प्रथा (घूंघट) का पूर्ण निषेध कर दिया। गुरु जी की भक्ति भावना आदिकालीन अविरल भारतीय भक्ति सरिता का अथाह प्रवाह है। मध्य काल का जनमानस विक्षुब्धता एवं नैराश्य का जीवन जी रहा था। ऐसी परिस्थितियों से उभारने एवं जन-मानस को संबल प्रदान करने की दृष्टि से गुरबाणी ने जनजागरण की भाषा में मानवतावादी, विशुद्धतावादी एवं साम्प्रदायिकता-विरोधी धार्मिक एवं सामाजिक लहर को उत्प्रेरक पृष्ठभूमि प्रदान कर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक अवमूल्यन को रोका:

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥

***५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा कोटा (राजस्थान)*

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ *(पन्ना ९३८)*

पवित्र गुरबाणी के पठन से मानव 'सत्य' रूपी 'परम-तत्व' को अनुभव कर निज व्यक्तित्व से ऊपर उठकर ईश्वर के सत्य-स्वरूप से साक्षात्कार होने लगता है और अपरोक्ष की उपलब्धि के फलस्वरूप 'सत्य' में प्रतिष्ठित हो जाता है, जहां न तो कर्मकांड का बंधन रहता है और न ही वर्ण-जाति, रंग, सम्प्रदाय, ऊंच-नीच का भेदभाव, अपितु जीवन की पवित्रता, आचरण की शुद्धता, सांसारिक मिथ्या वाशनाओं से मुक्ति, ईश्वर-मिलन और मोक्ष की ही प्रमुखता रह जाती है। गुरु जी उत्कृष्ट जीवन-शैली, साधना-वृत्ति तथा आचरण-शुद्धता की मिसाल हैं। आपकी भक्ति-साधना में सहजता, सरलता, सोम्यता, उदारता, आत्मीयता और सहनशीलता की भावना विद्यमान है जहां निरीहता और ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण परिलक्षित है।

गुरु जी की पावन बाणी भक्ति-भाव से ओत-प्रोत है जिसमें एकेश्वर निराकार का वर्णन है तथा जो सर्वव्यापक, सर्वाधार, अरूप, निरंतर तथा रूप-विधान से परे है। इसी कारण ही अकाल पुरख अथवा निराकार को 'हरि' अथवा 'राम' के नाम से पुकारा गया है। यहां 'राम' राजा दशरथ के पुत्र न होकर निराकार 'प्रभु' हैं। गुरु जी ने व्यास नदी के किनारे गोइंदवाल में 'बाउली साहिब' का निर्माण करवाया, जिसकी जमीन की सतह से गहराई में जाकर चौरासी सीड़ियां हैं।

१ सितंबर सन् १५७४ को ९६ वर्ष की आयु में गुरु जी ब्रह्म-ज्योति में विलिन हो गये, जैसे सूर्य की किरण सूर्य में समा जाती है और जल की धारा जल में। आज आवश्यकता है, गुरु जी के उपदेशों रूपी विचारधारा के मनन करने की जो सर्वकल्याणकारी, सर्वहितकारी एवं क्रांतिकारी जीवन-पद्धति है, जहां सत्य-धर्म, मानव-धर्म, जीवन-धर्म को अपनाकर आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास के साथ सदैव आदर्श एवं तनाव-मुक्त सुखमय जीवन निर्वाह किया जा सकता है। कृतज्ञ मानव जाति ऐसे दिव्य युगपुरुष की सदैव ऋणी है जिन्होंने अपना समस्त जीवन ही मानव-सेवा में समर्पित कर दिया।



कविता

अगर वैसा होता . . .

मजलूमों की रक्षा के लिए शस्त्र उठाना'
हमारा सिद्धांत रहा है . . .
और तुम कहते हो
कि सिख हिंदुओं को मुसलमानों से बचाने के लिए बने . . .
हमने तो सबको शरण दी
चाहे वह कोई भी हो . . .
. . . खुसरो . . .
. . . दारा शिकोह . . . या किरपा राम
हम तो लड़े सिर्फ जालिम के खिलाफ . . .
जैसा तुम कहते हो . . . अगर वैसा होता . . .
तो कैसे रखते मीआं मीर
हरिमंदर साहिब की नींव?
कैसे करते गनी खां-नबी खां
'उच्च दा पीर' बना कर, दशमेश पिता की जीवन-रक्षा?



-डॉ राजेंद्र सिंघ, १/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना।

श्री गुरू अमरदास जी की बाणी में सतिगुरु-महिमा

*-प्रो. लाल मोहर उपाध्याय**

भारतीय समाज में गुरू का स्थान बड़ा उच्च, गौरवपूर्ण और समाद्रत रहा है। सही बात तो यह है कि गुरू ही धर्म और समाज का नियामक रहा है। सच्चे ज्ञान की प्राप्ति गुरू द्वारा ही होती है। मध्य युग के भक्ति साहित्य में गुरू का स्थान बहुत बड़ा है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में गुरू-महिमा मध्य युग के साधकों को अपने पूर्ववर्ती सहज भाव के साधकों से उत्तराधिकार के रूप में मिली थी। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में गुरू का सर्वोपरि स्थान है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब के नाम से ही गुरू की महत्ता सिद्ध होती है। गुरू की आवश्यकता पर श्री गुरू नानक देव जी और सभी गुरू साहिबान द्वारा बल दिया गया है। यहां हम तीसरे गुरू श्री गुरू अमरदास जी की पावन बाणी के आधार पर ही गुरू की महत्ता प्रतिपादित करने का प्रयास कर रहे हैं। श्री गुरू अमरदास जी का कथन है कि जीवों और उनके शरीरों आदि की उत्पत्ति गुरू से ही होती है:

जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ (पन्ना ७५३)

षठि दर्शन, योगी, सन्यासी आदि बिना गुरू के भ्रमित ही रहते हैं:

खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ (पन्ना ६७)

गुरू के बिना मोह रूपी अंधकार का प्राबल्य रहता है, जिससे बार-बार संसार-सागर में डूबना पड़ता है:

बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥
फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ (पन्ना १०६८)

इतना ही नहीं जो सतिगुरू से विमुख होते हैं वे अभागे होते हैं। वे निरंतर दुख ही भोगते हैं और वे लोग स्वप्न में भी सुख का अनुभव नहीं करते तथा अनेक चिन्ताओं में जलते रहते हैं:

सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥
(पन्ना ३०)

जो लोग सतिगुरू से मुंह फेरते हैं और सतिगुरू से विमुख रहते हैं उनकी बुरी दशा होती है। वे प्रतिदिन बांधे जाते हैं। वे परमात्मा-प्राप्ति की बेला का लाभ नहीं लेते:

सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसंनि ॥
अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला न लहंनि ॥
(पन्ना २३३)

वे छोड़ दी गई स्त्री के समान होते हैं तथा अपयश और बदनामी के भागीदार हैं :

जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥
जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥
(पन्ना ६४५)

गुरू के बिना लोग घनघोर अंधकार में अज्ञानी और अंधों के समान हैं। उनकी दशा विष्टा के कीट के समान है। जिस प्रकार विष्टा का कीट विष्टा से उत्पन्न होता है और उसी में मर जाता है उसी भांति बिना गुरू के

** हिंदी विभाग, श्री गुरू गोबिंद सिंघ कालेज, पटना साहिब - ८००००८*

लोग विषयों में रहते हैं और विषयों में ही मर-खप जाते हैं:

बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥
अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥ (पन्ना ११६)

गुरू के बिना परमात्मा के महल और उसके नाम की प्राप्ति नहीं होती:

बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ॥ (पन्ना ३०)

गुरू की इतनी महत्ता देखकर अनेक विषयी-भोगी सांसारिक मनुष्य भी सतिगुरू बनने का ढोंग करने लगते हैं। ऐसे तथाकथित गुरुओं को अन्धा गुरू कहा गया है। इस तरह के दंभी गुरुओं के बारे में श्री गुरू अमरदास जी का फरमान इस प्रकार है कि अन्धे गुरू से भ्रम निवारण नहीं हो सकता क्योंकि वह सृष्टि के मूल परमात्मा को त्यागकर द्वैत भाव में ही लिप्त रहता है। वह विषय रूपी विष में मतवाला है और अंत में विष में ही समा जाता है :

अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥
मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥
बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥ (पन्ना २३२)

सही बात तो यह है कि गुरू साहिबान ने स्थान-स्थान पर अपनी पावन बाणी में इस बात का संकेत किया है कि परमात्मा की आलौकिक कृपा से ही सतिगुरू की प्राप्ति होती है। श्री गुरू अमरदास जी ने इस प्रकार वर्णन किया है:

-पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ (पन्ना ८५१)
-नदरि करे ता गुरू मिलाए ॥ (पन्ना १०५४)

परमात्मा की कृपा और गुरू-प्राप्ति के लिए अपने अहं भाव को नष्ट कर देना परमावश्यक है। जो अपने आपेपन को गंवा देता है उसी को सतिगुरू की प्राप्ति होती है:

नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥ (पन्ना ५५०)

सच्चाई तो यह है कि सतिगुरु को प्राप्त करके वही साधक पूरा-पूरा लाभ उठा सकता है जो सतिगुरू पर पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और भक्ति रखता है। जैसा भाव होता है, वैसी ही उद्देश्य-पूर्ति होती है। इसीलिए सतिगुरू को परमात्मा का साक्षात स्वरूप समझना चाहिए। जो निरंकार की ज्योति सतिगुरू में प्रतिष्ठापित है वह परमात्मा की ही अखण्ड ज्योति है। अत: श्री गुरू अमरदास जी ने कहा है कि हम जिस प्रकार से सतिगुरू में भाव रखते हैं, उसी प्रकार का हमें सुख प्राप्त होता है:

जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥ (पन्ना ३०)

जिन्होंने अपने गुरू को छुपाया भाव पीछे पाया है वे अत्यन्त बुरे हैं। उनको तो देखना भी वर्जित है:

जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥
हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ (पन्ना ६५१)

अत: सतिगुरू के प्रति पूर्णत: निष्कपट होना चाहिए। इतना ही नहीं, श्री गुरू अमरदास जी का तो यहां तक कहना है कि गुरू का शब्द जो नहीं जानते वे अंधे और बावले हैं। ऐसे प्राणी भला संसार में उप्पन्न ही क्यों हुए? वे लोग परमात्मा के रस को नहीं पाते और अपना अमूल्य मानव जीवन व्यर्थ ही नष्ट करते हैं:

सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ॥ (पन्ना ६०१)

अनेक प्रकार के शारीरिक तपों से अहंकार

की निवृत्ति नहीं होती। अनेक भांति के कर्म-कांड करने से भी परमात्मा के पवित्र नाम की प्राप्ति नहीं होती, परंतु गुरू के शब्द के अनुसार जीवित ही मर जाने से परमात्मा का पवित्र नाम मन में आ बसता है:

कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ॥
अधिआतम करम जे करे नामु न कब ही पाइ ॥
गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (पन्ना ३३)

जो मनुष्य गुरू के शब्द पर विचार करते हैं उन्हें परमात्मा का भय प्राप्त होता है, सतसंगत मिलती है और सच्चे परमात्मा का गुणगान करने की बुद्धि प्राप्त होती है। इसी से परमात्मा हृदय में आ बसता है और दुविधा की मैल कट जाती है। उसकी बाणी सच्ची होती है। श्री गुरू अमरदास जी का फरमान है कि उसके मन में परमात्मा का निवास होता है तथा उसका सच्चे परमात्मा से ही प्रेम होता है:

आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ . . .
सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥
(पन्ना ३५)

पावन गुरबाणी मन में बसाने से माया के बीच में रहते हुए भी निरंजन परमात्मा की प्राप्ति होती है और साधक की ज्योति परमात्मा की अखण्ड ज्योति से मिलकर एक हो जाती है:

हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥
अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ॥
(पन्ना ११२)

जहां तक सेवा-भावना का प्रश्न है, सतिगुरू की सेवा सचमुच बड़ी कठिन है। यदि सिर देने से, अपने को नष्ट करने से भी गुरू-सेवा का शुभ अवसर प्राप्त हो, तो उसे करने से नहीं चूकना चाहिए :

सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥
(पन्ना २७)

श्री गुरू अमरदास जी का फरमान है कि सतिगुरू की प्राप्ति से मनुष्य को कोई अभाव नहीं रह जाता, उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है:

सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥
अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥ (पन्ना ९१)

सतिगुरू की प्राप्ति से तो जन्म-मरण का नाश है। सतिगुरू से ही अहंकार का नाश होता है:

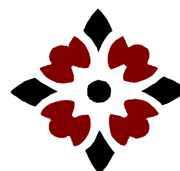
ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ॥ (पन्ना ५९१)

सच्चे गुरू की सेवा से ही परमात्मा का भय, वैराग्य, भक्ति, प्रेम आदि प्राप्त होते हैं:

गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहै समाइ ॥
सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥
अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥
नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ॥
(पन्ना ३३-३४)

इस तरह हम देखते हैं कि तीसरे गुरू श्री गुरू अमरदास जी महाराज की बाणी में सतिगुरू की महिमा सर्वोपरि है। अत: गुरबाणी में अटूट आस्था रखते हुए उस पर चलना ही हर मानव का धर्म है।





सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ

*-डॉ. मनमोहन सिंघ**

भारतीय समाज में गुरु का स्थान बड़ा उच्च, गौरवपूर्ण और सम्मानीय रहा है। सही बात तो यह है कि गुरु ही धर्म और समाज का नियामक रहा है। ज्ञान-प्राप्ति, गुरु द्वारा ही होती है। मनुष्य युग के भक्ति साहित्य में गुरु का स्थान बहुत बड़ा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु का सर्वोपरि स्थान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नाम से ही गुरु की महत्ता सिद्ध होती है। गुरु की आवश्यकता पर श्री गुरु नानक देव जी के पश्चात अन्य गुरुओं द्वार काफी बल दिया गया। अब हमें श्री गुरु अमरदास जी की बाणी के आधार पर ही गुरु-महिमा प्रतिपादित करनी है। श्री गुरु अमरदास जी का कथन है कि जीवों और उनके शरीरों आदि की उत्पति गुरु से ही होती है:

जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ *(पन्ना ७५३)*

दार्शनिक, योगी, सन्यासी आदि बिना गुरु के भ्रमित ही रहते हैं:

खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ *(पन्ना ६७)*

बिना गुरु के मोह रूपी अंधकार का पहरा रहता है और बार-बार संसार-सागर में डूबना पड़ता है:

बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥
फिरि फिरि डूबै वारो वारा ॥ *(पन्ना १०६८)*

इतना ही नहीं सतिगुरु से जो विमुख होते हैं वे परम अभागे होते हैं। वे निरंतर दुख ही भोगते हैं। वे लोग स्वप्न में भी सुख का दर्शन नहीं करते और अनेक चिंताओं में डूबे रहते हैं:

सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥
(पन्ना ३०)

इतना ही नहीं जो लोग सतिगुरु से मुंह फेरते हैं और उनसे विमुख रहते हैं उनकी अत्यन्त बुरी दशा होती है:

सतिगुर ते जो मुह फेरे से वेमुख बुरे दिसंनि ॥
अनिदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला न लहंनि ॥
(पन्ना २३३)

जो व्यक्ति सतिगुरु से मुंह फेरे हुए हैं उन्हें कोई ठौर-ठाव नहीं है:

जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥
(पन्ना ६४५)

बिना गुरु के लोग घनघोर अंधकार में अंधों के समान अज्ञानी है। उनकी दशा विष्ठा के कीट के समान है। जिस प्रकार विष्ठा का कीट उसी में उत्पन्न होता है, उसी में रहता है और उसी में मर भी जाता है, इसी भांति बिना गुरु के लोग विषयों में रहते हुए उसी में खप जाते हैं:

बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥
अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥ *(पन्ना ११६)*

बिना गुरु के परमात्मा के महल और उनके नाम की प्राप्ति नहीं होती:

बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥
(पन्ना ३०)

गुरु की इतनी महानता देखकर अनेक

**८८९, फेज-१०, मोहाली-१६००६२*

विषयी-भोगी सांसारिक मनुष्य भी 'सतिगुरु' बनने का ढोंग करने लगते हैं। ऐसे तथाकथित गुरुओं को अन्धा गुरु कहा गया है। इस तरह के तथाकथित गुरु के बारे में श्री गुरु अमरदास जी का फरमान इस प्रकार है—अंधे गुरू से भ्रमण निवारण नहीं हो सकता क्योंकि वह मूल परमात्मा में रुची त्याग कर अद्वैत भाव में ही लिप्त रहता है। विषय रूपी विष में मतवाला है और अन्त में विषय में ही समा जाता है:

अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥
मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥
बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥ (पन्ना २३२)

अन्धे गुरु का वर्णन श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में बेबाक रूप से किया गया है:-

जो गुरु अंधे हैं, उनके शिष्य भी अंधो कर्मों में ही प्रवृत्त रहते हैं। वे अपनी मर्जी के अनुसार कार्य करते हैं और नित्य ही "झूठ" बोलते हैं। वे नित्यप्रति झूठ और पाप कमाते हैं और दूसरों की निन्दा में रते रहते हैं। ऐसे निन्दक स्वयं तो डूबते हैं कुटम्ब को भी डुबो देते हैं।

सही बात तो यह है कि सिख गुरुओं ने स्थान-स्थान पर इस बात का संकेत किया है कि परमात्मा की आलौकिक कृपा से ही सतिगुरु की प्राप्ति होती है। श्री गुरु अमरदास जी ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है:

पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥
(पन्ना ८५१)

श्री गुरु अमरदास जी ने कहा है कि हम जिस प्रकार सतिगुरु में श्रद्धा-भाव रखते हैं उसी प्रकार हमें सुख प्राप्त होता है:

जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥
(पन्ना ३०)

गुरबणी मन में बसाने से, माया में रहते हुए भी परमात्मा की प्राप्ति होती है और साधक की सुरति प्रभु की ज्योति से मिलकर एक हो जाती है:

हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥
अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ (पन्ना ११२)

यहां गुरु-सेवा की भावना का प्रश्न है। सतिगुरु की सेवा सचमुच बड़ी कठिन है। यदि सिर देने से या अपने को नष्ट करने से भी गुरु-सेवा का शुभ अवसर प्राप्त होता है तो उसे करने से नहीं चूकना चाहिए:

सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥
(पन्ना २७)



लेखक साहिबान के प्रति सूचना

'गुरमति ज्ञान' के सितंबर, अक्तूबर तथा नवंबर अंक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की ३०० वर्षीय गुरुता-गद्‌दी को समर्पित प्रकाशित किए जाएंगे। इन विशेषांकों के लिए माननीय लेखक साहिबान से निम्न अनुसार रचनाएं लिख कर भेजने की विनती की जाती है:

सितंबर २००८- श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना : आवश्यकता एवं इतिहास तथा शब्द-गुरु के रूप में महत्व

अक्तूबर २००८- श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार (गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिख तथा भट्‌ट, कवि साहिबान सम्बंधी अलग-अलग विवरण)

नवंबर २००८- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्व-बंधुत्व के तत्व

जिस महीने के अंक से सम्बंधित आपकी रचना हो उससे दो माह पूर्व आपकी रचना इस कार्यलय में पहुंचनी आवश्यक है।

संक्षिप्त जीवन परिचय श्री गुरु तेग बहादर जी

*-स. जगदेव सिंघ**

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का जन्म ५ वैशाख सं. १६७८ (१ अप्रैल सन् १६२१) को, गुरु के महल, अमृतसर में हुआ। आप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के सबसे छोटे सपुत्र थे। आपकी माता का नाम माता नानकी जी था। आप नौ वर्ष की आयु तक अपने पिता जी के साथ अमृतसर में रहे। शुरू से ही आप संत-स्वरूप, गहरे विचारवान, बलवान, निर्भय व त्यागी स्वभाव के मालिक थे। आपकी शिक्षा-दीक्षा मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तथा बाबा बुड्ढा जी की निगरानी में हुई। आपको गुरमति-विद्या के साथ शस्त्र-विद्या भी दी गई। आप 'तेग' के धनी थे।

जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अमृतसर से करतारपुर आये तो आप पिता-गुरु के साथ ही थे। सन् १६३२ में आपकी शादी करतारपुर (जालंधर) निवासी श्री लाल चन्द की सपुत्री बीबी गुजरी जी के साथ हुई। उसी वर्ष जब करतारपुर साहिब में युद्ध हुआ तो आपने अपनी तेग के जौहर दिखाये। आपकी तेग के जौहर देखकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने आपका नाम 'तेग बहादर' रख दिया। इस लड़ाई के बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी कीरतपुर चले गये। आप पिता-गुरु की आज्ञानुसार अपनी माता व पत्नी सहित अपने नाना के गांव बकाला आ गये।

बकाला आकर (गुरु) तेग बहादर जी शांतचित्त रह कर परमात्मा का सुमिरन करने लगे। आपका घरेलू जीवन बड़ा सादा व शांतमय था। बकाला में गृहस्थी जीवन के सारे फर्ज पूरे करते हुऐ आप आने वाले समय की तैयारी भी कर रहे थे।

गुरगद्दी की जिम्मेवारी से पहले आपने अमृतसर में सिख धर्म का बहुत प्रचार किया। सन् १६५६ से १६६२ तक आपने मालवा, यू.पी. और बिहार तक का एक बहुत बड़ा प्रचारक दौरा किया।

३० मार्च सन् १६६४ को श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जब दिल्ली में ज्योति जोत समाए तो उन्होंने हिदायत की थी कि 'बाबा बकाले' भाव गुरगद्दी का मालिक बकाले में है।

इस बात का नाजायज फायदा उठाकर बाईस पाखंडी गुरगद्दी के दावेदार बनकर बकाले आ इकट्ठे हुए। धीरमल सबसे आगे था। गुरु बन बैठे इन पाखंडियों ने अपनी दुकानें चमकानी आरंभ कर दीं। भोले-भाले लोग धोखा भी खाने लगे। आखिर गुरु साहिब का श्रद्धालु सिख मक्खन शाह, टांडा, जिला जेहलम का निवासी बकाले आया। वह अपने साथ दसवंध की रकम पांच सौ मोहरें लेकर आया। आगे बाईस 'गुरु' देखे। उसने प्रत्येक के आगे दो-दो मोहरें रखी व परख लिया कि सभी पाखंडी हैं। फिर वह श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब के पास गया। वहां भी दो मोहरें रखीं, पर अंतरयामी सच्चे गुरु ने पूरा दसवंध, पांच सौ मोहरें देने की याद दिलाई। मक्खन शाह ने सच्चे गुरु को ढूंढ लिया। वह छत पर चढ़कर ढिंढोरा पीटने लाग, "गुरु लाधो रे! गुरु लाधो रे!" (गुरु ढूंढ लिया!

**V. P. O. टांडा, तहसील शाहबाद, जिला रामपुर (उ. प्र.)-२४४९२२, मो: ०९९२७५५१५४२*

गुरु ढूंढ लिया!)

जब संगतों को सच्चाई का पता चला तो उन्होंने पाखंडियों को छोड़ सच्चे गुरु की शरण ली। धीरमल यह बात सहन न कर सका। उसने शीहें मसंद को लालच देकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब पर गोली चलवाई, पर गुरु जी बाल-बाल बच गये। शीहें ने साथियों की सहायता से गुरु-घर में से जो समान मिला लूट लिया और बाबा वीर मल सहित करतारपुर को चला गया।

जब मक्खन शाह को पता चला तो उसने सिखों को साथ लेकर धीरमल का पीछा किया। लूटा हुआ माल वापिस ले लिया, श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ भी ले आये। गुरु जी नम्रता के धनी थे। उन्होंने धीरमल व उनके साथियों की ज्यादिती को नज़रअंदाज करके सारा समान व श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ को भी वापिस भेज दिया।

भाई मक्खन शाह को साथ लेकर आप श्री हरिमंदर साहिब, अमृतसर दर्शनों के लिए गये। पुजारियों ने समझा यदि गुरु जी यहां ठहर गये तो हमारी रोजी-रोटी बंद हो जायेगी। उन्होंने दरवाजे बंद कर दिये व चले गये। गुरु जी बाहर बरामदे में बैठे इंतजार करते रहे, जहां आज गुरुद्वारा 'थड़ा साहिब' है। काफी समय इंतजार करने पर भी जब पुजारी नहीं आये तो आप बाहर से ही नमस्कार करके गांव 'वल्ला' की तरफ चल पड़े। गांव वल्ला की संगत ने आपकी सेवा की। बाद में जब पुजारी आये तो भाई मक्खन शाह ने उन्हें समझाया। वे पुजारियों को साथ लेकर गुरु जी के पास पहुंचे। गुरु जी ने पुजारियों को कहा कि आप गुरुद्वारों के सेवादार नहीं रहे। ३४ साल हो गये हैं आपको पूजा का बेगार खाते हुए, इसलिए आप तृष्णा की आग में जल रहे हो।

गांव वल्ला से आप बकाले गए और फिर करतारपुर के रास्ते से कीरतपुर पहुंचे।

उधर औरंगजेब ने हिन्दुओं के प्रति सख्त रवैया अपना लिया। आप पूर्वी देश की तरफ उनको ढांढस देने के लिए व सिखी प्रचार के लिए परिवार सहित चल पड़े।

आनंदपुर से घनौली, रोपड़, मूलेवाल आदि होते हुए आप साबो की तलवंडी पहुंचे। रास्ते में दसवंध की रकम से कुएं व जलकुंड आदि बनवाने पर खर्च करते गये। कई गांवों से होते हुए धमधान पहुंचे। यहां भाई रामदेव, जो संगतों की जल पिलाकर सेवा करता था, को "भाई मींहा" का नाम दिया।

आप कुरुक्षेत्र, मथुरा, आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, प्रयाग, काशी आदि हिन्दू तीर्थों पर गये। वहां इकट्ठे हुए लोगों को गुरमति दृढ़ करवाई तथा सच्चा तीर्थ सतिसंगत को ही बताया। फिर आप गया से पटना गये। यहां भाई जैता हलवाई के यहां माता गुजरी जी को ठहराया। कुछ समय पश्चात जब गुरु जी स्वयं धर्म प्रचार यात्रा के लिए जा चुके थे तब माता गुजरी जी के उदर से २३ पौष सं. १७२३ (२६ दिसंबर सन् १६६६) को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ।

पटना से राजमहल, मालदा, मुर्शदाबाद होते हुए आप ढाका पहुंचे। ढाका से आसाम पहुंचे। आसाम से सन् १६७० में आपने राजा राम सिंह व अहीमा कबीले के सरदार राजा चक्रध्वज में समझौता करवाया और दोनों तरफ से खून की नदियां बहने से रुक गईं। आसाम से आप सीधे पंजाब आये क्योंकि पीछे औरंगजेब ने हिन्दुओं पर कड़ी नजर रखनी शुरू कर दी थी और पाठशालाएं तथा मंदिर गिरा देने का ऐलान कर दिया था।

गुरु जी पंजाब पहुंच गये। कहलूर के

राजा दीप चन्द से माखोवाल की जमीन खरीद कर आपने अनंदपुर साहिब नगर बसाया। थोड़े समय पश्चात् परिवार को भी पटना से अनंदपुर साहिब बुलवा लिया।

जब कश्मीर में शेर अफ़गान खां ने तलवार के बल पर कश्मीरी पंडितों को मुसलमान बनाना शुरू किया, तो कश्मीरी पंडित अनंदपुर साहिब गुरु जी के पास फरियाद लेकर आये। गुरु जी ने शरण आये की बांह पकड़ी अर्थात् उनकी सहायता के लिए तैयार हो गये और दिल्ली जाकर शहीद होने का फैसला कर लिया।

अनंदपुर साहिब से चलकर आप कीरतपुर, फैजाबाद, समाणा, कैंथल, लाखन माजरा, रोहतक आदि स्थानों पर भयभीत हुई जनता में *'भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन'* का प्रचार करते हुए आगरे पहुंचे। आपने ५ खास सेवकों को अपने पास रखा- भाई मतीदास जी, भाई दयाला जी, भाई गुरदित्ता जी, भाई ऊधा जी और भाई सती दास जी। आपके प्रचार ने लोगों में जागृति पैदा कर दी। लोगों में कुर्बानी तथा अत्याचार के विरुद्ध डट जाने का बल व उत्साह पैदा हुआ। इस बात की रिपोर्ट औरंगजेब के पास हसन अब्दाल में पहुंची। उसने गुरु जी को गिरफ्तार करने के आदेश जारी किए। आगरे से गुरु जी गिरफ्तार करे दिल्ली लाये गये। उपरोक्त पांच सिख भी आप जी के साथ थे।

गुरु जी ने दो सिखों—भाई जैता जी और भाई ऊधा जी को आवश्यकतानुसार शहर में रहने को कहा। भाई मतीदास जी और भाई दयाला जी को गुरु जी ने अपने साथ ही रखा।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब को कहा गया कि "वे इस्लाम कबूल करें या करामात दिखाएं, नहीं तो शीश देने के लिए तैयार हो जायें।"

गुरु जी ने कहा, "धर्म छोड़ने का तो प्रश्न ही नहीं उठता और करामात दिखाना प्रभु के सेवकों को अच्छा नहीं लगता। शीश देने के लिए हम तैयार हैं।"

श्री गुरु तेग बहादर साहिब को भयभीत करने के लिए भाई मतीदास जी को उनके सामने ही आरे के साथ चीर कर दो-फाड़ कर दिया गया। फिर भाई दयाला जी को देग में उबालकर शहीद कर दिया। भाई सतीदास जी को शरीर पर रुई लपेटकर जिंदा जला दिया गया। उनके बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को ११ मार्गशीर्ष सं. १७३२ (११ नवंबर सन् १६७५) को चांदनी चौंक में शहीद कर दिया गया। जलालुद्दीन जल्लाद ने तलवार से गुरु जी का पावन शीश धड़ से अलग कर दिया।

भाई जैता जी और भाई ऊधा जी ने भाई लक्खी शाह बंजारे से सलाह करके, गुरु जी का धड़ संभालने का प्रबंध किया। भाई लक्खी शाह बैलगाड़ी के साथ चांदनी चौंक पहुंचे। वहां योजनानुसार भाई ऊधा जी से मिलकर सतिगुरु जी का पावन धड़ बैलगाड़ी में रखा। ३ मील दूर गांव रकाबगंज में भाई लक्खी शाह ने अपने घर को आग लगाकर गुरु जी के पावन धड़ का अंतिम संस्कार किया। यहां आजकल गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब सुशोभित है।

दूसरी तरफ भाई जैता जी ने शोरगुल में गुरु जी का पावन शीश उठाया और कदम-कदम पर अनेक कठिनाइयों एवं चुनौतियों भरा रास्ता तय करते हुए सीधे अनंदपुर साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास पहुंचे। गुरु जी ने उन्हें गले से लगाया, "रंघरेटे, गुरु के बेटे" कहकर सम्मानित किया। जहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के पावन शीश का अंतिम संस्कार किया गया वहां आजकल गुरुद्वारा सीसगंज साहिब सुशोभित है।



विश्व-इतिहास को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अपूर्व देन

*-प्रो. डॉ. दीनानाथ शरण**

Lives of great men all remind us,
we can make our life sublime.

-H.W.Longfellow

अंग्रेजी के सुख्यात कवि ने यह जो कहा है कि महापुरुषों का जीवन हमें महान बनने की प्रेरणा देता है, अक्षरशः सत्य है। विश्व के इतिहास में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज एक ऐसे ही महापुरुष थे जिनकी गौरव-गाथा आज भी जाने कितनों को प्रेरणा दे रही है और भविष्य में भी प्रेरणा देती रहेगी। इस संसार में उनके जन्म लेने का महान उद्देश्य था:

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥४२॥
या ही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सभ मन मं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३॥

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज का सारा जीवन इसी उद्देश्य की पूर्ति के पथ पर महान अभियान था। इस कंटकाकीर्ण पथ पर चलकर उन्होंने जो नाना प्रकार के संघर्ष भरे युद्ध किये, जो कष्ट उठाये और बलिदान दिये, विश्व के इतिहास में अनुपम हैं, बेमिसाल हैं। अपने पिता का बलिदान, अपने पिता के अति करीबी साथियों का बलिदान, युद्ध में अपने दो बड़े सपुत्रों का बलिदान और अन्य दो छोटे सपुत्रों को जिन्दा ही दीवार में चुनवा दिया जाना-- इतने सारे त्याग-बलिदान देने वाला अन्य महापुरुष दुनिया के इतिहास में और कोई दूसरा नहीं हुआ।

दिये क्यों उन्होंने इतने बलिदान? आखिर क्यों? इसके लिये तत्कालीन भारतीय इतिहास और परिस्थितियों को गहराई से समझने की आवश्यकता है। उन दिनों भारत में विदेशी मूल के अत्याचारी शासकों की हकूमत थी जो जनसाधारण को बहुत सताया करते थे। जब कश्मीर के हिंदू पंडितों ने श्री गुरु तेग बहादर जी को अपना दुख-दर्द बताया कि "हमारा धर्म, हमारी बहू-बेटियां और धन-सम्पत्ति दिन-दहाड़े लूटी जाती हैं, कृप्या हमारी रक्षा कीजिये!" तब गुरु जी ने कुछ सोचकर कहा—"यदि कोई महान पुरुष अपना बलिदान दे, तभी कुछ हो सकता है।" इस पर बाल गोबिंद राय जी ने अपने पिता जी से हाथ जोड़कर निवेदन किया—"पिता जी! इस समय आपसे बड़ा महापुरुष कौन है? आप अपना बलिदान देकर इनकी रक्षा कीजिये!"

उस समय देश की परिस्थितियां ही ऐसी थीं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज को धर्म की रक्षा के लिये, अन्यायियों के साथ जूझने के लिये कमर कसनी पड़ी, संघर्ष और बलिदान

*दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)

तथा हर कुर्बानी के लिये सन्नद्ध (दृढ़ संकल्प) और सक्रिय होना पड़ा। यही सक्रियता सन् १६९९ में आनंदपुर साहिब में 'खालसा पंथ' की स्थापना में साकार हुई। हताश-निराश जनता में जोश जगाने और कुछ कर दिखाने के उमंगोत्साह के संचार हेतु खालसा पंथ की स्थापना करके श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने विश्व इतिहास में एक नया मोड़ स्थापित किया। शांति, सहिष्णुता, दया, प्रेम के पथ पर चलने के लिए, अन्यायियों के विरुद्ध तलवार उठाना यही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का महत्वपूर्ण योगदान है। अब से सिख जुझारू सिपाही हो गये। 'संत' तो थे ही 'सिपाही' भी हो गये। सिखों में साहस और शौर्य भरने का श्रेय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज को ही है। उनका एक-एक सिख सवा लाख के बराबर बन गया। बेबसी और लाचारी की मारी हताश जनता को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जिस आस्था, साहस, शौर्य और अत्याचारों के विरुद्ध मर-मिटने को आमादा बनाया, दुनिया के इतिहास में कोई दूसरी मिसाल नहीं है। वे संत के साथ सिपाही भी थे, सिपाही के साथ योद्धा भी। जात-पात के बंधन को नकारते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने 'खालसा पंथ' में विभिन्न जातियों में बंट चुके लोगों को शामिल किया। इससे बढ़कर सामाजिक समरसता और क्या होगी? आज जो लोग 'सामाजिक न्याय' का ढिंढोरा पीट रहे हैं, वह सब सैंकड़ों-सैकड़ों साल पहले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने व्यवहारिक रूप से कर दिखाया था। वे सामाजिक मेल-मुहब्बत के समर्थक थे, मानव-मानव को एक समान मानते थे। उन्होंने जात-पात तथा ऊंच-नीच के भेद-भाव को समूल मिटा दिया:

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदु तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥

(अकाल उसतत)

इस प्रकार गुरु जी ने तमाम भेद-भावों से ऊपर उठकर 'खालसा पंथ' की स्थापना करके सारे भारत को एक सूत्र में बांधने का महान कार्य किया। वे राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत थे।

बाद में चलकर इसी बहादुर पंथ ने हमारे स्वतंत्रता-संग्राम में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। हमारे स्वतंत्रता-संग्राम का कोई भी इतिहास सिखों के गौरवमय उल्लेख के बिना अधूरा है।

ऊंचे-ऊंचे, बड़े-बड़े प्रवचन देने वाले स्वयं को संत-महात्मा कहलवाने वाले बहुत हुए और होते हैं, परन्तु अपने प्रवचनों पर जो स्वयं चले, ऐसे लोग विरले ही होते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ऐसे ही विरले महापुरुषों में थे। खालसा पंथ की स्थापना के समय जो शिक्षा-दीक्षा उन्होंने पांच प्यारों को दी, स्वयं भी उनसे वही शिक्षा-दीक्षा ली। है कोई दुनिया में ऐसी दूसरी मिसाल?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपनी मिसाल आप थे, कलम और तलवार दोनों के धनी थे, योद्धा और साथ-साथ कुशल कवि भी। उन्होंने सिखों को पढ़ने-लिखने को प्रेरित किया। स्वयं भी असीम बाणी की रचना की। तलवार के साथ-साथ कलम पर भी इतना अचूक अधिकार रखने वाला महापुरुष दुनिया के इतिहास में अन्य कोई दूसरा नहीं हुआ।



विश्व-मानव जीवन-मार्ग के प्रेरणास्रोत : श्री गुरु ग्रंथ साहिब

*-डॉ. जसबीर सिंघ साबर**

यू. एन. ओ. की जनरल असेंबली ने १० दिसंबर १९४८ को मानव अधिकारों (**Human Rights**) के संदर्भ में एक प्रस्ताव (प्रस्ताव नं. २१७-**A**) पारित करते हुए सभी सदस्य-देशों को कहा था कि वे अपने-अपने देशों और प्रभावाधीन क्षेत्रों में वहां के शैक्षणिक और सामाजिक संस्थानों में बिना भेद-भाव यह संदेश संचारित करें कि **All human beings are born free and equal in dignity and rights. They are endowed with reason and conscience and should act towards one another in a spirit of brotherhood.**

यदि सदस्य-देशों की ओर से इस प्रस्ताव की मूल भावना के अनुरूप व्यवहार किया गया होता तो आज मानव-संसार का मानचित्र कुछ और ही होना था। परंतु इस प्रस्ताव का घोर उल्लंघन ही उन बड़े सदस्य-देशों की ओर से किया गया जो इसके अलंबरदार थे। परिणाम हमारे सामने है कि आज इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने पर भी मानव-संसार विश्व-स्तर पर जान-लेवा रोगों, मादक द्रव्यों, प्रदूषण, आतंकवाद, अलगाववाद, गुटवाद, क्षेत्रवाद, मज़हबवाद, निजवाद, भुखमरी, बेकारी इत्यादि समस्याओं से ग्रस्त हुआ पड़ा है। चिंताजनक मुद्दा जो हमारे सामने है वह यह है कि ये समस्याएं मुख्य रूप से मानव वृत्ति की उपज हैं और मानव-संसार की सुरक्षा के लिए खतरे की घंटी हैं।

यू. एन. ओ. के इस प्रस्ताव के संदर्भ में जो विचार-बिंदु विशेष रूप से मांग करता है वह यह है कि जिस मानव-स्वतंत्रता, समानता के अधिकार और भ्रातृत्व की बात इस प्रस्ताव में की गई है वो तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ४०० वर्ष पूर्व ही अंकित कर दी गई थी जबकि यू. एन. ओ. के प्रस्ताव को आधी सदी का समय ही हुआ है। यह अलग बात है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित मानव-हितैषी संदेशों पर यू. एन. ओ. के सदस्य-देशों की तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दावेदार अनुयाइयों की ओर से भी इसकी मूल भावना के अनुरूप व्यवहार नहीं किया जा रहा, जिसके परिणामस्वरूप सिखी-संसार की सूरतहाल भी चिंतामुक्त नहीं कहलवा सकती। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ऐसा 'सुरतरु' है जिससे मनवांछित फल प्राप्त किये जा सकते हैं परंतु इस प्राप्ति के लिए आवश्यक युक्ति का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है जिसके बारे में विशेष ध्यान दिया जाना समय की आवश्यकता है।

मेरे विचार में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समुच्चय (**Totality**) के आधार को आधार बनाए बिना इसके किसी भी पक्ष को उपयुक्त प्रसंग में समझा एवं समझाया नहीं जा सकता। जब भी जिस किसी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की कुछ कृतियों (पावन बाणियां) के कुछ पक्षों को आधार बनाकर इसके समुच्चय वाले आधार को दृष्टि से ओझल किया है तो उसके अध्ययन ने अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकालने की जगह अधिक

**निदेशक, निदेशालय सिख धर्म पत्र-व्यवहार शिक्षा कोर्स, शि: गु: प्र: कमेटी, अमृतसर।*

अन्याय किया है। अत: इस पावन ग्रंथ को समझने के लिए मात्र रस्मी श्रद्धा और वैज्ञानिक अनुसंधान की ओट में मात्र पाश्चात्य स्तर की युक्तियों के अंतर्गत किया अध्ययन उतनी देर तक अर्थपूर्ण नहीं हो सकता जितनी देर तक इसके पाठ (**Text**) को आंत्रिक रूप से पढ़ने और उसी संदर्भ में समझने का प्रयास नहीं किया जाता। इस प्रक्रिया के लिए यह भी आवश्यक है कि ऐसा करते समय इसकी आंत्रिक स्रोत-युक्तियों को इसकी बाहरी स्रोत-युक्तियों से प्रमुखता दी जाए। ऐसा प्रयास ही इसके कुल-ज्ञान को प्रस्तुत करने में सहायक हो सकता है। इस आलेख में इसी युक्ति के अंतर्गत श्री गुरु ग्रंथ साहिब को आज के मानव-जीवन के स्रोत के तौर पर समझने का प्रयत्न किया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समुच्चय को आधार बनाकर आंत्रिक और वाह्यवर्ती अध्ययन इस तथ्य को उजागर करता है कि इस पावन ग्रंथ का सरोकार मात्र आध्यात्मिक क्षेत्र के साथ ही नहीं जुड़ा हुआ बल्कि यह तो एक अमूल्य धरोहर है कुशल लोक-जीवन-मार्ग का। आज इक्कीसवीं सदी में विश्व स्तर पर जिस प्रकार का वातावरण पलीत हुआ पड़ा है उसको उज्जवल करने तथा सगली धरत लोकाई में फैले प्राकृतिक प्रदूषण को सुधारने के लिए इस पावन ग्रंथ में विद्यमान ३६ महापुरुषों की धुर की बाणी/खसम की बाणी/गोविंद की बाणी/प्रभु-बाणी को ठीक प्रसंग में समझने तथा समझाने से विश्व-मानव-समाज की समस्याओं के समाधान दर्शाकर उसके असंतुलित वातावरण को संतुलित करते हुए विश्व-शांति की संभावना उत्पन्न की जा सकती है।

नि:संदेह आज के मनुष्य ने अपनी हिम्मत, दृढ़ता एवं विश्वास के साथ विश्व स्तर पर आश्चर्यजनक विकास किया है। नील गगन की छाजन तले खुले मैदानों में रहने वाला और कंद-मूल खाकर जीवन निर्वाह करने वाला मनुष्य आज एयरकंडीशन्ड् घरों में रहने और नाना प्रकार के भोजन खाने के लिए सक्षम हो गया है। विश्वीकरण की लहर अधीन नित्य नये वैज्ञानिक आविष्कारों और पदार्थक सुखों व सुविधाओं ने दृश्य ही बदल दिया है। परिवहन के नवीन ढंग, कंप्यूटर और संचार-साधनों ने हजारों मीलों की दूरी और जानकारी मिनटों-सेकंडों में देनी आरंभ कर दी है। विकास गति के इस दौर में समूचा विश्व एक घर की तरह बन गया है और मनुष्य धरती का जीव होते हुए स्पेस युग में प्रविष्ट हो गया है। विश्वीकरण की इस लहर का दुखदायक पहलू भी विराट है, क्योंकि पदार्थवाद के इस दौर में निजवाद और निजलाभ भी बड़े स्तर पर फैला है जिससे मानवी रिश्ते टूट रहे हैं। भीषण शस्त्रों को भण्डार करने की दौड़-धूप विश्व-शांति के लिए बड़ा ख़तरा बन गई है। दूसरे की ज़र, ज़ोरू, जमीन पर अधिकार की भावना प्रचंड हो रही है। खींचा-खैंची, घूस का प्रचलन, लोभ, अन्याय, सांप्रदायिक उपद्रव, आतंकवाद, हिंसा, बलात्कार आदि की घटनाएं नित्य-प्रतिदिन बढ़ रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानव-सांझ, मानव-रिश्ते, मानव-प्रेम और एक-दूसरे का दुख समझने और बंटाने की भावना समाप्त होती जा रही है। ऐसी स्थिति के सम्मुख ही आज विश्व की हरेक संस्था तथा सिस्टम चिंतित है कि मानव-संसार में किस युक्ति से शांति कायम की जाए, मनुष्य की मनुष्य के साथ सांझ बनाई जाए तथा 'जीओ और जीने दो' की भावना मानव-चेतना में दृढ़ की जाए।

विकास-गति को स्वीकार करने वाली

इक्कीसवीं सदी का यदि हिसाब किया जाए तो ये तथ्य स्पष्ट रूप में उजागर हो जाते हैं कि आज के समय भी मानव-समाज का दो-तिहाई भाग पेट से भूखा सोता है जबकि संसार की बड़ी शक्तियां १५०० मिलियन डालर प्रति वर्ष शस्त्र बनाने और एक-दूसरे को लड़ाने पर व्यय कर रही हैं। यहां तक ही नहीं, हज़ारों मिलियन डालर शृंगार-प्रसाधनों पर प्रतिदिन व्यर्थ कर दिये जाते हैं। विकसित हो रहे देशों की शांति नष्ट करने के लिए लाखों मिलियन डालर आतंकवाद फैलाने के लिए व्यय किये जा रहे हैं। परिणामस्वरूप अमीर देश तो और भी अधिक धनवान हो रहे हैं और विकासशील देश निर्धनता का अभिषाप भोग रहे हैं। शर्तों सहित प्राप्त होती सहायता ने विकासशील देशों की स्वतंत्र सुचेतना पर प्रतिबंध लगाया हुआ है। प्राकृतिक स्रोतों के असीम प्रयोग ने वातावरण दूषित कर रखा है और परमाणु शस्त्रों की अधिकता इस धरत लोकाई को किसी समय भी नष्ट कर सकती है। इसलिए ऐसी विस्फोटक स्थिति से मानव-समाज को बचाने की आवश्यकता है। आवश्यकता है ऐसे सिद्धांतों को रोल मॉडल बनाने की जो जन-मानस को विश्व स्तर पर संतुलित बनाने की और हरेक पक्ष से संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देने वाले हों। तुलनात्मक धर्म अध्ययन का विद्यार्थी होने की हैसीयत से मैं यह बात जिम्मेवारी के साथ कह सकता हूं कि आज के समय में मानव का भले ही कोई भी धार्मिक विश्वास हो परंतु उसको अपनी समस्याओं के उपयुक्त समाधान ढूंढने के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को अच्छी प्रकार से पढ़ना एवं समझना होगा। परिश्रम करना, सत्य निष्ठा का प्रयोग करना, बिना किसी भेदभाव के नाम जपना, बांट कर छकना और साथियों के दुख-सुख में परोपकारी भावना सहित सांझीवाल होना और निजवाद, निजलाभ, हउंवाद, कूड़वाद, भंडीवाद को जीवन में से मनफी करने वाले मानव-हितकारी सिद्धांत श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के अमूल्य रत्न हैं।

मेरी यह अवधारणा अतिश्योक्ति नहीं बल्कि सत्य-आधारित तथ्य है कि सारी चिंताएं मिटाने वाली श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का एक-एक शब्द मनुष्य को बुराई से तोड़ कर अच्छाई के साथ जोड़ने का कार्य करता सिद्ध होता है क्योंकि इस बाणी के मूल सरोकार मूलतः मनुष्य-केंद्रित हैं। इसमें अतीत से वर्तमान जीवन-निर्माण के लिए अधिक चिंता प्रकट की गई है। शायद इसीलिए मात्र भौतिक सुख और अध्यात्मवादी झुकाव की जगह मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहज व संतुलन लाने का प्रेरणा-स्तर इस बाणी में अधिक बलवान है।

क्या यह आश्चर्यजनक सत्य नहीं कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिखों का पावन पूज्य धर्म-ग्रंथ है और इसमें अंकित ३६ बाणीकारों में ६ सिख गुरु साहिबान और चार गुरु-घर के निकटवर्ती सिखों की बाणी अंकित है जबकि शेष बाणीकार निष्ठावान और आस्तिक भावना वाली विचारधारा के धारक महापुरुष थे। निःसंदेह इन महापुरुषों की विचारधारा, पूजा-पद्धतियों और साधनाओं में अपना-अपना रंग है। इस पर भी इसमें जन-जन के कल्याण के लोक-इतिहास की आभा चमकती स्पष्टः दृष्टव्य होती है। विशेषता यह है कि इस चिंतनधारा में गुरु-आशय की संशोधन धारा भी साथ-साथ चलती है जो गुरु-आशय की उद्देश्य-पूर्ति के लिए गतिशील होती है।

मेरे विचारानुसार संसार के धर्म-क्षेत्र में यह प्रथम धर्म ग्रंथ है जिसमें बारहवीं से सत्रहवीं

सदी तक के ३६ बाणीकारों की बाणी अंकित की हुई प्राप्त होती है। श्री गुरु अरजन देव जी की ओर से इसका संकलन और संपादना मानव-समाज को एक ऐसा ऐतिहासिक उपहार है जो उसको जीवन के हरेक कार्य में आज भी अच्छी दिशा देने के लिए सक्षम है। इस पावन ग्रंथ का गह्न अध्ययन करने वाली मानव-चेतना यह सोच कर आश्चर्यचकित रह जाती है कि इसमें समस्त मानव-संसार की संस्कृति, भारत की चारों दिशाओं से संबंधित और ऊंच-नीच समझे जाने वाले बाणीकारों के रबी-प्रवचन, अलग-अलग उपभाषाओं में प्राप्त होते हैं। इससे पूर्व भारतीय धर्म-ग्रंथ, मात्र संस्कृत और फारसी भाषा में प्राप्त होते थे जिनको पढ़ना और समझना जनसाधारण के वश की बात नहीं थी। इन ग्रंथों की व्याख्या मौलवी और पंडित इस ढंग से करते थे जो उनके अपने और विशेष वर्ग के हित की तो पूर्ति करती थी परंतु जनसाधारण का शोषण ही करती थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयोग की गई भाषा इस प्रकार की है जिसे जनसाधारण थोड़ा सा परिश्रम करने के उपरांत आसानी से समझ सकता है। इसका अर्थ यह सर्वथा नहीं कि साहित्यिक स्तर पर यह भाषा छोटे रूप वाली है, बल्कि इस बाणी में फारसी, अरबी, संस्कृत, भोजपुरी, राजस्थानी, हिंदी आदि भाषाओं की शब्दावली प्राय: मिल जाती है परंतु यह शब्दावली ऐसी है जो लोक-मानस जीवन में परिचित थी और उनके नित्य-व्यवहार की बोलचाल का अभिन्न अंग बन चुकी थी। संक्षेप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को लोक-भाषा का बहुमूल्य खजाना कहा जा सकता है। एक बात और जो विशेषकर हमारे ध्यान की मांग करती है वे यह है कि इन सभी का उद्देश्य एक और एक ही था और वह था जन-कल्याण। इसीलिए *'सरबे एकु अनेकै सुआमी'* के सामने श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सन् १६०४ में संपादन-कार्य संपन्न करने के समय इन ३६ के ३६ बाणीकारों को समान सत्कार एवं अधिकार प्रदान किया। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो १७०६ ई में इस पावन ग्रंथ का दोबारा संपादन करके अपने गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर जी के शब्द और श्लोक शामिल करने के उपरांत १७०८ ई को इस पावन ग्रंथ को गुरु-पद पर आसीन किया। मानव-सोच में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक लगता है कि अलग-अलग उपक्षेत्रों में, अलग-अलग वक्तों में जन्म लेने व विचरण करने वाले और अलग-अलग जातियों तथा व्यवसायों से जुड़े इन भक्तों की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किये जाने का श्री गुरु अरजन देव जी का उद्देश्य क्या हो सकता है और ये भक्त साहिबान उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किस प्रकार की भूमिका निभाते हैं? यह प्रश्न भी विचाराधीन लाने योग्य है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के संकलन और संपादन-कार्य के समय श्री गुरु अरजन देव जी की ओर से (सिख गुरु साहिबान के अतिरिक्त) ३० अन्य महापुरुषों की बाणी शामिल करने का मुख्य, उजागर व स्पष्ट कारण यही है कि वे तत्कालीन समाज में धर्म, वर्ण, श्रेणी और भू-खंड के आधार पर परस्पर विरोधी रुचियों, घृणा और व्यर्थ के कर्मकाण्डों के कारण व्याप्त हउमैग्रस्त शक्तियों को चुनौती देने वाले थे। गुरु जी निर्मल मार्ग के पथिक बनने और बनाने वाले धार्मिक-सामाजिक अगुओं को, प्रत्येक स्तर पर और हर पक्ष से एकजुट करना चाहते थे इसलिए कि हउमैमुक्त समाज की सृजना की जा

सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने अपना संपादकीय अधिकार प्रयोग करते हुए इन ३० महापुरुषों की वही बाणी शामिल की जो उनके उद्देश्य की पूर्ति हेतु ठोस भूमिका निभा सकने के लिए सक्षम बनती थी। विचार करने योग्य बात है कि संतों-महापुरुषों के अनुयाई भी अपने-अपने संप्रदाय में रहते हुए इन महापुरुषों की उसी बाणी को अधिक पावन तथा प्रमाणिक स्वीकार करते हैं जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित की हुई है। इसी संदर्भ में एक अन्य तथ्य हमारे ध्यान की विशेष रूप से मांग करता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सभी बाणीकारों में से किसी एक ने भी इस बात पर बल नहीं दिया कि मनुष्य का कल्याण मात्र हमारे धर्म में ही संभव अथवा संभावी है। इन बाणीकारों का मुख्य उद्देश्य जन-कल्याण है। मनुष्य को अपना जीवन और अधिक ऊंचा, और अधिक अच्छा, और अधिक सत्यवादी एवं और अधिक निर्मल बनाने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई है कि वे रुहानियत के मार्ग की सीढ़ी के डंडों पर चढ़कर अपने जीवन को सफल करें, क्योंकि यह मानस जन्म दुर्लभ है जिसकी प्राप्ति हेतु सभी तरसते हैं।

इस प्रसंग में यह बात अच्छी प्रकार से समझने की आवश्यकता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की धुर की बाणी आज के युग की विनाशकारी टेक्नालोजी और पूंजीवादी प्रबंध के साथ जुड़ी विचारधारा को तो मूलत: ही नकारती है; यह होलिस्टिक और ईकालोजीकल रुख वाली विचारधारा को प्यार करती व इसका प्रचार करती है परंतु ऐसे विज्ञान के साथ जो मानव-हितकारी कार्य करने को सक्षम है उसके साथ कोई विरोध नहीं प्रकट करती। यही कारण है कि इस ग्रंथ के बाणीकार न तो प्रकृति को निर्जीव मशीनी संरचना स्वीकार करते हैं और न ही इसके शोषण की अनुमति देते हैं, क्योंकि प्रकृति तो सच्चे पातशाह की रचना *'सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह'* है।

इस प्रकृति को मशीनी पुर्जा मानना बहुत बड़ी भूल है। सच्ची बात तो यह है कि वह कर्ता इस कुदरत के कण-कण में स्वयं निवास करता है:

सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ (पन्ना ४६४)

इस दृष्टि से प्रकृति के साथ जुड़ी हरेक वस्तु प्रभु-किरत होने के कारण प्यार किये जाने व सत्कार पाने के योग्य है। हम देखते हैं कि आज का मानव विश्व स्तर पर अपनी बात करने का इच्छुक नहीं बल्कि हरेक ढंग के साथ उसे मनवाने का आदी बनता जा रहा है चाहे उसकी बात उचित है या अनुचित। वह दूसरे की बात न तो सुनने के लिए तैयार है और न ही अपनी बात को लागू करवाने के समय दूसरे के जज्बातों तथा हालात की परवाह ही करता है। परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार ऐसी रुचि को स्वीकार नहीं करते। इन बाणीकारों का विश्वास और कार्य-शैली तानाशाही या शास्त्रार्थ वाली नहीं बल्कि इसकी नींव 'संवाद' है। बिना सोच-समझ के नस्ली, मज़हबी या राजनैतिक कटुता के कारण किसी के साथ घृणा करना पाप मानते हुए ये बाणीकार *'हम सभना के साजन'* और *'एकु पिता एकस के हम बारिक'* का स्वर-संगीत छेड़ते अथवा शुरू करते हैं। इसीलिए इस ग्रंथ के प्रमुख बाणीकार श्री गुरु नानक देव जी ने अनुराग, सहनशीलता और शांति-स्थापना के लिए विश्व-मानव को संदेश दिया कि:

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ

किछु कहीऐ ॥ *(पन्ना ६६१)*

यहां संदेश है कि पहले दूसरे की बात सुनो और उसकी भावनाओं को बिना चोट पहुंचाये, मानव-भलाई हेतु अपनी बात कहो। सच्ची बात है भी यही कि ज्ञान तभी गतिमान होता है जब दो विचारधाराएं रचनात्मक संवाद में आएं। इसी लिए बाबा फरीद जी भी स्पष्ट रूप में मनुष्य को सावधान करते हैं:

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

यह जीवन-युक्ति एक ऐसी मानसिक अवस्था है जो भिन्न-भिन्न सभ्याचारों के मनुष्यों के भीतर परस्पर सांझ उत्पन्न करती है और इस युक्ति अधीन वे सांझी किस्मत और सांझे विश्वास के सांझीदार बन जाते हैं। वास्तविक रूप में आदि मानव इसी वृत्ति का अनुसारी है। समय पाकर यह भावना धीरे-धीरे धीमी पड़ती गई और आज यह समाप्त होती दृश्टव्य हो रही है। सांप्रदायिक उपद्रवों और नस्ली भेदभावों की भावना को अनुभव करते हुए ही श्री गुरु नानक देव जी ने मानव-संसार को जो प्रथम संदेश दिया उसका अनुसरण करना आज के समय के मनुष्य की बड़ी आवश्यकता है। सुलतानपुर में आपका परम संदेश था:

ना को हिंदू न मुसलमान ॥

यही बात आप जी ने मक्का में हाजियों को उनके प्रश्न का उत्तर देने के समय कही:

पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई?
बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई। *(वार १:३३)*

श्री गुरु नानक देव जी की ओर से मानव-संसार को अनुराग, सहनशीलता और अमन-शांति का संदेश देने के लिए चार उदासियां की गईं। ये उदासियां भारत, मक्का, मदीना, बगदाद, रूस और श्रीलंका के उन प्रसिद्ध स्थानों के साथ संबंधित हैं जो हिंदू धर्म, इस्लाम, सूफियों तथा योगियों के गढ़ समझे जाते थे। आप जी अपनी विचारधारा के संचार हेतु स्वयं विभिन्न धर्मों के अगुओं के पास पहुंचे और ज्ञान-चर्चा की युक्ति द्वारा अपना मानव-हितकारी संदेश देने से पूर्व उनकी बात सुनी और फिर अपनी सुनाई।

निःसंदेह मनुष्यों में विभिन्न ख्यालों, गुणों, धार्मिक विचारों, रीतियों और नस्लों के कारण भेद होता है, काम की दृष्टि से सांसारिक पद अलग-अलग होते हैं, परंतु इसके बावजूद मनुष्य की संरचना और मानवता का स्वरूप एक ही होता है, उसके स्वाभाविक गुण अलग-अलग नहीं होते। हरेक मनुष्य में प्रभु ने गुण भरे हैं और उसको विकास करने की शक्ति बख्शी है। यह सही है कि सृष्टि-रचना में बहुत भेद है। गुण, कर्म, स्वभाव के कारण सभी मनुष्य एक जैसे नहीं हो सकते, परंतु फिर भी रंग-बिरंगी यह विभिन्नता मनुष्य को मानवता के सूत्र में एक समान पिरोकर रखती है। इसी लिए कर्म करने वाले गुरु-घर के सेवादार, सेवक, दास अपने गुण और कर्म के कारण ऊंची पदवी प्राप्त करके भाई लहणा जी से सिखों के दूसरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी बन गए। मानव-संसार के इतिहास में यह एक ऐसा क्रांतिकारी मोड़ था जिसने साधारण मानव को सिर ऊंचा करके जीवन जीने का बल प्रदान किया, क्योंकि इससे पूर्व तो मानव-समाज में प्रचलित वर्ण-व्यवस्था के अधीन दास, सेवादार का काम ऊपर रखे गए तीनों वर्गों की सेवा करने तक सीमित था। दास होते गुरु-पदवी की प्राप्ति करने के बारे में कभी कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था।

परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम बाणीकार गुरु नानक साहिब ने यह चमत्कार करके एक नया इतिहास रच दिया।

सिख धर्म के तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने मनुष्यों में हर प्रकार का धर्म-विभाजन, वर्ण-विभाजन, जात-पात, ऊंच-नीच का विभाजन, भेद समाप्त करते हुए पंगत सिस्टम को संस्थागत रूप दिया जिसके अंतर्गत हरेक मानव को पहले लंगर में एक ही पंक्ति में बैठ कर परशादा छकना पड़ता था। इसी लिए बादशाह अकबर ने भी लंगर में साधारण लोगों के साथ बैठ कर परशादा छका था। चौथे गुरु, श्री गुरु रामदास जी ने तो 'अनूप रामदासपुर' नगरी बसाने के समय बिना भिन्न-भेद, अलग-अलग धर्मों, के ५२ व्यवसायों के लोग यहां बसाये जिनको अपने-अपने धर्म-कर्म करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। वास्तव में सिख धर्म में सांप्रदायिकता, घृणा और मानव-विभाजन उत्पन्न करने वाले तत्वों को सर्वथा ही अस्वीकार करते हुए हरेक धर्म की आधारशिला सत्य पर टिकाई गई है। सच्चा धर्म सदैव मानवता की सेवा तथा उसके कल्याण की चाहत किया करता है:

एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ (पन्ना ११८८)

यही कारण है कि श्री गुरु अमरदास जी समस्त दुखी संसार के कल्याण हेतु प्रभु के समक्ष अरदास करते हैं कि:

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (पन्ना ८५३)

पांचवें गुरु, श्री गुरु अरजन देव जी ने तो श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करने के समय इसके चारों ओर चार द्वार रख दिये। ये चार द्वार चारों वर्णों के मनुष्यों को चारों दिशाओं से बिना भिन्न-भेद हर प्रकार से एक समान सत्कार, अधिकार और प्यार देने के संकेतक हैं। बात यहीं तक ही सीमित नहीं, श्री गुरु अरजन देव जी का संसार के धार्मिक साहित्य के क्षेत्र में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन-कार्य, एक ऐतिहासिक कारनामा अथवा साहस भरा कार्य है। सिख धर्म के इस पावन ग्रंथ में जहां छ: सिख गुरु साहिबान की पावन बाणी अंकित है वहां साथ ही ३० अन्य महापुरुषों की पावन बाणी भी अंकित है। संसार के किसी धार्मिक ग्रंथ में से ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। इन ३० महापुरुषों में हिंदू और इस्लाम धर्म के ऐसे संत-भक्त साहिबान शामिल हैं जिनमें उच्च कहलवाने वाली तथाकथित जातियों के जैसे ब्राह्मण भक्त पीपा जी तथा भक्त जैदेव जी और निम्न कहलवाने वाली तथाकथित जातियों के भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भाई मरदाना जी, भाई सत्ता जी, राय बलवंड जी आदि भी शामिल हैं। इन ३६ बाणीकारों की यह बाणी ३१ रागों में मानव-प्रेम का संदेश संचारित करते हुए कहती है:

आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥
मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ॥
(पन्ना १७)

क्योंकि सच्ची बात है ही यह कि:

एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥ (पन्ना ९६)

इस संदर्भ में मानव-संसार के हरेक मानव को भक्त कबीर जी के ये प्रवचन पल्लू के साथ बांध लेने चाहिएं:

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥१॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु

पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥१॥रहाउ॥
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥
ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै ॥२॥
सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥
हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥३॥
अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥४॥३॥
(पन्ना १३४९-५०)

इसलिए श्री गुरु अरजन देव जी की *'सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ'* की धुन जो कि मानव-रिश्तों को परिपक्व करने वाली है, ऐसा ही वातावरण सृजित करती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समूह बाणीकारों की बड़ी बढ़ाई अथवा श्रेष्ठता तथा अचरज शोभा इस तथ्य में भी है कि ये सभी बाणीकार लोगों को एक-दूसरे को समझने, दूसरों की भावनाओं को सहन् करने, प्यार करने और सुख-शांति के साथ रहने की भावना जागृत करने के लिए प्रयासरत् रहे। मनुष्य को मनुष्य के साथ प्यार-संबंध में बंधने और मैत्रीभाव का वायुमंडल सृजित करने में ये सभी बाणीकार पूर्णत: क्रियाशील थे। इन बाणीकारों का स्पष्ट मत था कि दूसरों के अवगुण देखने की जगह उनके गुणों के साथ सांझ पाना ही बुद्धिमता है:

साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥
(पन्ना ७६६)

बाबा फरीद जी ने फरमाया:

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
(पन्ना १३८१-८२)

ऐसा करने वाला मानव ही उस मनोस्थिति को पहुंच सकता है जहां:

देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८२)

इसी संदर्भ में श्री गुरु अरजन देव जी तो यहां तक कथन करते हैं कि हे मानव! तू:

दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥
(पन्ना ३२२)

क्योंकि छिपकर कुकर्म, घूस, ठगी, चोरी आदि करने वाले प्राणी यह समझते हैं कि उनको कोई नहीं देखता, परंतु वे परमात्मा की नज़रों से नहीं बच सकते। भक्त कबीर जी ऐसे प्राणियों को सावधान करते हैं कि:

मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥ (पन्ना ६५६)

श्री गुरु अमरदास जी ने मनुष्य को उपदेश दिया कि:

ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥
(पन्ना ९१८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दूसरे की जर, जोरू और जमीन को हथियाने की रुचि को सर्वथा ही नकारते हुए इसको मुसलमानों के लिए सूअर का मांस और हिंदुओं के लिए गाय का मांस खाने के समान पाप-कर्म बताया गया है:

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

इसलिए सिख धर्म में नाम जपने के साथ-साथ किरत करने और बांट कर छकने की परंपरा प्रचलित है:

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

सिख धर्म का मानवता को उपदेश ही यह है कि:

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥
(पन्ना ५२२)

क्योंकि उद्यमी व उत्साही मानव-चेतना अनुराग, सहनशीलता और शांति-मार्ग की पथिक

बन सकती है। ऐसी चेतना ही *'परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच'* की धारणी बन, कथनी और करनी में समता ला सकती है।

कथनी और करनी में समता न रखने वाले इस कार्य-क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते:

-मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ (पन्ना ९८१)

-हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥
बातन ही असमानु गिरावहि ॥ (पन्ना ३३२)

-अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ (पन्ना ४७३)

इसलिए सच्चा मानव वही है जिसके हृदय के भीतर पाप-कर्म की भावना उत्पन्न ही न हो:

सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ (पन्ना १९८)

कहने को तो सभी अगुआ चिरकाल से कहते आ रहे हैं कि सभी मानव समान हैं परंतु सोचने का विषय यह है कि क्या वे इस ओर एक कदम भी उठाने के लिए तैयार हैं। वे तो अभी तक यह सत्य स्वीकार करने को तैयार नहीं हो रहे कि प्रकृति की असीम दातों (ऊंची वस्तुएं) पर अधिकार सभी मनुष्यों का है, किसी एक संप्रदाय या व्यक्ति विशेष का नहीं। गुरबाणी किसी को गुलाम बनाने तथा स्वयं मालिक बन बैठने की युक्ति को स्वीकार नहीं करती। गुरबाणी हरेक मनुष्य को मानसिक स्वतंत्रता, एक समान अधिकार एवं सत्कार देने का समर्थन करती है। गुरबाणी के अनुसार परमात्मा ने प्रकृति की हर चीज बिना भेद-भाव के रची है। फिर यह श्रेणी-विभाजन, नस्ल-विभाजन का भेद-भाव किस आधार पर किया जाता है? प्रकृति के सभी स्रोत जब बिना भेद-भाव अपनी रहमत बांटते हैं, सूर्य हरेक वर्ण और संसाधन सभी के लिए एक समान है तो फिर मनुष्य की तरफ से मनुष्यों में विभाजन क्यों किये जाते हैं? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका आज के मनुष्य के पास कोई उत्तर नहीं चाहे वह किसी भी वर्ण या धर्म के साथ संबंधित है। गुरबाणी में पूर्ण उत्कंठा के साथ मानव-समानता का पूर्ण समर्थन किया गया है परंतु यह प्रश्न ज्यों का त्यों कायम है।

मेरे विचार में मानव-समाज विश्व स्तर पर जिन विराट समस्याओं का आज के समय में संताप भोग रहा है, उनके निवारण के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एक विलक्षण कोटि का पउड़ी-विधान प्राप्त होता है। यह पउड़ी-विधान ही विश्व-व्याप्त विराट समस्याओं के समाधान के लिए 'रोल-मॉडल' के तौर पर ठोस एवं सार्थक भूमिका निभा सकता है।

१. *धार्मिक सह-अस्तित्व :* आज विश्व की सबसे बड़ी एवं गंभीर समस्या अपने-अपने धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने की है। परमात्मा एक है, धर्म भी एक ही होता है और परमात्मा घट-घट में निवास करने वाला एवं सर्वव्यापत है परंतु फिर भी सांप्रदायिक उपद्रव भड़कते हैं। इस समस्या का समाधान श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बहुत अर्थपूर्ण है:

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥
(पन्ना ८७५)

वैसे भी 'धर्म' की वास्तविक परिभाषा के अंतर्गत यह किसी एक संप्रदाय या व्यक्ति विशेष का हो नहीं सकता। धर्म तो तब बनता है जब बाबा फरीद जी के अलाही प्रवचनों के अनुरूप *'बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ'* की शर्त पूरी की जाए। इसी लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने स्पष्ट रूप में इसका निर्णय किया कि *'सगल धरम महि स्रेसट धरम- हरि को नामु जपु*

निरमल करम ॥' विभिन्न धर्मों के स्थानों को अपनी-अपनी संपत्ति मानने वाले अगुओं को इस परिभाषा से दिशा लेने की आवश्यकता है।

२. *कुरप्पशन की समाप्ति के लिए :* आज समस्त विश्व कुरप्पशन की चोट तले है जिसके बारे में गुरबाणी कहती है:

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

३. *आत्म-सम्मान :*

जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

४. *हक-हलाल की किरत कमाई:*

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

५. *सांझीवालता :*

-सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)

-सभु को मीतु हम आपन कीना
हम सभना के साजन ॥ (पन्ना ६७१)

-ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

६. *मानव-समानता :*

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

७. *संवाद/विचार-चर्चा :*

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई
दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ (पन्ना ११८५)

८. *एड्ज़:*

घर की नारि तिआगै अंधा ॥
पर नारी सिउ घालै धंधा ॥ (पन्ना ११६४-६५)

९. *निंदा/चुग़ली :*

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥ (पन्ना ७५५)

-हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ (पन्ना ७२८)

१०. *वैर-विरोध :*

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्राप्त इस पउड़ी विधान का ही प्रतिफल है कि १९४७ में पंजाब-विभाजन के समय जिस प्रकार के सांप्रदायिक उपद्रवों ने मानवता की सफेद चादर रक्तरत् की उसको पुन: सफेद करना संभव नहीं लगता था। परंतु सिख धर्म की सहनशीलता ने अनुराग, सुख-शांति और प्रेम-प्यार की गांठें मजबूत कर दीं और सभी संप्रदाय इंसानों की तरह मिलजुल कर रहते हुए फिर से सम्पन्न व सुखी जीवन-यापन करने लग पड़े। परंतु सन् १९७८ और १९८४ की मंदभागी घटनाओं ने पंजाब के शांति वाले वातावरण को फिर आग लगा दी। एक बार तो ऐसा लगने लग गया था कि पंजाब का एक और सांप्रदायिक विभाजन हो जाएगा परंतु *'होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ'* के सम्मुख पुन: अनुराग, समस्वर, सहनशीलता और शांति लौट आई है। पहले की तरह ही गुरुद्वारों में कथा-कीर्तन होता है, लंगर में परशादे छकाये जाते हैं। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर के दर्शन करने की हरेक वर्ग के मानव को हार्दिक इच्छा होती है। सांप्रदायिक भावना लोप हो गई और सहनशीलता **(Tolerance)**, अनुराग **(Understanding)** और सुख-शांति **(Peace)** की भावना उत्पन्न करने में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का निरंतर विशेष योगदान रहा है। इसलिए आवश्यकता है इन बाणीकारों की वह युक्ति अपनाने की जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के राग-प्रबंध में भी उत्तरी और दक्षिणी पद्धति के रागों को एक समान सत्कार देने वाली है। यहां तक

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

गुरू-काल में २२ मंजियां : संक्षिप्त विवरण

-स. गुरदीप सिंघ*

जगत-गुरू श्री गुरू नानक साहिब के आगमन के समय भारत की दशा बहुत दयनीय थी। जात-पात का भेदभाव, स्त्रियों की समाज में दयनीय दशा, मुसलमानों की ओर से हिंदुओं पर जजिया तथा अंधविश्वास का बोलबाला था और सती-प्रथा प्रचलित थी। श्री गुरू नानक देव जी ने अपनी पहली उदासी के समय कई हिंदू तीर्थ-स्थल देखे और अपने विचारों के प्रचार (समाज सुधार) हेतु कई केन्द्र बनाए। कई विद्वानों को प्रचारक बनाया। जिसे प्रचारक बनाया जाता है उसके बारे में यही कहा जाता कि गुरू जी ने उसको 'मंजी' बख्श दी है।

प्रचारक को गुरू-घर की मर्यादा बताकर दृढ़ कराया जाता था। धीरे-धीरे सिख संगत की संख्या बढ़ती गई और इस बात की जरूरत महसूस हुई कि और प्रचारक बनाए जाएं। श्री गुरू अमरदास जी ने सिखों की आबादी वाले क्षेत्र को २२ हिस्सों में बांटा। प्रत्येक में से एक व्यक्ति चुनकर उनको मंजियां (उपदेशक गद्दियां) बख्श दीं। सिख समाज में उन व्यक्तियों को माननीय ठहराया गया है। भाई संतोख सिंघ जी लिखते हैं:

द्वैविंसति दिल्ली उमराईण।
तिते सिख मंजी सु बठाईण। (गु. प्र. सू. ग्रंथ)

महान कोश (भाई कान्ह सिंघ) के अनुसार श्री गुरू अमरदास जी ने निम्न गुरसिखों को मंजियां बख्शीं:

(१) अल्ला यार (लाहौर) (२) सच्चनसच्च (३) साधारण (गोइंदवाल) (४) सावणमल (गोइंदवाल) (५) सुक्खण (धमिआल पोठोहार) (६) हंदाल (७) केदारी (८) खेडा (९) गंगूशाह (गढ़शंकर) (१०) दरबारी (११) पारो (१२) फेरा (मीरपुर, जम्मू) (१३) बूआ (श्री हरिगोबिंदपुर) (१४) बेणी (चूंहनी, लाहौर) (१५) महेसा (सुलतानपुर) (१६) माईदास (नरौली) (१७) माणकचंद (वैरोवाल) (१८) मुरारी (खाईपिंड, लाहौर) (१९) राजाराम (सधमा, जालंधर) (२०) रंगशाह (मलधोते, जालंधर) (२१) रंगदास (घड़ुआ) (२२) लालो (डल्ला)

महिमा प्रकाश (गुरुद्वारा दर्शन, ज्ञानी ठाकुर सिंघ) के अनुसार श्री गुरू रामदास जी ने नीचे दिए गए २२ प्रचारक नियत किए:

(१) सावनमल (२) सच्चनसच्च (३) लालू (४) महेशा धीर (५) भाट (सुलतानपुर) (६) पारो (डल्ला) (७) रवाना हुर (डल्ला) (८) फिरा कचार (मालवा) (९) गंगदास (पिंड घाघो) (१०) प्रेमा (बहिरामपुर) (११) बीबी भागो (काबुल) (१२) माणकचंद जीवड़ा (वैरोवाल) (१३) माईदास (नारली) (१४) खेड़ा सोइरी (खेमकरन) (१५) मथो-मुरारी (१६) हुंदाल (जांडियाला) (१७) साधारण, लोहार (१८) भलो बीबे ने (१९) दुर्गो भन्डी (महेड़े ग्राम) (२०) भीखा शाह (सुलतानपुर) (२१) केशो पंडित (२२) साई दास गोसाईं।

गोइंदवाल साहिब के गुरुद्वारा हवेली साहिब के बरामदे में लगी सुनहरी तस्वीर में नीचे दिए गए नामों के २२ मंजीदारों का विवरण इस प्रकार है:

*३०२, किदवाई नगर, लुधियाना।

(१) पारो जुल्का (डल्ला) (२) लालू बुधुवार (३) महेशा धीर (सुलतानपुर) (४) माईदास वैरागी (५) माणकचंद जीवड़ा (वैरोवाल) (६) सावणमल (वैरोवाल) (७) मल जी सेवा (८) हंदाल जाट (जंडियाला) (९) निसच (जबरा विच) (१०) गंगू खत्री (घाघो) (११) साधारण लुहार (बकाला) (१२) मथो-मुरारी (१३) खेड़ा सोइरी (खेमकरन) (१४) फिरआ (१५) कटारा (मालवा) (१६) साईंदास गुसाईं (१७) दिते दे भले (जमदोह) (१८) माई सेवां (काबुल) (१९) दुर्गे पंडित (महेड़ा) (२०) जीत बंगाली (२१) बीबी भागो (कशमीर) (२२) बल्लू नाई।

उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि अलग-अलग लेखकों ने कुछ नाम अलग-अलग भी लिखे हैं, परंतु १३ नाम ऐसे हैं जिनका उल्लेख सबने किया है:

२२ मंजीदारों से सम्बंधित कुछ वर्णन महान कोश (भाई कान्ह सिंघ नाभा) के अनुसार इस प्रकार है:

(१) भाई अल्लायार: आपको अल्लाशाह भी कहते हैं। ये पठान थे और दिल्ली तथा लाहौर में घोड़ों का व्यापार करते थे। एक बार दिल्ली से आते समय ब्यास के किनारे डल्ला निवासी भाई डल्ला जी मिल गए जिससे इनके मन में श्री गुरू अमरदास जी के दर्शन करने की लालसा पैदा हुई। सतिगुरू जी के पास पहुंच कर सिखी धारण की। इनका जीवन इतना ऊंचा बन गया कि इनको 'गुरमुख सिख' माना जाने लगा। श्री गुरू अमरदास जी ने इनको धर्म प्रचार की सेवा सौंपी।

(२) भाई सच्चन सच्च: ये जिला लाहौर की तहसील शकरपुर के गांव मंदिर के रहने वाले एक ब्राह्मण परिवार से संबंधित थे। इनको हर समय सच कहने की आदत थी जिस कारण इनका नाम ही सच्चन सच्च प्रसिद्ध हो गया। हरीपुर कांगड़े के राजा की रानी पागल हो गई थी और राजा ने उसको गोइंदवाल छोड़ दिया था। गुरू जी ने अपनी कृपा-दृष्टि द्वारा उसे तंदरुस्त कर दिया था। जब सच्चन सच्च भाई सावणमल के साथ गुरू जी की शरण में आए तो गुरू जी ने रानी की शादी इनके साथ कर दी। दोनों मिलकर सारी उम्र गुरमति का प्रचार करते रहे। सतिगुरू जी ने सच्चन सच्च को मंजी बख्शी थी।

(३) भाई साधारण: ये गोइंदवाल के रहने वाले लोहार थे। श्री गुरू अमरदास जी के सिख बने। इनकी सेवा-भक्ति पर प्रसन्न होकर गुरू जी ने इन्हें प्रचारक बना दिया।

(४) भाई सावणमल: आप श्री गुरू अमरदास जी के भतीजे थे। जब गोइंदवाल साहिब में गुरुद्वारा और संगत के लिए मकान बनाने की जरूरत हुई तो गुरू जी ने इनको पहाड़ी लकड़ी लाने के लिए हरीपुर भेज दिया। वहां पर आप सिखी का प्रचार करते रहे। इनकी प्रेरणा से ही हरीपुर का राजा गुरू जी के पास हाजिर हुआ और उसने परिवार सहित सिखी धारण की। सतिगुरू जी ने सावणमल को मंजी बख्श दी।

(५) भाई सुक्खण: यह जिला रावलपिंडी के धमिआण का रहने वाला खत्री परिवार से संबंधित और पहले दुर्गा देवी का भक्त था। श्री गुरू अमरदास जी की शरण में आकर सिख बना। इनका जीवन इतना ऊंचा बन गया कि सतिगुरू जी ने इनको पोठोहार में धर्म प्रचार के लिए मंजी बख्श दी।

(६) भाई हंदाल: ये जिला अमृतसर के नगर जंडियाला का रहने वाला जाट था। श्री गुरू अमरदास जी का सिख बना और गुरू के लंगर की सेवा बड़े प्रेम से किया करता था। सतिगुरू

जी ने इन्हें मंजी बख्श दी। इनके नगर का नाम 'गुरू का जंडियाला' प्रसिद्ध हो गया। हर समय अपने मुख से 'निरंजन-निरंजन' कहा करते थे जिससे इनके सम्प्रदाय का नाम ही 'निरंजनीए' हो गया। भाई बाले वाली जन्मसाखी का कर्त्ता वास्तव में इन्हीं का पुत्र बिधीचंद था।

(७) भाई केदारी: भाई केदारी बटाला (जिला गुरदासपुर) का रहने वाला, जात का लूंबा खत्री था। इन्होंने सतिगुरू जी का सिख बनकर, सिखी के प्रचार और प्रसार में बहुत योगदान दिया। गुरू जी ने इनको प्रचारक बनाकर मंजी बख्श दी।

(८) भाई खेडा: भाई खेडा लाहौर के नगर खेमकरन निवासी, पहले ब्राह्मण एवं दुर्गा देवी का भक्त था। श्री गुरू अमरदास जी का सिख बन कर परमात्मा का अनन्य भक्त प्रसिद्ध हुआ। गुरू जी ने इन्हें सिख धर्म का प्रचारक बना कर मंजी बख्श दी।

(९) भाई गंगूशाह: यह गढ़शंकर का रहने वाला खत्री था। श्री गुरू अमरदास जी की शरण में आकर सिखी धारण कर ऊंचे जीवन वाला बन गया। गुरू जी ने रियासत सिरमौर का प्रचारक बना कर भेज दिया। गंगूशाह का प्रसिद्ध स्थान 'दाऊ' (जिला अंबाला) में है। इनके सम्प्रदाय के लोग अपने आप को गंगूशाही कहलवाते हैं। गंगूशाह का पड़पोता भाई जवाहर सिंघ बहुत करनी वाला हुआ है। इसका देहुरा खटकड़ कलां (जिला जालंधर) में है।

(१०) भाई दरबारी: भाई दरबारी, नगर मजीठा (जिला अमृतसर) का रहने वाला लूंबा खत्री था।

(११) भाई पारो: पारो जुलका खत्री डल्ले का रहने वाला था। यह श्री गुरू अगंद देव जी का सिख बना था। श्री गुरू अमरदास जी की सेवा करके परमहंस की पदवी प्राप्त की। सतिगुरू जी ने इन्हें मंजी बख्शी। श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी के माननीय ससुर भाई नारायण दास इनकी कुल में से थे।

(१२) भाई फेरा: यह मीरपुर (इलाका जम्मू) का रहने वाला कटारा खत्री था। यह पहले योगियों का चेला था। श्री गुरू अमरदास जी का सिख बनकर आत्म-ज्ञानी हुआ। सतिगुरू जी ने इनको मंजी बख्श दी। इन्होंने पहाड़ी इलाके में सिखी का बहुत प्रचार किया।

(१३) भाई बेणी: चूहनियां (जिला लाहौर) का रहने वाला बहुत बड़ा पंडित और महाज्ञानी था। शास्त्रार्थ करके जीतता हुआ जब गोइंदवाल आया तो श्री गुरू अमरदास जी का दर्शन करके विद्या-अभिमान छोड़ दिया और गुरू जी का सिख बन गया। सतिगुरू जी ने धर्म प्रचार का कार्य सौंप दिया। कई इतिहासकारों ने इनका नाम बेणी माधो भी लिखा है। पं. हरदयाल कवि इनकी ही कुल में से थे जिसने 'सारुक्तावली' और 'वैराग शतक' का सुंदर अनुवाद किया।

(१४) भाई महेशा: सुलतानपुर का रहने वाला धीर खत्री था।

(१५) भाई माईदास: माझे के नरौली गांव का रहने वाला पं. माईदास पूर्व काल में वैष्णव मत धारी था। श्री गुरू अमरदास जी की शरण में आया और सिख हुआ। भाई माणक चंद की संगत में आत्मज्ञानी हुआ। गुरू जी ने प्रचारक बना दिया। इन्होंने माझे के इलाके में सिखी का बहुत प्रचार किया।

(१६) भाई माणक चंद: वैरोवाल (जिला अमृतसर) का रहने वाला पथरीआ खत्री था। इन्होंने गोइंदवाल की बाउली का कड़ तोड़ा था और डूब गये। गुरू जी ने इनको जीवन-दान दिया और नाम 'मर-जीवड़ा' रख दिया। इनकी संतान वैरोवाल में मरजीवड़े के नाम से प्रसिद्ध है।

(१७) भाई बुआ: पहले यह त्रेहण खत्री था। श्री

गुरू अमरदास जी का सिख बनकर परमहंस पदवी को प्राप्त हुआ। सतिगुरू जी ने इन्हें प्रचारक मंजी बख्श दी। इनकी संतान श्री हरिगोबिंदपुर में बसती है।

(१८) मथो-मुरारी: यह जिला लाहौर के खाई गांव का रहने वाला खत्री था। इसका पहला नाम प्रेमा था, जिसे कोढ़ हो गया था। श्री गुरू अमरदास जी की कृपा-दृष्टि द्वारा रोग दूर हुआ। गुरू जी ने इसका नाम मुरारी रख दिया। उप्पल जाति के खत्री 'भाई शीहे' ने सतिगुरू जी की आज्ञा से अपनी लड़की 'मथो' का विवाह 'मुरारी' से कर दिया। इस भाग्यशाली जोड़ी ने गुरमति के प्रचार में बहुत योगदान दिया। दोनों का मिला-जुला नाम मथो-मुरारी इतिहास में प्रसिद्ध हो गया। सतिगुरू जी ने दोनों को प्रचारक की पदवी बख्श दी।

(१९) भाई राजाराम: यह सारस्वत ब्राह्मण था और गुरू जी का सिख बनकर जाति अभिमान से मुक्ति पाई। सतिगुरू जी ने प्रचारक की मंजी बख्श दी। भाई राजाराम की संतान सधमा (जिला जालंधर) में बसती है।

(२०) भाई रंगशाह: यह जिला जालंधर के मलुधोते के अरोड़ा परिवार से था। गुरू जी का सिख बनकर अपनी आयु धर्म प्रचार में बिता दी। सतिगुरू जी ने इनको मंजी बख्श दी। भाई रंगशाह ने दुआबे में प्रचार किया। इनकी संतान 'बंगा' में बसती है।

(२१) भाई रंगदास: यह जिला अम्बाला के घड़ुआ का रहने वाला भंडारी खत्री था। पहले वैरागियों का चेला था। श्री गुरू अमरदास जी का सिख बन गया। गुरू जी ने प्रचारक मंजी बख्श दी। इनकी संतान घड़ुआ में बसती है।

(२२) भाई लालो: यह डल्ले का रहने वाला सभरवाल खत्री था। श्री गुरू अमरदास जी का सिख बन गया। यह अपने इलाके का उच्च कोटि का वैद्य था। तेइए ताप का इलाज करने में मुहारत रखता था। सतिगुरू जी ने इनको प्रचारक मंजी बख्श दी।



. . . श्री गुरु ग्रंथ साहिब *(पृष्ठ ३२ का शेष)*

कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का समूचा राग-प्रबंध भी संगीत-संसार में 'गुरमति संगीत' की एक विलक्षण संगीत पद्धति की आधारशिला रखता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में तो अलग-अलग धर्मों संस्कृतियों, उपभाषाओं, उपक्षेत्रों और जातियों के लोगों को एक समान सत्कार और अधिकार देते हुए एक समान ही समझा जाता है।

आज जब कि पूरा विश्व अपने-अपने देशों और कौमों की सम्पन्नता की विचार-दृष्टि के कारण परस्पर अंतर-विरोधों में ग्रस्त होने के कारण विनाश के कगार पर खड़ा है तो आवश्यकता है श्री गुरु ग्रंथ साहिब के इस प्रिय एवं सांझ के स्वर वाले संदेश *'ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई'* को सही परिपेक्ष में विश्व स्तर पर प्रसारने, संचारने और अपनाने की इसलिए कि मानव-चेतना में सहनशीलता, अनुराग और अमन-शांति की भावना उत्पन्न हो सके। ऐसा प्रयास ही मानवता को एकता के धागे में पिरोकर मानव-समाज के जीवन-मार्ग का प्रेरणा-स्रोत बनकर विश्व-समस्याओं का समाधान कर सकता है।



ੴ का महत्व

*-डॉ. नीतू रानी**

ੴ शब्द से सिख धर्म के ही नहीं, अपितु अन्य सभी धर्मों के लोग भी अच्छी तरह से परिचित हैं। ੴ वो शब्द है जिसकी ध्वनि सम्पूर्ण ब्रह्मांड में गूंजती हुई सुनाई देती है। ੴ से ही सम्पूर्ण सृष्टि का विकास हुआ है- *"ओअंकारि अकारु करि पउणु पाणी बैसंतरु धारे।"* सिख धर्म के पहले गुरु श्री गुरु नानक देव जी ईश्वर की भक्ति में लीन रहे। प्राचीन भारतीय परंपरा में शब्द 'ओम' विद्यमान था किन्तु श्री गुरु नानक देव जी का विश्वास था:

एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥
(पन्ना ४३३)

श्री गुरु नानक देव जी परमात्मा के एक निराकार रूप को मानते हैं। अत: उन्होंने एकेश्वरवाद को रूपमान करता हमें ੴ (एक ओअंकार) प्रदान किया। भाई गुरदास जी के अनुसार, *"एका एकंकारु लिखि देखालिआ। ऊड़ा ओअंकारु पासि बहालिआ।"* वास्तव में श्री गुरु नानक देव जी ने 'एक' के प्रयोग के साथ 'ओअंकार' शब्द को परम्परागत मर्यादा और सगुण साधना पद्धति से अलग करके निर्गुण भूमि पर स्थापित किया है। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि जो लोग परमात्मा के नाम पर भेदभाव करते हैं वे गलत हैं। जैसे शून्य चाहे जितने भी हों उनका कोई महत्व नहीं है किन्तु यदि उनके आगे 'एक' का अंक लगा दिया जाए तो उनका मूल्य सैंकड़ों, हजारों, लाखों तथा करोड़ों तक पहुंच जाता है। इसी प्रकार ੴ असीम का सूचक है और इसका असीम महत्व है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित प्रथम बाणी 'जपु जी साहिब' का आरम्भ ही ੴ से होता है। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम शब्द ੴ है। ੴ को यदि बीज कह लिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। बीज के बिना अंकुर तथा अंकुर के बिना पेड़ की कल्पना नहीं की जा सकती। ੴ यदि बीज है तो 'जपु जी' उसका अंकुर है और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी इस अंकुर का तना, शाखाएं, फल-फूल तथा पेड़ हैं। ੴ से शुरू मूल-मन्त्र की व्याख्या 'जपु जी साहिब' तथा 'जपु जी साहिब' की पूर्ण व्याख्या श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हैं। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा ੴ के बीजारोपण करने से ही आज हमारे पास श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पवित्र बाणी विद्यमान है।

श्री गुरु नानक देव जी ने ੴ को कभी भी न छोड़ने के लिए कहा है। इससे ही मानव-जीवन में शुभ गुणों का संचार होता है। मूल-मंत्र का आरंभ इसी से है:

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

भावार्थ परमात्मा एक है। उसका नाम सत्य है। वह सबका कर्त्ता है। वह भय-रहित तथा वैर-रहित है। वह तीनों कालों में विद्यमान होते हुए भी काल-रहित है। वह जन्म-मरण में

लैक्चरार, **M.B.S.B.N.B. (गरीबदासी) कालेज, टिब्बा नंगल, रोपड़ (पंजाब)*

नहीं आता तथा स्वयंभू है। ऐसे परमात्मा की प्राप्ति गुरु की कृपा द्वारा ही हो सकती है।

गुरु साहिबान ने माना है कि परमात्मा अत्यन्त शक्तिमान, कृपालु तथा शाश्वत है। वह कामना-रहित, अजर, अमर, धीर, गम्भीर, अजन्मा, अगोचर, मृत्यु-रहित तथा सर्वव्यापक है। चाहे समस्त विश्व का नाश हो जाए किन्तु परमात्मा सदैव स्थिर है। श्री गुरु नानक देव जी ने इन सभी विशेषणों का प्रयोग अपनी बाणी में किया है। वे मानते हैं कि ੴ से ही समूह ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है। इसका जाप करने मात्र से अनेक पापी जीव संसार रूपी भवसागर से तर गए हैं। अत: हमें उस एक परमात्मा का नाम स्मरण करना चाहिए। कुछ लोभी लोग धन बटोरने के लिए कर्मकांड द्वारा लोगों को अन्धविश्वास में जकड़े रखते हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने ऐसे अन्धविश्वासों का विरोध किया है। उनके जीवन से सम्बंधित एक साखी से आप सभी परिचित होंगे, जब उन्होंने लोगों को बाहरी दिखावे तथा आडम्बरों से बचने के लिए शिक्षा दी तथा एक परमात्मा का नाम-सुमिरन करने का उपदेश दिया। एक बार जब गुरु जी हरिद्वार गए तो उन्होंने देखा कि लोग सूर्य को जल अर्पित कर रहे हैं। तब गुरु जी ने सूर्य की तरफ पीठ करके विपरीत दिशा में जल देना आरम्भ कर दिया। लोगों के पूछने पर जब उन्होंने कहा कि मैं अपने खेतों को पानी दे रहा हूँ तो लोग हंसने लगे। तब उन्होंने लोगों को समझाया कि यदि मेरे द्वारा दिया गया पानी मेरे खेतों तक नहीं पहुंच सकता तो तुम्हारे द्वारा दिया गया पानी सूर्य तक कैसे पहुंच सकता है? इस तरह उन्होंने लोगों को अंधविश्वास से बाहर निकालने का प्रयत्न किया। उन्होंने कहा कि परमात्मा एक है और इसी से सारी सृष्टि और ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है, इसी से सारा संसार प्रकाशमान है। परमात्मा घट-घट में व्याप्त है। उसे बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं है बल्कि मनुष्य को अपनी सांसारिक वृत्तियों को नियन्त्रित कर अन्तरमुखी होकर अपने हृदय में ही उस परमात्मा को ढूंढना चाहिए:

बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता ॥
(पन्ना ९५३)

मनुष्य के हृदय में ही उसका वास है, किन्तु वह इस बात से अनजान होने के कारण उसे बाहर खोजता रहता है:

निकटि वसै देखै सभु सोई ॥
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ *(पन्ना ८३१)*

परमात्मा को बाहर खोजना व्यर्थ है क्योंकि वह ज्योति रूप जीवात्मा में समाया हुआ है। सारा संसार उसके हृदय में तथा वह सबके हृदय में समाया हुआ है:

तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ *(पन्ना ११)*

जिनके हृदय में ੴ का महत्व प्रकट हो गया वे ही आध्यात्मिकता की ऊंचाइयों को छू सकते हैं। ੴ ऐसा खजाना है कि जो भी व्यक्ति अमृत वेला को उठ कर इसका जाप करता है उसकी सभी इच्छाएं पूरी होती हैं अर्थात उसको कोई सांसारिक पदार्थों की इच्छा नहीं रहती है। इसलिए जो मन एवं अंतरात्मा से इसका जाप करते हैं, खुशियां तथा रहमतें उनकी झोली में पड़ती हैं और अन्त समय में वे सद्गति को प्राप्त होते हैं।



वैश्वीकरण में सिख सिद्धांतों की प्रासंगिकता

*-डॉ. अविनाश शर्मा**

सिख धर्म इस उपमहाद्वीप का नवीनतम धर्म है। इस धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने अपने युग की सभी धार्मिक साधनायों, विश्वासों और सिद्वांतों का गहन अध्ययन एवं मनन किया। उन्होंने कई रचनात्मक पक्षों, संकल्पों तथा आदर्शों का प्रतिपादन किया तथा सर्वसाधारण की भाषा पंजाबी में इन सिद्धांतों की व्याख्या करके साधारण व्यक्ति को आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। श्री गुरु नानक देव जी ने सिख धर्म को भारतीय चिन्तन परम्परा का विकसित स्वरूप प्रदान किया और उसे चिन्तन के उच्चतम शिखर पर पहुंचाया।

भारतीय चिन्तन के अनुसार आध्यात्मिकता की यात्रा शरीर से मन और मन से अन्तरमन (आत्मा) तक की है और अंत में आत्मा अन्तिम सत्य के दर्शन करके परमात्मा के चरणों में निवास करने लगती है। आध्यात्मिकता का मूल उद्देश्य स्वयं को पहचानना और अन्तिम सत्य को प्राप्त करना है। व्यक्ति को इस दशा में चलने के लिए और उसे प्रेरित करने तथा उसका मार्गदर्शन करने के लिए धर्म का सहारा लेने की आवश्यकता है।

भारतीय धर्माचार्यों का विश्वास है कि ज्ञान व्यक्ति को उसकी पहचान देता है, विश्वास ज्ञान प्रदान करने में सहायता करता है। श्री गुरु नानक देव जी ने ईश्वर को प्राप्त करने के लिए ज्ञान के साथ-साथ प्रेम पर भी बल दिया। उन्होंने ईश्वर को 'अकाल पुरख' तथा 'करता पुरख' कहा है। उनकी दृष्टि में ईश्वर सगुण भी है और निर्गुण भी परंतु उनका सगुण पक्ष परंपरागत सगुण से भिन्न है। प्रकृति का विस्तार ईश्वर का सगुण रूप है। प्रकृति अपने विविध रंगों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करती है। श्री गुरु नानक देव जी ने प्रेम, सहनशीलता, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व सरबत्त की चिन्ता तथा सरबत्त के भले की बात की है। श्री गुरु नानक देव जी के पास सर्वव्यापी सोच तथा विश्व दृष्टिकोण की विशालता थी। श्री गुरु नानक देव जी आपसी संवाद को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। विश्व की अधिकांश समस्याओं का समाधान संवाद के द्वारा सम्भव है। वे विश्व में चलित भिन्न विचारों और सभ्यतायों की भिन्नता के कारण उत्पन्न अनेक समस्याओं का समाधान भी संवाद से ही मानते हैं।

आधुनिक युग में जबकि बाजारवाद बहुत प्रमुख हो रहा है, सिख सिद्धांत और भी अधिक प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण हो रहे हैं। वैश्वीकरण के आवरण के नीचे हम विश्व-बन्धुत्व का स्वप्न पाल रहे हैं, किन्तु विश्व के प्रति एक नए दृष्टिकोण बनाने में असफल रहे हैं। इस स्थिति में श्री गुरु नानक देव जी का विश्व-दृष्टिकोण संसार को एक नया मार्ग दिखा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी के दृष्टिकोण को अपनाकर विश्व आपनी समस्याओं का शान्तिपूर्ण समाधान कर सकता है।

**निदेशक, स्वामी सर्वानंद कालेज आफ ऐजूकेशन, दीनानगर (गुरदासपुर)-१४३५३१*

श्री गुरु नानक देव जी ने जाति-प्रथा का खण्डन किया है। उनके विचार में सभी मानवों का शक्ति-स्रोत एक है तो उनमें ऊंच-नीच की रेखा खींचना अप्राकृतिक है। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा है कि मानव अलग-अलग कैसे हो सकते हैं जबकि हम सभी में एक ही रोशनी चमकती है?

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

श्री गुरु नानक देव जी का यह संदेश विश्व में समता और विश्व-बन्धुत्व की भावना को विकसित करता है। श्री गुरु नानक देव जी से एक बार काजियों तथा मौलाणों द्वारा पूछा गया था कि हिन्दू तथा इस्लाम धर्मों में से कौन सा धर्म अच्छा है तो उन्होंने उत्तर दिया था कि वही धर्म अच्छा है जो व्यक्ति को अच्छा इंसान बनाता है। श्री गुरु नानक देव जी अच्छे मानव में विश्वास करते थे। अच्छे इंसान ही धरती पर सुख, शान्ति और समृद्धि ला सकते हैं।

आज उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से आध्यात्मिकता का प्रभाव कम हो रहा है। हमें अपनी आध्यात्मिक संस्कृति को बचाने के लिए सभी सम्भव यत्न करने चाहिएं। आज पूर्व और पश्चिम की अध्यात्मिक संस्कृतियों को एक करके इस संस्कृति को नया मोड़ देने की आवश्यकता है। यह कार्य श्री गुरु नानक देव जी के सेवादार कर सकते हैं, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने अनुयायियों को सर्वव्यापी सिद्धांत दिए हैं। यदि संसार को मण्डी की संस्कृति से बचाना है तो इन सर्वव्यापी सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार बहुत आवश्यक है। श्री गुरु नानक देव जी के पास विस्तृत मानवतावादी दृष्टिकोण था। आज उनका संदेश और भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हो गया है।



कविता

मेरा प्यारा पंजाब

कौन है यह सहस्रों वर्षीय सदाबहार युवक
जो पांच घोड़ों वाले रथ की वल्गाएँ थामे है
जिसके शीश पर ऊँची शुभ्र दस्तार सुशोभित है
दस्तार जो उसकी लाज व पत की प्रतीक है
जो अपने सुगठित तन पर सच्चे रेशम का
लंबा ढीला-ढाला कुर्ता पहने है
कुर्ता जिसके सीने पर भाखड़ा नंगल सरीखे
सूरजमुखी फूल टँगे हैं
जिसके गरेबाँ पर शहरों के चित्र बने हैं
जिसके आँचल पर गाँवों की
सतरंगी बेलें कढ़ी हैं
गेहुँए रंग के खड़खड़ाते तहमद की
शान अनूठी है
युवक जिसके हाथ में ऊँची शामदार लाठी है
जिसके पैरों में भंगड़े के घुँघरू बँधे हैं
जिसने कमरपट्टे में वंशी खोंस रखी है
वंशी जिससे वह माहौल में
ऋषियों-मुनियों और गुरु साहिबान की
पावन बाणी की खुशबू बिखेरता है
जिसके गर्वीले ललाट पर
जलियांवाला बाग की पावन मिट्टी का
टीका दमकता है?
यह युवक जिसकी जग आरती उतारता है
यह युवक जो सदाबहार गुलाब है
यह मेरा प्यारा पंजाब है।



-डॉ. तिलकराज गोस्वामी 'आकांक्षा' ९१-सी/८-सी, सर्वोदय नगर, भारद्वाजपुरम, इलाहाबाद-२११००६ (उ०प्र०)

अंजन माहि निरंजनि रहीऐ

-कैप्टन मनमीत कौर*

मनुष्य एक मनोशारीरिक प्राणी है। अतः मनुष्य-जीवन प्राप्त करके भी जो प्राणी केवल शारीरिक या भौतिक सुखों को प्राप्त करने में ही लिप्त रहता है वह अपने जीवन को व्यर्थ बिता देता है। मनुष्य केवल शरीर मात्र ही नहीं है वरन् उसमें हृदय है, आत्मा है तथा बुद्धि भी है। इस कारण से केवल शारीरिक सन्तोष ही पर्याप्त नहीं है बल्कि व्यक्ति को मानसिक तथा आत्मिक भोजन की भी आवश्यकता होती है। इसलिए आन्तरिक विकारों पर अंकुश लगाकर इस शरीर को हृष्ट-पुष्ट रखते हुए तथा शरीर और आत्मा का समन्वय बनाए रखते हुए जीवन को व्यतीत करना हमारा ध्येय होना चाहिए। तन तथा मन दोनों के विकास में ही जीवन की सार्थकता है। शारीरिक सुखों की प्राप्ति तो विभिन्न भौतिक पदार्थों के माध्यम से हो जाती है परन्तु आत्मिक शान्ति केवल प्रभु-नाम सुमिरन से ही प्राप्त हो सकती है।

सिख धर्म में *"किरत करना, नाम जपना तथा वंड छकना"* के मूलभूत सिद्धांत को ही मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक संतुष्टि का साधन माना गया है। यह सिख धर्म के "त्रिरत्न" हैं। किरत करना अर्थात कार्य करना सृष्टि का एक आवश्यक नियम है जिसके बिना मनुष्य के जीवन का निर्वाह तथा विकास नहीं हो सकता। कार्य करना व्यक्ति के व्यवहारिक तथा आर्थिक जीवन को सम्भव बनाने के लिए ही होना चाहिए न कि माया-मोह के साधनों को अनावश्यक रूप से एकत्रित करने के लिए, जो कि समस्त बुराइयों की जड़ है। इसके साथ ही यह शिक्षा भी दी गयी है कि व्यवहारिक तथा आर्थिक जीवन को सम्भव बनाने के लिए किए जाने वाले कार्य भी उचित होने चाहिएं अर्थात जीविकोपार्जन के लिए उचित मार्ग तथा साधन को ही अपनाना चाहिए।

किरत करने के साथ-साथ "नाम जपने" अर्थात प्रभु-सुमिरन को अत्यधिक महत्व दिया गया है क्योंकि यह वह क्रिया है जो भवसागर से पार लगा सकती है। मनुष्य जन्म को श्रेष्ठ मानते हुए इसका लाभ उठाकर परम पद की प्राप्ति के लिए प्रयास करने का संदेश गुरबाणी में दिया गया है। गुरमति में गृहस्थ जीवन का त्याग करके प्रभु-नाम-सुमिरन की मान्यता नहीं है बल्कि गृहस्थ धर्म के साथ ही परम-पद की प्राप्ति का विधान है:

अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥ (पन्ना २८१)

जो व्यक्ति प्रभु-नाम का आसरा लेते हैं उनके समस्त दुखों-क्लेशों, तृष्णाओं का नाश होता है:

सरब रोग का अउखदु नामु ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ (पन्ना २७४)

किरत करने तथा नाम जपने के साथ "वंड छकने" अर्थात बांट कर खाने की भी विशेष महानता है जिसका अर्थ है समस्त प्राणियों को समान दृष्टि से देखना तथा अपनी कमाई का कुछ (दसवां) भाग लोक-कल्याण हेतु देना जिससे वृद्ध, रोगी, असहाय तथा जरूरतमंद व्यक्तियों का जीवन-यापन सम्भव हो सके तथा उनकी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

*Head of Philosophy Deptt., Navyug Girls Post-Graduate College, Rajender Nagar, Lucknow.

जो मनुष्य अपना सब कुछ परमात्मा को अर्पित कर देता है वह सांसारिक बुराइयों तथा कठिनाइयों से मुक्त रहता है। भौतिक सुखों को प्रभु की कृपा समझ कर यदि उसका कुछ भाग अन्य जरूरतमंद प्राणियों में वितरित करने की प्रवृत्ति मनुष्य अपना ले तो वह मानसिक सुखों की प्राप्ति कर सकता है। जो प्राणी इन मूलभूत सिद्धांतों अर्थात त्रिरत्नों को अपनाने का प्रयास करता है वह प्रभु-कृपा का पात्र बनता है। प्रभु-कृपा तो हर समय प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध रहती है परन्तु भाग्यवान ही उसको प्राप्त कर पाते हैं। जो मनुष्य कच्चे घड़े की भांति ही रह जाते हैं या पकने के पश्चात भी अपने मुख को प्रभु-कृपा की दिशा में खुला नहीं रख पाते, वे सदा भटकते रहते हैं तथा प्रभु-कृपा से वंचित रह जाते हैं।

सिख धर्म-चिन्तन में प्रभु की उपासना के लिए संसार या गृहस्थ जीवन को त्यागने को मान्यता प्राप्त नहीं है, बल्कि संसार में विचरण करते हुए आंतरिक रूप से परमात्मा के साथ जुड़ने की शिक्षा दी गयी है। आवश्यकतानुसार सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करते हुए सांसारिक बुराइयों से अलग रहकर प्रभु-सुमिरन तथा प्राणी मात्र की सेवा में लिप्त रह कर *"अंजन माहि निरंजनि"* की अवस्था प्राप्त करना ही एक सच्चे गुरसिख का धर्म है।

मानव जीवन को प्राप्त करके जो भी व्यक्ति *"गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ"* के सुहाने समय को अकारण गंवाता है वह इस लोक तथा परलोक दोनों में कष्ट पाता है। मनुष्य के दुखों का मुख्य कारण उसका परमात्मा को भूल कर केवल भौतिक सुखों में लीन रहना है। इसलिए उचित यही है कि संसार में रहते हुए सांसारिक पदार्थों का संयम सहित आवश्यकतानुसार सेवन करते हुए उसमें लिप्त न हुआ जाए तथा संसार का त्याग करने के स्थान पर काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार जैसी बुराइयों का त्याग करने का प्रयास किया जाए जिससे वास्तविक सुख तथा शान्ति की प्राप्ति हो सके। 

कविता

कैसा-कैसा झुकना ?

सार्थक लगता है झुकना,
जब बड़ों का पैर छूना हो,
बूढ़े बाबा को करवट दिलाना हो,
असाध्य का बिस्तर बदलना हो,
आराध्य को प्रणाम करना हो।
सार्थक लगता है झुकना,
सामने गुरुद्वारा हो,
रोते बच्चे को गोद में उठाना हो,
लहराते खेतों से घास निकालना हो,
सुनहरे गेहूं की बलियां काटना हो।
परंतु निरर्थक लगता है झुकना,
मदिरापान तंबाकूनोशी के लिए,
स्वयं की मदहोशी के लिए,
भिखारी बना देता है भले-चंगे को।
'मुझे धुआं चाहिये, धुआं चाहिये,
जिस्म को जलाने के लिये,
बीमारियों को बुलाने के लिये,
नशा चाहिये अच्छे-भले चेहरे पर
कालिख जमाने के लिये।'
निरर्थक है,
नशे के अंधेरे कारागार में बंद हो जाना,
धुएं की रस्सी से बंध जाना।
आओ! काटें सभी नशों के बंधन,
छकें सादा भोजन, संभालें नाम-धन! 

-डॉ. श्रीमती शैल वर्मा, सागर सदन, पुलिस चौकी के पीछे, गांधी नगर, बस्ती-२७२००१ (उ. प्र.)

गुरमति मार्ग और किरत

*-डॉ. रछपाल सिंह**

श्री गुरु नानक देव जी विश्व के पहले धार्मिक आगू हैं, जिन्होंने सामाजिक निर्माण के लिए हाथों से किरत करने को भी आध्यात्मिक शिक्षा का अंग बनाया। धर्म की किरत द्वारा, सच के प्रकाश में, आचरण की शुद्धता और सतिगुरु की अगुआई में ऐसा रास्ता बताया जिस पर चल कर मनुष्य समाज का लाभांश अंग बन कर, मानवता की भलाई के लिए सदा तत्पर रहता है। गुरमति मार्ग के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने "जगत कल्याण" के लिए "सच" को अपनी बाणी का धुरा बना कर अपने विश्वव्यापी मत का आरंभ किया। गुरु जी के अनुसार "सच" के साथ-साथ "सच" पर आधारित सदाचारक जीवन भी आवश्यक है:

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)

इस प्रकार "सच" अथवा "नाम" और ऊंचे आचरण वाला जीवन ही गुरसिखी का मील- पत्थर है। इसको दूसरे शब्दों में "किरत करना, नाम जपना और वंड छकना" भी कहा गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने हाथों से किरत करने की महानता हेतु, ऐसे धार्मिक आगुओं पर गहरा व्यंग्य कस कर निरोल सच को सामने प्रकट किया है। गुरु जी ने योगियों, मौलानों, तपस्वियों, मोनियों, पंडितों आदि किसी के साथ पक्षपात नहीं किया। गुरु साहिब का कथन है कि भूखे मुल्लां चढ़ावे की खातिर अपने घर को ही मस्जिद बना लेते हैं, बेकार लोग योगी बन कर, कान फड़वा कर, कानों में मुंदरें डाले फिरते हैं। ऐसे नकली आगुओं के कभी पांव नहीं लगना चाहिए, जो केवल मात्र रोटियों की खातिर ताल पूरते फिरते हैं। प्रभु-प्राप्ति के लिए वास्तविक साधना-मार्ग में तो अपने घर-गृहस्थ में रहकर, हाथों से ईमानदारी की किरत करते हुए, प्रभु के हुक्म में रहना है। ऐसा मनुष्य ही अकाल पुरख के मार्ग का वास्तविक पथिक है:

गिआन विहूणा गावै गीत ॥
भुखे मुलां घरे मसीति ॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

"परथाए साखी महापुरख बोलदे साझी सगल जहानै" के महान कथन अनुसार यह उपदेश गुरु जी ने किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं दिया, उन्होंने तो यह समूची मानवता के लिए दिया है। यह जीवन-मार्ग दुनियावी होता हुआ भी सांसारिक वाशनाओं से निर्लेप है। जैसे कमल का फूल पानी में रहता हुआ भी पानी में भीगता नहीं अर्थात वो पानी में डूबता नहीं इसी प्रकार यह जीवन-जाच अथवा सकुशल जीवन-ढंग मनुष्य के मन के अनुशासन और वशीकरण का जीवन है। भाई गुरदास जी ने

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

भी किरत करने की विशेष रूप से सराहना की है:

—हथीं किरति कमांवदा पगि चलै सुजाणा।
(वार २:१८)
—घालि खाइ गुरसिख मिलि खाणा ॥ (वार ३२:१)
—किरति विरति करि धरम दी खटि खवालणु कारि करेही। (वार १:३)

किरत करना आदर्श गुण है। जो मनुष्य अपने हाथों से किरत नहीं करते, दूसरे घरों से मांग-मांग कर खाते हैं, उनको लज्जा आनी चाहिए:

जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥
घरि घरि मागत लाज न लागै ॥ (पन्ना ९०३)

नाजायज अथवा बेईमानी से की गई कमाई (धन) गुरमति में स्वीकृत नहीं है। बेगाना हक खाना तथा दूसरों की मेहनत से एकत्र की गई कमाई, मनुष्य का खून पीने के समान है:

—सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥
(पन्ना १२४३)
—जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ (पन्ना १४०)

धर्म का अर्थ ही अच्छा जीवन-ढंग है। निकम्मे, गैर-किरती के लिए गुरमति में कोई स्थान नहीं। उद्यम, किरत और प्रभु-सुमिरन ही सफल जीवन-जाच है।

साखी आती है कि श्री आनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को प्यास लगी। उन्होंने जल लाने का आदेश किया। भरे दरबार से एक सिख कहलवाने वाला (नौजवान) उठा और जल्द से पानी का गिलास ले आया। पानी का गिलास पकड़ने से पहले गुरु जी ने उसके कोमल हाथों की ओर देखा और पूछा, "तू क्या काम करता है?" उसने उत्तर दिया, "जी! काम करने की कोई जरूरत ही नहीं है। अपने घर में नौकर-चाकर बहुत हैं वो ही काम किए जाते हैं।" गुरु जी ने सिखों को किरत का महत्व दृढ़ कराने के लिए वह जल स्वीकार न किया। सिख ने कहा, "गुरु जी! मैं तो बहुत प्रेम से आप जी के लिए पानी लेकर आया था।" गुरु जी ने जो उत्तर दिया वह भाई संतोख सिंघ जी के शब्दों में इस प्रकार है:

सुनि सिक्खा गुरमति इह सार।
सतिसंगत की सेव उदार ॥ . . . १२॥
जिम मुर्दे के अंग अपावन।
सुकचति सभि नहिं करहिं छुवावन ॥ . . . १५॥
(गुर प्र: सू: ग्रंथ, रुत ४, अंसू ७, पृ. ५२३६)

अर्थात जो मनुष्य हाथों से कोई काम नहीं करते, गुरबाणी नहीं पढ़ते, नाम नहीं जपते, सेवा नहीं करते, परोपकार नहीं करते वे मुर्दे के समान हैं। गुरु का सच्चा सिख वो है जो अपनी किरत-कमाई से अगर कुछ बचे तो बांट कर छकता है उसे आए-गए की सेवा में लगाता है:

सिख संतन दिज अतिथन केरी।
करिबे लाग्यो सेव घनेरी ॥१७॥ . . .
नित प्रति सेवा महिं सिख राता
अपनो भला करनि तिन जाता ॥१८॥
(वही, पृ. ५२३६)

दुनिया में ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो छल, कपट, धोखे से बेगाना हक इकट्ठा करने में बहुत 'परिश्रम' करते हैं। वे दिन-रात इसी चक्र में लगे रहते हैं। हम सब को यह स्पष्ट होना चाहिए कि हेराफेरी से एकत्र की गई कमाई गुरमति के दायरे में नहीं आती। ऐसी कमाई गुरमति में कभी भी स्वीकृत नहीं है। गुरमति में मलिक भागो जैसी कमाई को कोई भी

स्थान नहीं, भाई लालो जैसी सच्ची किरत ही प्रवान है।

गुरमति मार्ग के बाणीकारों ने अपने हाथों से किरत की। श्री गुरु नानक देव जी ने खुद हल चलाया, भक्त कबीर जी ने सूत की तानिएं तनीं :

हम घरि सूतु तनहि नित ताना . . . ॥

(पन्ना ४८२)

भक्त रविदास जी ने जोड़े गांठने की किरत की :

पाण्हा गंढै राह विचि कुला धरम ढोइ ढोर समेटा। (भाई गुरदास जी, वार १०:१७)

भक्त नामदेव जी भी कपड़ों पर छापे लगाने की किरत करते थे:

नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥
काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु ॥

(पन्ना १३७५)

जो मनुष्य किरत करने के साथ-साथ, प्रभु-सुमिरन, सेवा, परोपकार आदि में जीवन व्यतित करते हैं वे अपनी कमाई सफल कर जाते हैं, उनको लोक-परलोक में सम्मान एवं यश मिलता है:

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥

(पन्ना ८)



कविता

गुरदेव के लाल

गुरदेव जी के दोनों लाल, अजीत सिंघ, सिंघ जुझार जी।
कुरबानी उनकी अजीमो अजीम, तन मन जाऊं बलिहार जी।
मुगल फ़ौज लाखों हज़ार की, डेरा चमकौर गुरदेव डाला था।
कच्ची हवेली गढ़ी बन गई, फैला नूरोनूर उजाला था।
गुरदेव के शेर मानते न हार जी।
सुबह से जंग शुरू हुई, सूरे सिंघ मैदान में आने लगे।
सजे शस्त्र-वस्त्र अजीत सिंघ, आज्ञा गुरदेव पिता से पाने लगे।
पड़ती बिजली चलती तलवार जी।
कोमल फूल जुझार सिंघ रणबांकुरा, हाथ तलवार जैकारे ऊंचे बुलाए।
परम पिता का थापना लेकर, कच्ची गढ़ी से बाहर आए।
नन्हीं जान करती दुश्मनों पे वार जी।
सारा दिन जंग चला भयावह, मुगलों को मिला और न छोर जी।
जरनैल करनैल हुए परेशान सभी, जंग जीतने की टूट जाती डोर जी।
वीरगति पा सिंघ होते रोशनार जी।



-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तन वाली सड़क, शाला पुराना, ज़िला गुरदासपुर।

नानक चिंता मति करहु

*-स. जसपाल सिंघ**

आज के समय में मनुष्य या तो भूतकाल की बातों को याद कर जीवन बिता रहा है या फिर अपने भविष्य को संवारने की योजनायें बनाने में।

मनुष्य चाहता है कि मेरा बीता हुआ समय जैसा बीत चुका है, मेरा आने वाला समय उससे अच्छा बीते। मेरे बीते हुए कल से बहुत अच्छा समय आगे व्यतीत हो, मनुष्य इसी में जी रहा है। उसे चिंता है आने वाले समय की, अपने भविष्य को संवारने एवं अपनी आने वाली पीढ़ी की, जो कि अभी पैदा भी नहीं हुई। मनुष्य उसकी चिंताओं को मन में बैठाकर अपने वर्तमान को भूल ही गया। अपने इस जीने के ढंग के कारण मनुष्य ने अपने वर्तमान को सोचों-विचारों में बिताकर अपने इस सुंदर मानस जीवन को नरक बना लिया है अर्थात चिंताओं का एक अथाह समुद्र अपने हृदय में बना लिया है। गुरबाणी में स्पष्ट शब्दों में समझाया है:

नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥
(पन्ना ९५५)

पर मनुष्य को अकाल पुरख सतिगुरु पर जैसे भरोसा ही नहीं रहा। उसकी सोच केवल यहीं तक सीमित रह गयी है कि जो कुछ भी हो रहा है वह सब मेरी वजह से हो रहा है, जो भी धन कमाया है वो मैंने ही कमाया है या जो भी आगे करूंगा या होगा वो मैं ही करूंगा, मेरी वजह से ही होगा। जो परिवार है, कुटुम्ब है, रिश्तेहार-मित्र हैं, सब मेरी बदौलत ही हैं। जो भी कारज हो रहा है, सब मेरे कारण ही है।

इसी सब में मनुष्य अपने अमूल्य समय को भविष्य की योजनायें बनाने में बिता रहा है। उसे हमेशा इसी बात की चिंता सताती है कि मेरा आने वाला कल सुखदायी, फलदायी, आनंदमयी कैसे बीते, इसी को सोच-सोच कर अपने वर्तमान भाव अपने इस मानस जीवन को रोगी-सोगी बनाकर चिंता से ग्रसित होकर अपने को बीमार कर लेता है और वर्तमान में जीना भूलकर अपने अमूल्य जीवन को नरक के समान दुखी बना लेता है। यह भूल ही जाता है कि यह अमूल्य मनुष्य जीवन किसलिये प्राप्त हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी महाराज फरमान करते हैं:

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ (पन्ना १२)

जिस मानव जीवन की तूने कीमत नहीं जानी वो तो अमूल्य है। तेरे पिछले किये गये अच्छे कर्मों की वजह से परमात्मा ने कृपा करके तुझे यह मनुष्य जीवन दिया कि तू अपने आप को पहचान! अपनी पहचान करके, वर्तमान में जीना सीख! जिस रोजी-रोटी की चिंता में तू अपने बीते हुये समय को तो खो ही चुका है, अब भविष्य की तूने चिंता भी पाल रखी है, इसी में तू अपने जीवन जीने का ढंग ही भूल

*c/o Bharti Sales Corporation, Gandhi Nagar, Mahoba-210427. Mob : 093362-35600

गया! तुझे पता ही नहीं कि तू कौन है, तेरा क्या परिचय है, तेरी क्या पहचान है! क्या तेरे द्वारा रख लिये गये शुभ नाम से ही तेरा परिचय है? तेरा नाम लोग कब तक जानेंगे? सतिगुरु जी बाणी में फरमान करते हैं:

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

तुझे तो लोग तब तक नाम से जानेंगे जब तक तेरे शरीर में प्राण हैं। यह शरीर मिट्टी, पानी, हवा, आकाश और अग्नि से बना है। जिस समय इस नाशवान शरीर में से प्राण निकले यह शरीर फिर मिट्टी हो जायेगा और वही सभी लोग तेरे रिश्तेदार, कुटुम्ब वाले, जिनके लिए तूने अपने वर्तमान को गंवा दिया, वे तेरा साथ नहीं देंगे। तेरा शरीर राख के ढेर में बदल जायेगा।

हे मनुष्य! तूने कभी सोचा कि तू अपना सारा जीवन चिंताओं में क्यों बिता रहा है? चिंता ही एक ऐसी बीमारी है जो हमारे शरीर को खा जाती है। हम अपने आप को बीमारियां लगा लेते हैं और अपना धन जो कि परमात्मा ने कृपा करके बख़्शा था, वह सारा अपने इलाज में दवाइयों पर खर्च कर देते हैं। तूने कभी यह जानने की कोशिश की कि यह मनुष्य जीवन किसलिये मिला है? तू अपने मूल को पहचान! जिस तरह से एक मछली जिसका जीवन पानी है, पानी में से निकाल देने पर वह तड़प-तड़प कर अपने प्राण त्याग देती है और यहां तक कि जो भी उसका सेवन करता है उसे खूब प्यास भी लगती है। जब तक उसका वजूद कायम रहता है वह खूब प्यास लगाती है। इस घटना को तू कोई छोटी सी घटना मत समझ! तू इससे सीख ले! यह तेरे लिये उदाहरण है।

तू भी परमात्मा से इतना प्यार कर, अपने ईष्ट से, अपने जन्मदाता प्रभु से लिव जोड़। उसकी याद के बगैर तेरा एक पल भी न बीते! ऐसा महसूस होने लगे कि ऐ अकाल पुरख वाहिगुरु! मेरे जीवन में ऐसा कोई पल न आये जब मैं तेरी याद को अपने मन से भुला पाऊँ! तेरी याद के बगैर जीने से पहले ही मुझे मौत दे देना!

जिस परमात्मा के सुमिरन के बगैर जो समय तू बिताता है सच तो यह है कि जीवन शरीर के पटल पर तो तू जी रहा होता है पर मरे हुये के समान। संसार में तू शरीर करके तो विचर रहा होता है पर सच तो यह है कि आत्मिक रूप से तू जी नहीं रहा होता क्योंकि आत्मा की खुराक है प्रभु का सुमिरन, प्रभु की बंदगी, सतसंगत, पर यह सब तू उसको दे नहीं पा रहा है। तू जो अपनी आत्मा को उपरोक्त खुराक नहीं दे पा रहा है उसका कारण भी यही है कि तू वर्तमान में न जीकर चिंताओं में जी रहा है। जिस तरह से पेट को भूख लगने पर तू भोजन ग्रहण करता है उसी तरह तू यह लक्ष्य बना कि अपनी आत्मा को भी भजन-बंदगी, सतसंग, कीर्तन तथा सुमिरन रूपी खुराक दे। तभी प्रभु परमात्मा खुश होंगे। जिसकी कृपा से तुझे अनेकों प्रकार के व्यंजन, स्वाद वाले भोजन प्राप्त हो रहे हैं उस प्रभु को अपने मन में बसा! जिसकी कृपा से सुंदर देही, सुंदर महल, अनेकों सुख, अनेकों रंग-तमाशों का लुत्फ प्राप्त कर रहा है, उसके शुक्राने में जीना सीख! जहां तू अभी केवल प्रभु से दुनियावी वस्तुएं मांगता है वहीं तेरी मांग में 'नाम' भी शामिल हो जाए, 'सतसंग' शामिल हो जाये तथा सुमिरन तेरी मांग हो जाये! गुरबाणी में फरमान है:

नानक की अरदासि सुणीजै ॥
केवल नामु रिदे महि दीजै ॥ (पन्ना ३८९)

प्रभु की याद के बगैर बिताया समय ही नरक के समान है और प्रभु की याद में,

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

बहू-बेटी में अंतर कैसा?

*-स. सुरजीत सिंघ**

अक्सर परिवारों में सुना जाता है कि बहू-बेटी में कोई अंतर नहीं होता है किन्तु कथनी में यह कहना जितना लुभावना है करनी में उतना ही वास्तविकता से दूर है। अपनी बेटी के प्रति मां-बाप का दृष्टिकोण उदार एवं विनम्र होता है जो स्वाभाविक भी है किन्तु वही मां-बाप जब सास-ससुर के रूप में होते हैं तो बिना सोचे-समझे बहू के प्रति उनका वही उदार एवं विनम्र दृष्टिकोण ही संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण और उग्र होने लग जाता है। हर माता-पिता अपनी बेटी का लालन-पालन आधुनिक परिवेश में समस्त सुख-सुविधा से स्वतंत्रतापूर्वक करना चाहता है किन्तु सास-ससुर बनते ही वही माता-पिता पारिवारिक परम्परा एवं लोक-लज्जा की दुहाई देकर बहू के हर क्रिया-कलाप, रहन-सहन एवं पहनावे पर बंदिश लगाना ही उचित समझते हैं।

बेटी की शादी के बाद हर माता-पिता की चाहत होती है कि मायके की हर छोटी-बड़ी खुशी, उत्सव एवं त्यौहार में उनकी बेटी पूर्वानुसार ही सदैव शामिल होती रहे किन्तु इसके विपरीत बहू के मायके आने-जाने को शंका की दृष्टि से लेकर उसकी ससुराल द्वारा ताने भी मारे जाते हैं और कहीं-कहीं रोक भी दिया जाता है। ऐसा क्यों सोचा जाता है? आखिरकार बहू भी तो किसी की बेटी ही तो है। क्या उसकी इच्छा मायके आने-जाने एवं सुविधानुसार जीने की नहीं होगी? फिर यह अंतर क्यों?

बेटी के लिए हर खुशी, सुख-सुविधा उपलब्ध करवाने वाला दामाद पाकर तो माता-पिता खुशी से फूले नहीं समाते और दामाद का बहुत मान-सम्मान करने लग जाते हैं, किन्तु ठीक इसके विपरीत यही व्यवहार यदि उनका बेटा उनकी बहू अर्थात अपनी पत्नी से करता है तो उसको गलत माना जाता है और अपमानित कर यहां तक कहने से भी संकोच नहीं किया जाता कि यह तो "जोरू का गुलाम" बन गया है। आखिरकार यह अंतर क्यों?

देखने में अक्सर आता है जब बेटी और बहू दोनों ही मां बनने वाली होती हैं तो बेटी को प्राथमिकता प्रदान करते हुए मायके बुलाकर उसके खान-पान, स्वास्थ्य एवं आराम तक का पूरा-पूरा ध्यान स्वयं मां अपने स्तर पर रखती है, वहीं बहू के मामले में सास निरंतर लापरवाह बनी रहती है। चिकित्सक यदि किसी कारणवश बेटी को बेड-रेस्ट का परामर्श देता है तो आवश्यक मानकर पूर्णरूपेण पालन किया जाता है। वहीं दूसरी ओर बहू के लिए तो यही परामर्श चिकित्सकों के चोंचले कहकर टालने की कोशिश ही की जाती है। आखिरकार बहू-बेटी में यह विशाल अंतर क्यों?

बेटी की बड़ी से बड़ी गलती अथवा भूल को नज़रअंदाज कर दिया जाता है यद्यपि बहू को उसकी छोटी से छोटी गलती अथवा भूल के लिए प्रताड़ित किया जाता है और कहीं-कहीं तो उसके मायके तक को भी अपमानित करने में संकोच नहीं किया जाता। आश्चर्य है कि सब कुछ जानते हुए भी हम जान-बूझकर आंखों पर

*५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)

काली पट्टी बांधे बहू को बेटी के रूप में देखना ही नहीं चाहते, कानों में रूई डाल बहू की बेटी के रूप में करुणामयी पुकार सुनना ही नहीं चाहते, अपनी जीभा से बहू को बेटी के रूप में मधुर और मीठे बोल बोलना ही नहीं चाहते और इतना ही नहीं बहू को तो बेटी के रूप में आशीर्वाद देने में भी हमारे हाथ संकोच करते हैं। नि:संदेह हम अपनी पुरानी विरासत एवं सुसंस्कृति को तिलांजलि दे गरत की ओर बढ़ रहे हैं। इस प्रकार बहू को बेटी का दर्जा न देकर उसके साथ अन्याय किया जा रहा है।

भूल करना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है किन्तु भूल-सुधार भी तो मानवता का परिचायक है। निज-सुधार ही सर्वोच्य सुधार है और आत्म-नियंत्रण ही सर्वाधिक प्रभावी नियंत्रण है। नैतिक मूल्यों का निरंतर ह्रास ही सामाजिक जीवन को दूषित कर रहा है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण बेटी और बहू में अंतर करना है। हम अपनी बेटी की शादी के समय तो सब कुछ भूल जाते हैं जबकि बेटे की शादी के लिए बहू के बारे में हमारी धारणा ही उलट हो जाती है। हम सोचते हैं कि बहू ऐसी चाहिये जो चांद के टुकड़े के समान सुंदर हो, बहुत अधिक पढ़ी-लिखी एवं गुणवान हो और धनी परिवार से हो जहां से दहेज के रूप में खूब मिले। भले ही पढ़ी-लिखी गुणवान बहू की इच्छा रखना अपने आप में कोई बुरी बात नहीं लेकिन प्रश्न तो यह है कि परिस्थितिवश यदि कम पढ़ी-लिखी बहू मिल जाए तो उसको स्वाभाविक रूप में हम स्वीकार क्यों नहीं कर पाते हैं? आज के युग में हम उसे शादी के बाद और विद्या लेने के लिए भी समय व साधन जुटा सकते हैं। जिस गुण का बहू में अभाव या कमी महसूस हो उस अभाव या कमी को हम स्वयं पूरी करने के लिए क्यों नहीं प्रयास कर सकते जैसे हम अपनी बेटी के बारे में करते हैं? इस प्रकार की दोहरी सोच एवं मानसिकता पर बहुत ही अधिक एवं दुख होता है। क्या यही हमारी नैतिकता रह गई है?

यह विडम्बना ही है कि बहू से समस्त मान-सम्मान, आदर्श-मर्यादा की आशा रखने वाला हमारा समाज उसे बेटी-सा स्नेह देने में तो असमर्थ है किन्तु उसका तिरस्कार करने में भी पीछे नहीं है, क्योंकि वह भूलता जा रहा है कि बहू और बेटी एक समान हैं। यदि यह दृढ़तापूर्वक मान लिया जाए कि हमारी बहू भी किसी परिवार की बेटी ही तो है जिस प्रकार हमारी बेटी किसी परिवार की बहू है, तो कोई पारिवारिक समस्या ही शेष नहीं रहेगी अपितु सर्वत्र सुखमय जीवन हो जाएगा।



आवश्यक सूचना

पाठकगण बंधुओं से निवेदन है कि वे अपना चंदा समाप्त होने की अवधि से पूर्व ही दोबारा चंदा भेज दिया करें ताकि आपकी अपनी मनपसंद पत्रिका 'गुरमति ज्ञान' बिना किसी ब्रेक के आपको मिलती रहे। चंदा समाप्त होने की अवधि पत्रिका के रैप पर लिखित आपके पते के साथ दी जाती है।

'गुरमति ज्ञान' के आजीवन सदस्य बनिए तथा बार-बार चंदा भेजने के झंझट से छुटकारा पाइए। आजीवन सदस्यता के लिए चंदा मात्र १००/- रुपए है।

विकास में बाधक जात-पात प्रणाली

*-श्रीमती प्रतिभा शर्मा, श्री खुशी राम शर्मा**

जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो इतिहास के विषय में एक प्रश्न पूछा जाता था कि जात-पात के क्या लाभ हैं और क्या हानियां हैं? कुछ समय हम लाभों की एक लंबी-चौड़ी सूची उत्तर-पुस्तिका में उत्तर रूप में देते थे। हो सकता है कि जात-पात की व्यवस्था के शुरू के दिनों में कोई लाभ रहे हों परंतु आज जब मैं इसके बारे में सोचता हूं तो महसूस करता हूं कि जात-पात व्यवस्था का लाभ तो एक भी नहीं हैं परंतु हानियां बेशुमार हैं। जात-पात ने हमारे समाज को खंडित कर दिया है। समाज की एकसुरता और उसमें सहभाव तथा सहहोंद की भावना को पूर्ण रूप से तहस-नहस कर दिया है। यह एक अमानवीय सोच है परमात्मा के रूप को नकारने के बराबर। जब हम यह मानते हैं कि सभी लोग परम पिता परमात्मा की संतान हैं तो उनमें जाति के आधार पर ऊंच-नीच क्यों? यह मानवता से गिरी हुई बात है कि हम किसी दलित से इसीलिए नफरत करें या उस पर सामाजिक अत्याचार करें कि वो एक दलित परिवार में पैदा हुआ है।

इस समस्या के साथ जुड़ी हुई एक और समस्या छुआ-छूत की है। शूद्र को हम इंसान न समझें, उसकी परछाई से भी दूर रहें और उसको नीच समझें, यह कहां का न्याय है? शूद्रों पर जो अत्याचार हुए हैं उनकी कहानियों के वृत्तांतों से भारत का इतिहास भरा पड़ा है। यह समझ में नहीं आता कि हम अछूत को एक इंसान क्यों नहीं समझते? क्यों उसको जानवर के समान समझते हैं? न तो उनके पास कोई सम्पत्ति के अधिकार हैं और न ही शिक्षा-प्राप्ति के, जिसका नतीजा यह हुआ कि वे आर्थिक जीवन में बहुत ही निचले स्तर पर रहें। अछूतों को किसी प्रकार का धार्मिक अधिकार भी नहीं रहा था। मंदिरों में जाने और पूजा करने की उनको कोई आज्ञा नहीं थी। अगर कोई भूला-भटका मंदिर में चला भी जाता था तो उसको परिताड़ित किया जाता था। उस पर ऐसे-ऐसे अत्याचार किये जाते थे जिनको जानकर हमारे रौंगटे खड़े हो जाएं। जात-पात के भेद-भाव में ऐसी स्थिति हमारे देश में आज भी कई रूपों में विद्यमान है।

कोई बीस वर्ष पुरानी बात है, मैं अलीगढ़ में आंखों के इलाज के लिए गया। अस्पताल में मेरे कमरे के बगल वाले कमरे में एक ब्राह्मण मरीज था। एक दिन मैंने सफाई सेवक से कुछ खाने की वस्तुएं मंगवा लीं तो उस मरीज ने मुझे कहा, "यह तो अछूत है, तुमने इससे खाने की चीजें क्यों मंगवाईं ?" मैंने उसको कहा कि क्या तुम्हारे कार्यालय में तुम्हारे साथ कथित दलित जाति के लोग काम नहीं करते? उसने कहा, "हां करते हैं। मेरा बॉस भी कथित दलित जाति से है परंतु हमारा उसके साथ खाना-पीना थोड़े है! हमारे लिए अलग रखा गया है और उसके लिए अलग।" मैं सोचने लगा कि इतने बड़े सामाजिक परिवर्तन के पश्चात भी ऐसे लोग

**गुरु नानक मार्केट, जालंधर रोड, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५*

सामंतवादी युग की छुआ-छूत की कुप्रथा से अभी भी चिपके हुए हैं। इसका मुझे बहुत ही दुख हुआ।

वह व्यक्ति बिहार का था। मैं सोचने लगा कि पंजाब में तो ऐसी स्थिति नहीं है। जब मैंने इस अंतर के कारणों का विश्लेषण किया तो मुझे ज्ञान हुआ कि यह सब सिख गुरु साहिबान की महान परंपरा का नतीजा है। श्री गुरु नानक देव जी ने जात-पात और छुआ-छूत के जिस घोर विरोध की नींव रखी थी उस पर सभी गुरु साहिबान ने एक विशाल अनुपम महल का निर्माण कर दिया। सिख धर्म में जात-पात और उस पर आधारित छुआ-छूत को कोई मान्यता प्राप्त नहीं है बल्कि इसको सर्वथा नकार दिया गया है। गुरु साहिबान ने तो सबको अपने गले लगाया:

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ *(पन्ना ६७१)*

श्री गुरु अंगद देव जी का फरमान है:

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना १३३०)

भक्त कबीर जी ने तो यहां तक फरमाया है:

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥
(पन्ना ३२४)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी सभी को गले लगाया है। उनके द्वारा साजे गए पांच प्यारों में से किसी एक का भी संबंध तथाकथित स्वर्ण जाति से नहीं है।

सिख धर्म की परंपरा ही है कि आज पंजाब में जात-पात और छुआ-छूत का वह घिनौना रूप नहीं है जो भारत के अन्य प्रांतों में है। आधुनिक युग में सबको समान राजनैतिक अधिकार मिल गए हैं। हमारे संविधान में सभी लोग बराबर हैं। जात-पात तथा धर्म के आधार पर किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जा सकता या किसी को कोई सजा नहीं दी जा सकती। कानून के कारण हम किसी दलित के साथ बुरा व्यवहार नहीं कर सकते क्योंकि उसके लिए सजा का प्राविधान है परंतु तथाकथित स्वर्ण जाति के लोगों के मन में अभी कुछ पूर्वाग्रह विद्यमान हैं। प्रबल संस्कारों से हमारा मानसिक व्यवहार मुक्त नहीं हो सका। दरअसल जात-पात और छुआ-छूत की भावनाएं अंतरमुखी हो गई हैं। दलितों के प्रति नफरत, वैमनस्य और घृणा के भाव हमारी मानसिकता में बहुत गहरे बैठे हुए हैं। इन भावों के प्रति कोई प्रतिक्रम प्रकट करें या ना करें परंतु वे इन्हें महसूस अवश्य करते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि उनके मन में तथाकथित स्वर्ण जाति के लोगों के प्रति आक्रोष बना रहता है। उनका व्यवहार प्राकृतिक नहीं रह जाता जो उनके लिए और समस्त समाज के लिए हानिकारक है और सामाजिक विघटन का कारण बनता है।

जरूरत इस बात की है कि तथाकथित स्वर्ण जाति के लोगों को अपने संस्कारों में बदलाव लाना चाहिए। मानसिकता और भावात्मकता को अधिक मानवीय रूप देना चाहिए। यही सभी धर्म बतलाते हैं। यदि हमारा विश्वास परमात्मा में है, यदि हमारी परमात्मा में सच्ची आस्था है तो हमें कथित दलितों को मानसिक और भावात्मक रूप से गले लगाना होगा ताकि हमारे समाज में एकसुरता और समरसता के भाव उत्पन्न हों।

जात-पात ने आधुनिक भारत की राजनीति को भी बहुत हानि पहुंचाई है। चुनाव के दिनों

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

गुरुद्वारा श्री नानकबाड़ी साहिब—सिखों का आस्था केंद्र

*-बीबी सुरिंदर कौर**

श्री गुरु नानक देव जी की उदासियों में एक उदासी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भी थी। इसी दौरान श्री नानकमता साहिब (प्राचीन नाम गोरखमता) जाते समय श्री गुरु नानक देव जी ने मुरादाबाद में अपने पावन चरण रखे। ऐसे महपुरुषों का चरण-स्पर्श प्राप्त कर विश्व-विख्यात पीतल नगरी आस्था का भी प्रतीक है। यहां पर श्री गुरु अरजन देव जी के भी पवित्र चरण पड़े हैं। उन्होंने यहां नानकबाड़ी नामक स्थान पर उजड़े गांव को फिर से बसाया था और नि:संतान राजा को संतान का आशीर्वाद दिया था। तभी से इस स्थान को 'नानकबाड़ी' के नाम से जाना जाता है जिसके प्रमाण सरकारी कागजों में भी दर्ज हैं।

माना जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी हरिद्वार से नानकमता जाते समय संवत् १५५४ से १५५६ के बीच काशीपुर से होते हुए मुरादाबाद के रतनपुर कलां गांव आए थे। इसका जिक्र पहली त्वारीख गुरु खालसा में मिलता है। रतनपुर कलां के राजा रतन राय ने गांव के बाहर एक सुंदर बाग बना रखा था, इसमें साधू-संत, पीर-फकीर आकर रुका करते थे। बाग में एक धर्मशाला भी थी। यह धर्मशाला ही बाद में एक गुरुद्वारा साहिब के रूप में परिवर्तित हो गई जो आज भी मौजूद है। लंबे समय तक यहां उदासी संप्रदाय के महंतों की गतिविधियां संचालित होती रहीं। श्री गुरु नानक देव जी इस स्थान पर कई महीनों तक रुके। वे प्रतिदिन गांगन नदी पर स्नान के लिए जाते थे। नदी की दूरी गांव से करीब डेढ़ किलोमीटर थी। इसी रास्ते में एक उजड़ा हुआ गांव पड़ता था। लोगों ने श्री गुरु नानक देव जी को बताया कि यह गांव सात बार बसाया गया पर हर बार उजड़ जाता है। कुछ लोगों का अंधविश्वास था कि यहां भूत-प्रेतों का भी वास है, छतें उड़ जाती हैं तथा दीवारें गिर जाती हैं। लोगों के इस अंधविश्वास को मिटाने के लिए श्री गुरु नानक देव जी इस गांव में लंबे समय तक रुके और उन्होंने अपने सामने घर बनवाए। इस गांव के घरों में लगी ककैंया ईंटें इस बात का प्रमाण हैं। तब से यह गांव 'नानकबड़ी' के नाम से जाना जाने लगा।

कहा जाता है कि राजा रतन राय श्री गुरु नानक देव जी से बहुत प्रभावित था। राजा के कोई संतान नहीं थी। वह हर रोज सेवा के लिए धर्मशाला जाता था। गुरु जी के आशीर्वाद से कुछ समय बाद राजा को पुत्र-प्राप्ति हुई। उसने रियासत में से करीब एक सौ एकड़ जमीन गुरु-घर के नाम कर दी। यह जमीन आज भी सरकारी कागजों में 'नानकशाही गद्दी' के नाम से दर्ज है। रतनपुर कलां का गुरुद्वारा, पाकबड़ा से ढींगरपुर मार्ग पर साढ़े चार किलोमीटर और सड़क से आधा किलोमीटर अंदर बाजार के पास बना हुआ है। इस स्थान को 'बड़ी गद्दी' या 'नानक झूले' के नाम से भी जाना जाता है। यहां खुदाई में कुछ प्रमाण भी मिले हैं। १५ दिसंबर २००२ को गुरुद्वारा साहिब के निर्माण के समय जब खुदाई की गई तो एक चबूतरा निकला जो छोटी ईंटों का बना है।



**मास्टर कॉलोनी, बिलासपुर, जिला रामपुर, (यू. पी.), फोन: ०९४११२८८३३३*

गुरबाणी राग परिचय-९

राग गूजरी—*बिनु नावै पूज न होइ*

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग 'गूजरी' में रचित बाणी, क्रमांक ५ पर राग आसा के बाद अंकित है। गूजरी एक पुरातन और प्रसिद्ध राग है। यह राग भक्ति-भाव के प्रकटावे के लिए विशेष अनुकूल है। संगीतकारों ने इस राग की प्रकृति करुण मानी है। इस राग के आरोह और अवरोह में ६ स्वरों का प्रयोग होता है। इनमें ऋषभ, गंधार और धैवत (रे, गा, धा) कोमल हैं, मध्यम (म) तीव्र है, षडज और निषद (सा, नी) शुद्ध हैं इसलिए इसे षाडव जाति का माना जाता है। इसका गायन-समय प्रातः काल है।

गूजरी राग में अंकित बाणी का विस्तार मात्र ३८ पृष्ठों में है किन्तु इसमें गुरमति-विचार और चिन्तन की स्पष्ट व्याख्या मिलती है। नाम के द्वारा प्रभु-आराधना *"बिनु नावै पूज न होइ"* तथा एक प्रभु का एकनिष्ठ चिन्तन *"अवरु दूजा किउ सेवीऐ"* इस राग के प्रमुख स्वर हैं। इस राग में अंकित श्री गुरु रामदास जी के शब्द *"मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि"* तथा श्री गुरु अरजन देव जी के शब्द *"मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ"* का चयन नित्तनेम की बाणी 'सोदरु रहरासि' में किया गया है। गुरमति चिन्तन की आधारभूत व्याख्या के संदर्भ में इस राग में श्री गुरु अमरदास जी एवं श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित दो वारें उल्लेखनीय हैं, जिनमें श्लोक और पउड़ी उन्हीं गुरु साहिब से रचित होने के कारण भावों को दीप्तिमान करते हैं। राग गूजरी में श्री गुरु नानक देव जी के दो शब्द एक इकाई के रूप में हैं। दूसरे शब्द में ज्योति स्वरूप प्रभु का वर्णन है। जब प्रभु-कृपा (नदरि) होती है तो सहज ही सतिगुरु के उपदेश (शब्द) से ध्वनि (नाद-सुरति) का संयोग होता है और हृदय में स्थित प्रभु-ज्योति से जागरण होता है। ऐसे प्रभु की आराधना के लिए नाम के द्वारा मन का जूठापन निकालना आवश्यक है। इसका वर्णन प्रथम शब्द में है। प्रायः देवता की पूजा शिला पर चंदन की लकड़ी घिस कर भेंट की जाती है। उसमें सुगन्धित वस्तु मिलाई जाती है। वास्तविक आराधना में मन ही शिला है, प्रभु का नाम चंदन की लकड़ी है तथा शुभ कर्म केसर सुगन्धित वस्तु है। प्रभु के नाम में ध्यान लगाना ही पूजा का वास्तविक मार्ग है:

पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥
(मः १, पन्ना ४८९)

सत्य स्वरूप प्रभु की कृपा-दृष्टि से ही उद्धार होता है। इस निष्कर्ष को श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी ने व्यक्त किया है:

सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥
नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥ (मः १, पन्ना ४८९)

सत्य प्रभु ने सम्पूर्ण जगत को अपने वश में कर रखा है। उसके चोज के विषय में कुछ कह नहीं सकते। जो उसको अच्छा लगता है और जैसे उसकी इच्छा (रजा) होती है, वह वैसा करता है:

सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥
नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥ (मः ३, पन्ना ४९२)

**सी-१२७, श्री गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-१६*

जग को जीवन देने वाला प्रभु सब आनंद का स्रोत है, अतः प्रभु का ध्यान कर आनंद प्राप्त करना चाहिए। सभी प्राणी उसी दातार प्रभु पर निर्भर हैं। उससे सतिगुरु की कृपा से मिलन होता है:

आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥
तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥ *(मः ४, पन्ना ४९४)*

राग गूजरी में श्री गुरु अरजन देव जी के ३२ शब्द हैं जिनका आरंभ सतसंग-महिमा से होता है। हे मन! तू किसी कार्य को करके स्वयं को 'कर्त्ता' क्यों समझता है जबकि हरि स्वयं तेरा पालन कर रहा है? उस पालनहार की महिमा विचित्र है। वह पत्थर के अंदर जीव उत्पन्न कर उनको आहार पहुंचा देता है। ठाकुर प्रत्येक प्राणी के लिए आहार (सम्पदा) की व्यवस्था करता है। ऊडै नाम का पक्षी हजारों कोस दूर तक उड़ान लेता है। उसके नन्हें बच्चों का पालन प्रभु ही करता है। हे स्वामी! तुम्हारी हथेली पर सभी खजाने हैं और अट्ठारह सिद्धियां हैं। हे परात्पर प्रभु! तुम्हारा अन्त नहीं है। मैं तुम पर सैकड़ों बार बलिहार जाता हूं:

सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥ *(मः ५, पन्ना ४९५)*

राग गूजरी में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित पांच असटपदियों में से प्रथम असटपदी पारम्परिक ज्ञान-साधना में लीन शिष्य (सिखवंत) को सम्बोधित है। हे शिष्य, सुनो! मेरे हृदय रूपी आंगन में शाखाओं, फूलों और पत्तों सहित सभी इच्छा पूर्ण करने वाला एक पेड़ (कल्प वृक्ष) है। इस पेड़ की जड़ ऊपर को है, शाखाएं नीचे हैं जिसमें ज्ञान पत्ते हैं। माया का जंजाल छोड़ कर माया की कालिमा से रहित (निरंजन) प्रभु में लिव लगती है। वह प्रभु ज्योति स्वरूप है। हृदय में प्रभु का स्मरण ही जपमाला है। प्रकृति के रक्षक वासुदेव/प्रभु का चिन्तन करना चाहिए। एक प्रभु में लिव लगाने से पुनः जन्म-मरण नहीं होगा।

शरीर रूपी नगर में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के रूप में पांच चोरों का निवास है तथा वे मना करने पर भी हृदय में रखे नाम-धन को चुरा कर भाग जाते हैं। जो नाम-धन को संभाल कर रखते हैं उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है। जो विकारों के रोग के उपचार को जानता है वही गुरु है, वही सिख है, वही वैद है। गुरु की कृपा से निराकार प्रभु के ध्यान से तत्व ज्ञान होता है। तत्व ज्ञान ही वास्तविक जागरण है। गुरु के उपदेश को सुनने व मानने से पुनः गर्भ में नहीं आना पड़ता, वाशनाओं के विष का त्याग होता है तथा नाम-अमृत का रसास्वादन मिलता है:

उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अंम्रितु पीआइआ ॥ *(मः १, पन्ना ५०३)*

राग गूजरी के शब्दों और असटपदियों में हरि-शरण लेकर प्रभु-नाम में रमण के द्वारा अंतर-पूजा का विधान है तथा वारों के अन्तर्गत निराकार प्रभु के प्रति एकनिष्ठ रहने का उपदेश है। निराकार प्रभु जन्म-मरण से रहित है जबकि अन्य सभी रूपाकार वाले नाशवान हैं- *"अवरु दूजा किउ सेवीऐ जंमै तै मरि जाइ ॥"* अन्य देवता के अतिरिक्त आसक्ति का दूसरा विषय माया है। माया के भ्रम में डूबा व्यक्ति चेतना से विहीन होता है-*"दूजै भाइ सुते कबहि न जागहि माइआ मोह पिआर ॥"* श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रचित गूजरी की वार में गुरु और ज्ञान की महिमा को संक्षेप में दिया गया है। मन मस्त हाथी है, गुरु महावत है, ज्ञान का अकुंश है। बिना अंकुश के हाथी बार-

बार भटकता है:

मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥
नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥ (मः ३, पन्ना ५१६)

श्री गुरु अरजन देव जी की द्वारा रचित गूजरी की वार के श्लोकों में सरल ब्रज भाषा और मुलतान क्षेत्र की उप-भाषाओं का प्रयोग हुआ है। पउड़ी चार के साथ संलग्न प्रथम श्लोक राग मारू के आरंभ में अंकित किया गया है:

साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥
नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥
(मः ५, पन्ना ५१८)

हे प्रियतम! मैं अपने विनम्र आचरण से तेरे चरणों की धूल बन जाऊं और तुम्हारी शरण में आकर सर्वत्र तुम्हारा साक्षात दर्शन करूं।

राग गूजरी में पांच भक्तों की बाणी बानगी के रूप में है। भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी तथा भक्त त्रिलोचन जी के दो-दो शब्द हैं। भक्त रविदास जी तथा भक्त जैदेव जी का एक-एक शब्द है। भक्त कबीर जी के दोनों शब्दों में परिहासमय व्यंग्य है कि मानव-जीवन हरि के भजन बिना गंवाने पर पशु के रूप में जन्म हो सकता है, जब बैल रूप में भूसा खाना होगा, कन्धे जुआं रखने से चोट-युक्त होंगे तथा नाक नकेल से फट जाएगी। दूसरे शब्द में भक्त कबीर जी के हरि-नाम में अनुरक्त होने पर सांसारिक सोच की धारक एक मां की चिन्ता व्यक्त की गई है जिसका पुत्र भक्ति मार्ग पर चल रहा होता है।

राग गूजरी का अन्तिम पद भक्त जैयदेव जी द्वारा रचित संस्कृत शैली का सुंदर उदाहरण है। अमृत तत्वमय मनोरम-प्रभु नाम का जाप करो। प्रभु के नाम के जाप से जन्म-मरण, रोग और वृद्धावस्था तीनों के भय से छुटकारा मिल जाता है:

केवल राम नाम मनोरमं ॥
बदि अंम्रित तत मइअं ॥
न दनोति जसमरणेन
जनम जराधि मरण भइअं ॥ (पन्ना ५२६)

जिस व्यक्ति को एकनिष्ठ प्रभु की निःस्वार्थ भक्ति मन, वचन और कर्म से प्राप्त हो जावे उसे योग, यज्ञ, दान तथा तप आदि साधनों की आवश्यकता नहीं होती:

हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥
जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥
(पन्ना ५२६)



नानक चिंता मति करहु

(पृष्ठ ४७ का शेष)

सतसंग में, भजन-कीर्तन करके बिताया समय ही आनंद-अवस्था के समान है, परमगति प्राप्त कर लेने के समान है। असल में मनुष्य ने अपने मन में कुछ गलत धारणाओं को जन्म दे रखा है जैसे कि मौत के बाद मुझे स्वर्ग या नरक मिलेगा। असल में परमात्मा की याद के बगैर बिताया समय नरक के समान ही है। हमारे जीवन जीने का लक्ष्य होना चाहिये प्रभु का सुमिरन, भजन, जप, सतसंग तथा शुभ कर्म, उसी से हमारी सारी व्याधियां, रोग, कलेश, दुख नाश हो जाते हैं। गुरबाणी में पावन वचन हैं:

सरब रोग का अउखदु नामु ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ (पन्ना २७४)

आओ! अपने जीते जी प्रभु-प्राप्ति अपना लक्ष्य बनाएं! लेकिन यह तभी सम्भव है जब हम अपने वर्तमान को संभालें। बीता हुआ समय तो निकल गया, उससे अब कुछ हासिल नहीं होने वाला; भविष्य में जो प्राप्त होना है वो तुझे वर्तमान में बोया हुआ ही प्राप्त होगा, इसलिये वर्तमान में जीना सीख।



गुरबाणी चिंतनधारा-२०

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

अनंगी अनाथे ॥ न्रिसंगी प्रमाथे ॥
नमो भान भाने ॥ न्मो मान माने ॥४६॥

हे मालिक! तुझे नमस्कार है। तेरा कोई खास अंग नहीं, तेरा कोई मालिक नहीं अर्थात् तुझ पर हकूमत चलाने वाला कोई नहीं। तेरा बराबर का कोई संगी-साथी नहीं। तू प्रमाथे अर्थात् सबको नष्ट करने वाला है। हे परमात्मा! तू सूरजों का सूरज है अर्थात् सूर्य तेरी ही रोशनी से रोशन है अर्थात् तेरे दिए प्रकाश से प्रकाशित है। बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग भी तुझे ही पूजते हैं अर्थात् तेरी ही आराधना करते हैं।

नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो भान भाने ॥
नमो गीत गीते ॥ नमो तान ताने ॥४७॥

हे परवरदिगार! तुझे नमस्कार है। तू चांद को चांदनी देने वाला, सूर्य को प्रकाश देने वाला है। तू एक महान गीत है, तू एक महान तान है, दिल को छूने वाला तराना है जो मधुर झंकार से जगत को मंत्र-मुग्ध कर देता है।

गुरु पातशाह ईश्वर के जमाल एवं जमाल रूप का वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि ईश्वर 'जमाल' रूप में चंद्रमा को शीतलता प्रदान कर रहा है तथा 'जलाल' रूप में सूर्य को तेजस्वी प्रकाश प्रदान कर रहा है। हे ईश्वर! तू शांत और प्रचण्ड दोनों ही रूपों का खजाना है। कहीं तू सुंदर गीत, दिलकश तराना है। कहीं तू संगीत रूपी मधुर ध्वनियों से जग को मोह रहा है तो कहीं प्रचण्ड रूप में उन्हें नष्ट भी कर रहा है।

नमो न्रित्त न्रित्ते ॥ नमो नाद नादे ॥
नमो पान पाने ॥ नमो बाद बादे ॥४८॥

हे प्रभु! नमस्कार है तुझे कि तू एक मनमोहक नृत्य है। तेरी आवाज अत्यंत सुरीली है। तेरा सुंदर नृत्य देखकर तथा तेरी मधुर आवाज सुनकर सारा जगत मोहित हो रहा है। तू एक महान नगारची अर्थात् ढोल बजाने वाला है। जैसे ढोल बजाने वाला ढोल पर थाप देकर आस-पास के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। बस, अंतर इतना है कि ढोल बजाने वाले की आवाज थोड़ी दूरी तक ही जाती है पर हे ईश्वर! तेरे ढोल की आवाज तो तीनों लोकों, खंडों-ब्रह्मंडों में जाती है। प्रभु ने तो मानो ढोल बजाकर सारा जगत रूप मेला एकत्र किया हुआ है, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है:

पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥
देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ *(पन्ना ४३३)*

अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥
प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती बिभूते ॥४९॥

हे वाहिगुरु! तुझे नमस्कार है। तेरा विशेष अंग नहीं है। (क्योंकि वह ईश्वर देह रहित है) न ही तेरा कोई विशेष नाम है। सारे ही जीव तेरा ही तो रूप हैं। तू जगत में प्रलय लाने वाला है। तू सबको नष्ट करने वाला है। तू

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४

ही सब जीवों को दातें बख्शने वाला है अर्थात् सब जीवों की रिद्धि-सिद्धि है।

कलंकं बिना ने कलंकी सरूपे ॥
नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ॥५०॥

हे वाहिगुरु! तू विकार आदि दाग से रहित है। तू पवित्र हस्ती है, खालिस स्वरूप है। नमस्कार है तुझे! तू सब राजाओं का राजा है तथा सबसे ऊँची हस्ती है। तू सबसे बड़े स्वरूप वाला है। तेरी हस्ती को बयान करने की किसी में भी समर्थता नहीं है, जैसा कि भक्त कबीर जी का फरमान है:

कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥
बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न जाइ ॥ *(पन्ना १३६८)*

सात समुद्र की स्याही तथा सारी प्रकृति (वनों की लकड़ी) को कलम बना लूं, सारी धरती कागज बन जाए तब भी परमात्मा का यश लिखा नहीं जा सकता। उस गुणों के सागर की महिमा अपरंपार है। गुरदेव परमात्मा के समस्त स्वरूपों को नमस्कार करते हैं।

नमो जोग जोगेस्वरं परम सिद्धे ॥
नमो राज राजेस्वरं परम ब्रिधे ॥५१॥

हे वाहिगुरु! तुझे नमस्कार है कि तू योगियों का योगी अर्थात् योगीराज है। तू सबसे बड़ा सिद्ध है अर्थात् सबसे ऊँची आत्मिक अवस्था वाला सिद्ध पुरुष है। तू राजाओं का राजा तथा सबसे बड़ा हाकिम है अर्थात् तेरी हकूमत सबके ऊपर चलती है। तुझे नमस्कार है। तेरी हस्ती सर्वोत्तम है।

नमो ससत्र पाणे ॥ नमो असत्र माणे ॥
नमो परम गिआता ॥ नमो लोक माता ॥५२॥

हे ईश्वर! तुझे नमस्कार है। तू सभी तरह के हथियार धारण करने वाला है। नमस्कार है तुझे, जिसके कर-कमलों में तलवार आदि हथियार सुसज्जित हैं। दूर से फेंके जाने वाले तीर तथा चक्र आदि शस्त्रों को भी तू धारण करने वाला है। तू सब जीवों के मन की बात (भावों) को भी भली-भांति जानने वाला है अर्थात् तू अंतरयामी है। आम कहावत है—'दिल दरिआ समुंदरों डूंघे कौण दिलां दीआं जाणे!' किसी के मन में क्या चल रहा है कोई नहीं जानता, पर हे परमात्मा! तू तो *'घट घट के अंतर की जानत ॥ भले बुरे की पीर पछानत ॥'* है।

(चौपई पा: १०)

गुरदेव आगे फरमान करते हैं कि हे ईश्वर! तू जगत-माता है क्योंकि जैसे मां बच्चे को प्यार करती है वैसे ही तू जगत के जीवों से प्यार करता है।

अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते ॥
नमो जोग जोगेस्वरं परम जुगते ॥५३॥

हे वाहिगुरु! तेरा कोई विशेष पहरावा नहीं। तू समस्त भ्रमों-भुलेखों से रहित है। तू इन्द्रियों के रसों को भोगने वाला नहीं है। हे योगियों में महान योगी! तुझे नमस्कार है। तू युक्तिवान है।

लोग दुनिया में रसों को भोगते हुए अक्सर स्वयं को कमजोर करते रहते हैं। समय पाकर ये रस ही इन्सान को भोगने लगते हैं। परंतु हे ईश्वर! तू इन रसों में फंस कर स्वयं को क्षीण नहीं करता, तू इन सबसे परे है।

नमो नित्त नाराइणे क्रूर करमे ॥
नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधरमे ॥५४॥

हे प्रभु! तुझे नमस्कार है क्योंकि तू सब

जीवों की रक्षा करने वाला है तथा उन्हें मारने वाला भी, तेरे दोनों ही रूप हैं- रक्षक भी, भक्षक भी। हे परमात्मा! तुझे नमस्कार है। समस्त अच्छी और बुरी रूहें तेरा ही अंश हैं अर्थात् तेरा ही रूप हैं। तू जगत रूपी परिवार की पालना बड़े ही स्नेहपूर्ण ढंग से करता है। तू श्रेष्ठ धर्म वाला है।

परमात्मा के पालनकर्त्ता व संहारक रूप को गुरबाणी में अन्यत्र भी दर्शाया गया है, यथा:

सभु करता सभु भुगता ॥१॥रहाउ॥
सुनतो करता पेखत करता ॥
अद्रिसटो करता द्रिसटो करता ॥
ओपति करता परलउ करता ॥
बिआपत करता अलिपतो करता ॥१॥
बकतो करता बूझत करता ॥
आवतु करता जातु भी करता ॥
निरगुन करता सरगुन करता ॥
गुर प्रसादि नानक समद्रिसटा ॥२॥ (पन्ना ८६२)

कलगीधर पातशाह ने भी उस परमात्मा के पालक एवं संहारक रूप का सुंदर निरूपण किया है।

नमो रोग हरता नमो राग रूपे ॥
नमो साह साहं नमो भूप भूपे ॥५५॥

हे वाहिगुरु! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू सबके दुख दूर करने वाला है। वस्तुत: गुरबाणी के आशयानुसार तेरा नाम ही सारे दुख नाश करने वाला है, यथा:

दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥
आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥
(पन्ना २१८)

हे ईश्वर! तू प्रेम स्वरूप है। गुरु पातशाह का फरमान है:

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥ (सवय्ये पातशाही १०)

इसी बंद में गुरु पातशाह उस परमात्मा को बादशाहों का बादशाह तथा राजाओं का राजा कहकर नमस्कार करते हैं।



विकास में बाधक जात-पात प्रणाली

(पृष्ठ ५१ का शेष)

में इसका घिनौना रूप देखने को मिलता है। हम अपने मतदान का प्रयोग कई बार जात-पात के आधार पर करते हैं न कि उम्मीदवार के गुण या दोष देख कर। इस प्रकार की राजनीति हमारे राष्ट्र को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा रही है। कई जगह (हरियाणा और राजस्थान में विशेष रूप से) जातीय पंचायतें लगाई जाती हैं, जो नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और उनके निजी जीवन की आजादी पर प्रहार करती हैं और राजनेता राजनीति के कारण चुप रहते हैं। ये बातें हमारे समाज और देश की राजनैतिक व्यवस्था को घुन की तरह खाये जा रही हैं।

यदि हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में मानवीय गुणों का संचार करना है तो हमें जात-पात के बंधनों को तोड़ना होगा। यदि परमात्मा में हमारा अटूट विश्वास है, सहज आस्था है और उसके रचे हुए संसार से हमें सचमुच ही प्रेम है तो हमें जात-पात के रोग को मिटाना होगा, तभी हम सही इंसान बन सकेंगे और तभी सार्थक नागरिक होने का सम्मान हासिल कर सकेंगे।



विस्मादी वृत्तांत-१५

तपत कड़ाहा बुझि गइआ

*-डॉ. अमृत कौर**

भील नामक जंगली जाति से संबंध रखने वाला, इंसानों को तल कर खा जाने वाला जंगल में रहता था जो आदमखोर होने के कारण कौडा राक्षस के नाम से जाना जाता था। उसके पास एक बहुत बड़ा लोहे का कड़ाहा था। उसमें गर्म-गर्म उबलता हुआ तेल भरा रहता था, जिसमें वह पास से गुजरने वाले पथिकों को पकड़ कर तल कर खा जाता था। उनके चीखने-चिल्लाने, अनुनय-विनय करने का उस पर कोई असर नहीं पड़ता था। नंग, धड़ंम, नरमुंडों की माला पहने वह सिर से पैरों तक देखने में अत्यन्त खूंखार दारिंदा लगता था। दिन-रात की उसके हाथों होने वाली हत्याओं ने उसे डरावना विक्राल स्वरूप दे दिया था। वह खूंखार जानवर बन गया था। जंगली जानवरों का शिकार करना तो उसे कठिन लगता था परंतु मनुष्यों का शिकार वह जी भर कर करता था। तला हुआ मानव-मांस उसे अत्यन्त स्वादिष्ट लगता था। उसकी इन अमानवीय हत्याओं की दूर-दूर तक चर्चा थी, डर और आतंक था। लोग उससे डरते थे। श्री गुरु नानक देव जी ने उसकी हत्याओं, अत्याचारों के बारे में सुना था और वे चल पड़े उसका उद्धार करने। लोगों ने मना किया पर श्री गुरु नानक देव जी तो भय और आतंक से ऊपर थे।

वे चल पड़े भाई बाला जी और भाई मरदाना जी को साथ लेकर। जब जंगल में पहुंचे तो भाई मरदाना जी भूख से निढाल हो गये। कहने लगे, *प्रथम पेट पूजा, फिर काम दूजा।* इस जंगल में फलों की बड़ी मीठी-मीठी खुशबू आ रही हैं। मैं पहले पेट भर कर फल खा लूं फिर आगे चलेंगे।" श्री गुरु नानक देव जी बैठ गए सत्य करतार की ध्वनि का उच्चारण करते और भाई मरदाना जी चल पड़े जंगल की ओर। थोड़ी देर के बाद चीखने-चिल्लाने की आवाज के साथ बचाओ! बचाओ! का शोर कानों में पड़ा। गुरु जी ने भाई बाला जी को कहा, "चल भाई बालिआ, मरदाना पुकार रिहा ए। लगदा ए, कौडे राक्षस दे हत्थां विच्च आ गिआ ए।"

थोड़ी दूर चलने के बाद गुरु जी एवं भाई बाला जी जब कौडे राक्षस के ठिकाने पर पहुंचे तो क्या देखते हैं कि आदमखोर कौडे ने भाई मरदाना जी को एक वृक्ष से बांध रखा है और तेल का कड़ाहा गर्म करने में लगा है। वह गुरु जी और भाई बाला जी को देख कर और भी प्रसन्न हो गया कि आज तो बढ़िया दावत होगी। तीन सुंदर स्वस्थ मनुष्य उसके हाथ लग गए हैं। उसने श्री गुरु नानक देव जी को पकड़ा तो वे हंस पड़े, निर्मल स्वच्छ हंसी, जिससे चारों और नूर ही नूर पसर गया, प्रकाश फैल गया। कौडा राक्षस चकरा गया। जब वह दूसरे लोगों को पकड़ता था तो वे रोते-चिल्लाते थे, मनुहार करते थे, अनुनय-विनय करते थे, छोड़ देने के लिए उसके पैरों पर गिरते थे, पर यह कैसा परम पुरख था, सुन्दर स्वस्थ तेजस्वी, नूरानी चेहरे वाला जो मुस्करा रहा था? उसकी मुस्कराहट में अजीब जादू था, सम्मोहन था, प्यार था! अमृत झर रहा था उसकी दृष्टि से और एक झरना फूट पड़ा था प्यार का। उसे

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०५०३*

लगा जैसे प्यार की भी एक भाषा होती है जिसे अधरों पर लिखा जाता है, जिसका नाम है मुस्कान। गुरु जी ने मुस्करा कर उसके नैनों में झांका। वह सम्मोहित हो गया, अंदर तक कांप गया। आज तक सबने उससे घृणा की थी, उसे दुत्कारा था, उसका त्रिस्कार किया था परन्तु यह दैवी पुरुष तो प्रेमभरी दृष्टि से, जादुई स्पर्श से उस पर कोई दैवी प्रभाव डाल रहा था। यहां एक दिव्य पुरुष आया था उसका सुधार करने, उसकी मैली आत्मा की मैल धोने जो उससे घृणा न करके, उस पर क्रोधित न होकर, उसका त्रिस्कार न कर, प्रेम के जादू द्वारा सकारात्मक विचार-तरंगों के द्वारा उसकी काया-कल्प कर रहा था; बीमार समझ कर, मानसिक रोगी समझ कर, प्यार और सहानुभूति से उसका उपचार कर रहा था। उसके प्यार भरे स्पर्श में पता नहीं क्या था कि वह रोमांचित हो गया। उसकी नस-नस में एक अजीब सी सिहरन हुई, झंकार सी पैदा हुई। उसे लगा कोई दैवी करिश्मा हो रहा है। उसकी आत्मा स्वच्छ हो रही है। उसकी आत्मा की मैल धुल रही है। उस दिव्य नूरानी शक्ति की दृष्टि से तो मानो अमृत झर रहा था जिसमें स्नान कर उसका कलुषित मन निर्मल और स्वच्छ हो रहा था। पता नहीं क्या था उस महापुरुष की दृष्टि में! उसे लगा जैसे अमृत का झरना फूट पड़ा हो। एक प्यार भरे स्पर्श ने, जादुई मुस्कराहट ने उसके मन की सम्पूर्ण कठोरता को दूर कर दिया। उसके सम्पूर्ण पाप उसके सम्मुख साकार हो उठे। किस तरह वह वर्षों से आदमखोर बन कर मनुष्यों को तल कर खा रहा था! उनके रोने-धोने- चिल्लाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वह पत्थर बन गया था। एक एहसास-रहित पत्थर। एक जालिम मनुष्य जिसे दूसरों को दुख देने में एक अजीब सा स्वाद आता था, पर अब वह पत्थर पिघल रहा था, उस जादूमई दृष्टि से, प्यार के स्पर्श से, विचार-तरंगों से उसकी कठोरता न जाने कहां गायब हो रही थी! श्री गुरु नानक देव जी के प्रभाव से वह मूक बन कर रह गया। वह गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा।

गुरु जी ने उसे उठाकर अपने गले लगा लिया। इस प्रेममयी आलिंगन का अनुभव उसके लिए अनूठा था। एक प्यार भरे स्पंदन का एहसास हुआ उसकी आत्मा को। वह प्यार की इस खुमारी से मदमस्त हो गया। पहली बार प्यार का एहसास हुआ। उसकी काया-कल्प हो गई। उसने वृक्ष से बंधे हुए भाई मरदाना जी को खोल दिया। तपता हुआ कड़ाहा ठंडा हो चुका था। उसकी मृतप्राय: अन्तरात्मा जागृत हुई। उसे अपने अवगुणों का एहसास हुआ। उसे अनुभव हुआ कि जो कुछ वह कर रहा था घोर अत्याचार था। गुरु नानक पातशाह के स्पर्श के साथ उसका सूक्ष्म स्पर्श जागृत हुआ। भाई मरदाना जी ने रबाब की सुर छेड़ी। जगत गुरु बाबा नानक ने बाणी का गायन किया:

फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥
काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥
आवण जाणु रहिओ ॥ तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि
सीतल नामु दीओ ॥ *(पन्ना १००२)*

इस दैवी बाणी के गायन से वन-तृण झूम उठा। शब्द और संगीत के जादू ने कौडे की अन्तरात्मा के बंद द्वार खोल दिए। उसकी आत्मा किसी दैवी आनंद का अनुभव कर रही थी। एक प्रेम की मदहोशी सी छायी थी, एक सम्मोहन का एहसास। एक आदमखोर सच्चे व निर्मल मार्ग पर चलने का प्रण कर रहा था। उसे लगा कि किसी दैवी स्पर्श ने उसे आनन्दित कर दिया हो, उसकी अन्तरात्मा को जागृत कर दिया हो। गुरु जी की अमृत की वर्षा करती प्रेमपूर्ण आंखों का वह सामना नहीं कर पा रहा

था। उसकी आंखें शर्म से, शर्मिन्दगी से झुक रही थीं। उसकी कुटिया का आज सौभाग्य जाग पड़ा था। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था कि वह अपनी श्रद्धा के फूल किस प्रकार गुरु-चरणों में भेंट करे, कैसे उनका आदर और सत्कार करे। वह भागा गया जंगल की ओर तथा चुन-चुन कर फलों के ढेर ले आया। गुरु जी ने कहा—"उठ मरदानिआ! इन फलों के बराबर के भाग कर दे।" गुरु जी ने कुछ फल प्रसाद रूप में कौडे को दिए। उसे एक आलौकिक आनंद, एक अद्वितीय स्वाद आ रहा था इन फलों में से। गुरु जी ने मुस्करा कर पूछा-"भाई गुरसिखा! प्रकृति में तो अन्न का अनंत भंडार छिपा है। यह हमें अनेकों प्रकार के फल और फूल दे रही है। प्रभु प्रकृति में स्वयं निवास करता है। प्रकृति तो प्यार का सागर है, अन्न का भंडार है। यह हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है, हमारा भरण-पोषण करती है:"

—कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ . . .
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥
(पन्ना ४६४)

—बलिहारी कुदरति वसिआ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ (पन्ना ४६९)

"प्रकृति में रह कर प्राकृतिक जीवन व्यतीत करो फिर देखो कैसा आनंद आता है:"

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
(पन्ना ८)

"इस प्रकृति की गोद में अनन्त प्रेम की वर्षा हो रही है। पवन गुरु है, पानी पिता है, धरती माता है, दिन और रात दाई और दाइआ हैं जो सम्पूर्ण संसार को अपनी ममतामयी गोद में खिला रहे हैं। इस दैवी ममतामयी प्रकृति की गोद में रहकर तुम इतने कठोर कैसे बन गए? कौडिया! अवगुण तो गले की जंजीरें हैं जिन्हें जीवन में गुणों के विकास के द्वारा काटा जा सकता है:"

नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥
जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥
(पन्ना ५९५)

"सो अपने जीवन में सात्विक गुणों के विकास के द्वारा इन अवगुणों को नियन्त्रित करना होगा। परिश्रम से, कड़ी मेहनत के द्वारा आजीविका का अर्जन करो। जैसा अन्न वैसा मन। पाप की कमाई मन को दूषित करती है-

पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥

जो धन तूने पापों से इकट्ठा किया है, मार्ग जाते पथिकों से छीना है, उसको मनुष्य-मात्र की सेवा में लगा दो। सुमिरन और सेवा मन और आत्मा की मैल को धो डालते हैं":

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ (पन्ना ४)

"साधसंगत किया करो, प्रभु का यश गायन किया करो जो तुम्हारी आत्मा को बलवान बना देगा। मनुष्य-मात्र को प्यार करना सीखो। अपने कबीले के अन्य आदमखोरों का भी सुधार करो।"

सिखी के मार्ग पर आ चुके कौडे ने प्रार्थना की-"गुरु जी! मेरे पास कुछ दिन और रुकिए ताकि जिस नेक राह का मुझे आपने उपदेश दिया है कहीं मैं उससे विचलित न हो जाऊं। आपका कुछ और दिन का साथ मुझे उचित मार्ग पर चलने का संबल प्रदान करेगा।" गुरु जी सात दिन उसके पास रहे। जंगल मंगल बन गया। प्रतिदिन कीर्तन होता उसके अन्य साथी और कबीले के लोग भी इस दैवी कीर्तन का आनन्द उठाते। दिशा-भ्रष्ट लोग सही मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहे थे। दैवी बाणी से वन-तृण झूम उठा। धर्मसाल की स्थापना हुई। कौडे ने अपना शेष जीवन गुरु-चरणों में अर्पित करने का संकल्प किया। उसकी आत्मा परम आनन्द में झूम उठी।



दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-९

दशमेश जी के दरबार की समृद्ध साहित्यिक परंपरा के प्रतीक : कवि आलम जी

*-डॉ राजेंद्र सिंघ**

मध्यकालीन साहित्य में आलम नाम के कई कवि मिलते हैं। एक आलम बादशाह अकबर के समकालीन हुए हैं जिन्हेंने सन् १५८४ ई में 'माधवानल कामकन्दला' नामक प्रेमाख्यान रचा था। दूसरे आलम हिंदी की रीतिमुक्त काव्य-धारा के कवि हैं जो मुगल बादशाह बहादुरशाह रंगीले (१७१९-१७४५) के दरबार में रहा करते थे और जिन्होंने 'आलम-केलि' नामक रचना रची थी। इसी प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में भी आलम नाम के एक कवि सुशोभित थे। निश्चित रूप से कवि आलम जी का काल गुरु साहिब के साथ-साथ यानी सत्रहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध (लगभग १६५०-१७०० ई) रहा होगा। इसलिए स्पष्ट है कि काल-क्रम में अंतर होने के कारण गुरु साहिब के दरबारी कवि भाई आलम जी पहले बताये कवियों में नहीं बल्कि उनसे अलग थे।

सिख ऐतिहासिक स्रोतों में कवि आलम जी के बारे में सिर्फ यही जानकारी प्राप्त होती है कि वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ५२ दरबारी कवियों में से एक थे। कवि आलम जी के जन्म, जन्म-स्थान एवं जीवन के बारे में कोई उल्लेखनीय सूचना नहीं मिलती। यहां तक कि निश्चित रूप से कवि आलम जी को मुस्लिम या हिंदू कहना भी मुश्किल है। 'आलम' नाम उनके मुस्लिम होने का कुछ संकेत देता है परंतु ब्रज भाषा पर अधिकार और हिंदू पौराणिक संदर्भों-प्रसंगों की गहरी जानकारी से यह मत मानने में बाधा भी है।

कवि आलम जी ने ब्रज भाषा में सुंदर कबित्तों की रचना की है। उनकी भाषा की रवानी, बिम्बों-प्रतीकों का प्रयोग और उत्कृष्ट अलंकारों का प्रयोग उन्हें एक श्रेष्ठ और समर्थ कवि सिद्ध करता है। अपने आश्रयदाता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा का वर्णन करना उनके कबित्तों का प्रमुख विषय रहा है। नमूने के रूप में कवि आलम जी का एक कबित्त देखें:

सोभा हूं के सागर नवल नेह नागर हैं,
बल भीम सम सील कहां लौ गनाईये।
भूमि के विभूखन जू दूखन के दूखन,
समूह सुख हूं के सुख देखे ते अघाईये।
हिंमत निधान आन दान को बखौने जान?
आलम तमाम जाम आठों गुन गाईये।
प्रबल प्रतापी पातशाह गुरु गोबिंद सिंघ जी!
भोज की सी मौज तेरे रोज ही पाईये।

कवि आलम जी के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी शोभा के सागर और नवल स्नेह के आगार हैं। बल में भीम के समान हैं और उनके चरित्र की विशेषताएं तो कहां तक गिनाई जायें? गुरु-भूमि के विभूषण हैं, दुष्टों के प्रति कठोर हैं, सुख का समूह हैं। उनके दर्शनों से ही इतना सुख मिलता है कि दर्शनार्थी तृप्त हो जाता है। वे हिम्मत के समुद्र हैं। उनकी आन और दानशीलता का बखान कौन कर सकता है? आलम (कवि और सारा संसार—श्लेष अलंकार) आठों याम यानी आठों पहर उनके गुण गाता है। हे प्रबल, प्रतापी पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी! भोज अर्थात दावत जैसी मौज तो आपके दरबार में यहां रोज ही मिलती है।



**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१*



शिरोमणि कमेटी का ३ अरब ८६ करोड़ का वार्षिक बजट पारित

अमृतसर: सिख पंथ की प्रतिनिध संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरु की नगरी श्री अमृतसर में स्थित तेजा सिंघ समुंद्री हाल में २९ मार्च २००८ को बुलाए गए बजट अधिवेशन में बाद दोपहर वर्ष २००८-०९ का तीन अरब, छियासी करोड़, बहत्तर लाख, बारह हजार, चार सौ चार रुपये का बजट संस्था के जनरल सैकेटरी स. सुखदेव सिंघ भौर द्वारा पेश किया गया जो जयकारों की गूंज में पारित हुआ। अधिवेशन में श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंघ जी भी उपस्थित थे।

यह बजट अधिवेशन दोपहर आरंभ हुआ। बजट अधिवेशन की कारवाई की शुरूआत पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन उपस्थिति में गुरमति परंपरा के अनुसार अरदास करने तथा पवित्र हुक्मनामा लेने के पश्चात शिरोमणि कमेटी के सचिव स. हरबेअंत सिंघ ने की। उपरांत स. सुखदेव सिंघ भौर ने शिरोमणि कमेटी का वर्ष २००८-०९ का बजट सदन में रखा।

सन् २००८-०९ के इस बजट में गत वर्ष की अपेक्षा इस बार ५६ करोड़, ३ लाख, ७४ हजार, ३३१ रुपये अधिक रखे गए हैं। जनरल फंड में ३० करोड़ रुपये, ट्रस्ट फंड में ११ करोड़ ५ लाख ६७ हजार ६ सौ रुपये, प्रिंटिंग प्रेस के लिए ९ करोड़ ६३ लाख ५५ हजार रुपये, धर्म प्रचार के लिए ४३ करोड़ रुपये, गुरुद्वारा साहिबान के लिए २ अरब, २६ करोड़, ४७ लाख ३७ हजार रुपये और शिक्षण संस्थानों के लिए ५२ करोड़, ५५ लाख, ५२ हजार, ८०४ रुपये रखे गए हैं।

इस बजट में श्री फतेहगढ़ साहिब में निर्माणधीन श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड सिख युनिवर्सिटी के प्राजेक्ट के लिए १० करोड़ रुपये रखे गए हैं; श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज और रिसर्ज, श्री अमृतसर की इमारतों को पूरा करने हेतु एक करोड़ रुपये और खेलों के विकास हेतु २ करोड़ रुपये, आगामी वर्ष में अंग्रेजी भाषा में पत्रिका प्रकाशन आरंभ करने के उपलक्ष्य में २० लाख रुपये, शिरोमणि कमेटी अधीन चल रहे कॉलेजों की सहायता हेतु २ करोड़ २ लाख रुपये और स्कूलों की सहायता हेतु ८९ लाख रुपये रखे गए हैं। स्कूलों और कॉलेजों की इमारतों की मुरम्मत के लिए ६ करोड़ और श्री गुरु गोबिंद सिंघ कॉलेज श्री अमृतसर की इमारत के लिए १ करोड़ रुपये रखे गए हैं। प्राकृतिक अपदाओं में सहायता देने हेतु १० लाख रुपये, पिंगलवाड़ा भगत पूर्ण सिंघ श्री अमृतसर को सहायता देने हेतु ५ लाख रुपये रखे गए हैं। शिक्षा संस्थान व यतीमखाना के लिए ६ लाख रुपये तथा मीरी पीरी मेडीकल कॉलेज शाहबाद मारकंडा (हरियाणा) के लिए ४ करोड़ और यहां के स्कूलों और कॉलेजों की इमारतों के लिए ३ करोड़ रुपये रखे गये है। इस बजट में श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर का ९१ करोड़ का बजट भी शामिल है।

बजट भाषण के मध्यस्थ स. भौर ने बताया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन स्वरूप भेटा रहित देने हेतु २० लाख रखे गए हैं। संस्था तीन मासिक पत्रिकाएं गुरमति प्रकाश, गुरुद्वारा गजट और गुरमति ज्ञान प्रकाशित करके संगतों एवं इच्छुक पाठकों को लागत से बहुत कम दाम में पहुंचा रही है। विभिन्न प्रांतों से आ रही मांग के समक्ष बहुत बड़ी संख्या में फ्री लिट्रेचर मुद्रित किया और वितरित किया जाता है। नानकशाही कैलेंडर हर वर्ष लाखों की संख्या में मुद्रित करके नि:शुल्क बांटा जाता है। नानकशाही डायरी लागत मात्र भेटा पर प्रकाशित करके वितरित की जाती है।

सिकलीगर, सतनामिए, वंजारे सिख श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक हुए

अमृतसर-भारत के छत्तीगढ़ प्रांत के विभिन्न उपक्षेत्रों से बहुसंख्या में सिकलीगर, सतनामिए तथा बंजारे सिख सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक हुए और उन्होंने अमृतसर ज़िले के ऐतिहासिक गुरधामों के दर्शन-दीदार किये।

सिकलीगर, सतनामिए तथा वंजारे सिखों का यह

जत्था २३ मार्च की सायंकाल की रेलगाड़ी द्वारा श्री अमृतसर पहुंचने पर स. वरियाम सिंघ सचिव, धर्म प्रचार कमेटी तथा अन्य अधिकारियों ने जत्थे को फूलों के सेहरे डालकर इसका जयकारों की गूंज में भव्य स्वागत किया और स्पैशल बसों के द्वारा श्री दरबार साहिब समूह में लेकर आए। जत्थे ने पावन सरोवर में स्नान किया। सभी सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक हुए और इलाही बाणी का कीर्तन श्रवण किया।

धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. वरियाम सिंघ ने यह जानकारी देते हुए बताया कि धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी) की तरफ से छत्तीगढ़ के प्रांत में सिखी के प्रचार व प्रसार के लिए रायपुर में 'सिख मिशन' स्थापित किया हुआ है। ये सिकलीगर, सतनामिए तथा वंजारे सिख इस मिशन के द्वारा सिख-जगत के साथ जुड़े हुए हैं। उन्होंने बताया कि २४ मार्च को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के दर्शनों के उपरांत जत्थे को छ: विशेष बसों द्वारा अमृतसर जिला के विभिन्न ऐतिहासिक गुरधामों के दर्शन करवाये गए जिस दौरान सूचना अधिकारी स. दलबीर सिंघ ने इस जत्थे को हरेक गुरुद्वारा साहिब के इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान की। स. वरियाम सिंघ ने बताया कि सिकलीगर, सतनामिए और वंजारे सिखों के इस जत्थे में अमृतसर के दर्शन, स्नान, स्थानीय गुरुद्वारों के दर्शनों के लिए अति अधिक श्रद्धा एवं उत्साह है। जत्थे के साथ छत्तीसगढ़ प्रांत के रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, तिलाई तथा अन्य नगरों से पहुंचे सिखों के जत्थे की अगुआई कर रहे स. हरभजन सिंघ लाल प्रधान छत्तीसगढ़ सिख कौंसल, स. सतविंदर सिंघ अकाली प्रधान (स्काटिश सिख कौंसल), स. रणवीर सिंघ, स. अमरीक सिंघ (दोनों प्रचारक स्काटिश कौंसल) और स. सुखदेव सिंघ गुरु अंगर देव एजूकेशन सोसाइटी लुधियाना ने शिरोमणि कमेटी की तरफ से जत्थे को ऐतिहासक गुरुद्वारों के दर्शनों के लिए बसों के प्रबंध, निवास और मिले मान-सम्मान के लिए संतुष्टि का प्रकटावा करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का धन्यवाद किया।

गुरुपर्व व दिवस संगतें नानकशाही कैलंडर के अनुसार ही मनाएं

अमृतसर: शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान जत्थेदार अवतार सिंघ ने सिख संगत को अपील की है कि गुरु साहिबान के गुरुपर्व और ऐतिहासिक दिवस शिरोमणि कमेटी द्वारा जारी किये नानकशाही कैलंडर अनुसार ही मनाए जाएं। यहां से जारी एक प्रेस रिलीज़ में उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि सिख संगतों की भावनाओं के अनुसार बहुत परिश्रम से नानकशाही कैलंडर तैयार किया गया है जिसका संगतों की तरफ से भरपूर स्वगात किया गया। उन्होंने कहा कि नानकशाही कैलंडर ५४० (२००८-०९) शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की ओर से मुद्रित होकर तैयार हो चुका है जो हर वर्ष प्रथम चैत्र को आरंभ होता है।

पंजाब के सरकारी कार्यालयों तथा सभी स्कूलों में पंजाबी अनिवार्य होगी

चंडीगढ़ : पंजाब विधान सभा में २५ मार्च, २००८ को पंजाबी भाषा के सम्मान हेतु एक ऐतिहासिक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया है जिसके अनुसार प्रदेश के सभी सरकारी कार्यालयों तथा सभी स्कूलों में दसवीं कक्षा तक पंजाबी विषय अनिवार्य कर दिया गया है। पंजाब की शिक्षा मंत्री डॉ. उपिंदरजीत कौर द्वारा इस सम्बंध में पेश प्रस्तावों का सत्तारूढ़ तथा विपक्षी सदस्यों ने समर्थन किया। इस प्रस्ताव के अनुसार अब सरकारी कार्यालयों में सभी काम-काज पंजाबी भाषा में होगा तथा इसकी अवहेलना करने वालों पर सख्त कार्यवाही होगी। प्रदेश में खुले स्कूलों में भी पंजाबी को आवश्यक विषय के तौर पर पढ़ाया जाएगा चाहे वह किसी भी बोर्ड आदि से मान्यता प्राप्त हो। पंजाबी भाषा के प्रेमियों द्वारा चिरकालीन से उठाई जा रही इस मांग पर पूर्ण सहमति बनाकर लागू करवाने में मौजूदा सरकार ने ऐतिहासिक कार्य कर दिखाया है।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसैट प्रैस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०३-२००८